जम्मू लद्दाख विज़न

आर एन आई नंबर: जेकेएचआईएन/2019/78824 | पोस्टल नंबर : एल–29/जेके.579/24–26

साप्ताहिक | वर्ष : 7 | जम्मू | अंक : 30 | सोमवार जुलाई 28, 2025 | मूल्य : 3 रूपए | पेज : 16

यमुना मैया की जय... जीत के बाद बीजेपी दतर से बोले पीएम मोदी– दिल्ली अब आपदा मुक्त पेज 6...

उपराज्यपाल ने नई दिल्ली में नेशनल बुक ट्रस्ट के विश्व पुस्तक मेले का दौरा किया पेज 12...

सतीश शर्मा ने अंतर-स्कूल बैडमिंटन टूर्नामेंट के उद्घाटन की घोषणा की पेज 14...

लोकतांत्रिक स्वतंत्रता का दुरूपयोग करने वालों को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए : प्रधानमंत्री मोदी

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को अपने ब्रिटिश समकक्ष कीर स्टारमर से मुलाकात के बाद कहा कि "चरमपंथी विचारधाराओं" वाली ताकतों को लोकतांत्रिक स्वतंत्रता का दुरुपयोग करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। यह टिप्पणी ब्रिटेन में खालिस्तानी समर्थक तत्वों की गतिविधियों को लेकर भारत में बढ़ती चिंता के बीच आई है।

स्टार्मर के साथ मोदी ने यह भी कहा कि भारत और ब्रिटेन दोनों इस बात पर एकमत हैं कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में दोहरे मानदंडों के लिए कोई जगह नहीं हो सकती। उन्होंने पहलगाम आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा करने के लिए ब्रिटिश सरकार को धन्यवाद दिया।

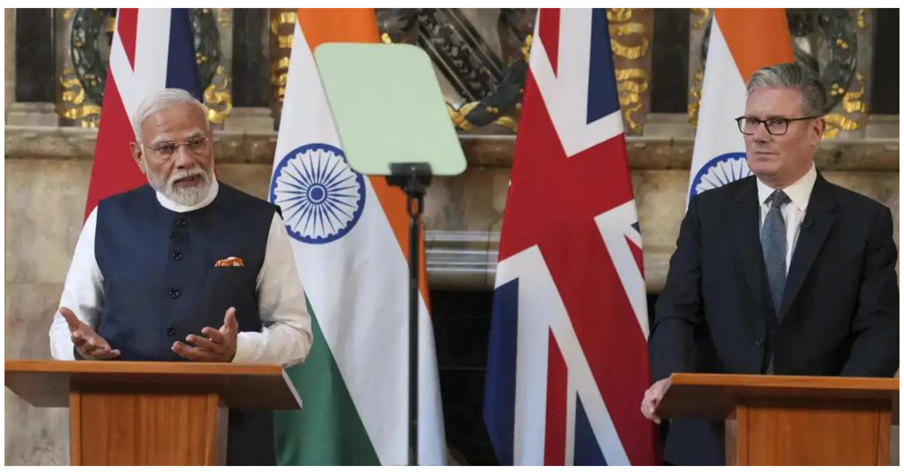

उन्होंने यह टिप्पणी स्टारमर द्वारा चेकर्स में उनकी मेजबानी के बाद की, जो लंदन से 50 किलोमीटर उत्तर–पश्चिम में स्थित ब्रिटिश प्रधानमंत्री का ग्रामीण आवास है।

मोदी ने अपने मीडिया वक्तव्य में कहा, ष्हम इस बात पर सहमत हैं कि अतिवादी विचारधारा वाली ताकतों को लोकतांत्रिक स्वतंत्रता का दुरुपयोग करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। जो लोग लोकतंत्र को कमजोर करने के लिए लोकतांत्रिक स्वतंत्रता का दुरुपयोग करते हैं, उन्हें जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। ब्रिटेन में खालिस्तानी समर्थक तत्वों की गति. विधियों को लेकर भारत में चिंताएं बढ़ रही हैं, खासकर मार्च 2023 में लंदन में भारतीय उच्चायोग पर हमले के बाद।

भारत ब्रिटिश धरती पर खालिस्तान समर्थक तत्वों की गतिविधियों पर ब्रिटेन के समक्ष अपनी चिंता

■ शेष पेज 2...

गेमिंग ऐप्स में चौट सुविधा अब आतंकवादी समूहों के लिए संचार उपकरण बन गई है : अधिकारी

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

श्रीनगर : अधिकारियों ने यहां बताया कि पबजी जैसे ऑनलाइन युद्ध खेल, जिनमें गुमनाम या अन्य साथियों के साथ चौट की आवश्यकता होती है, आतंकवादी समूहों और पाकिस्तान की आईएसआई के लिए जम्मू–कश्मीर में अपने सदस्यों तक संदेश पहुंचाने का एक प्रमुख संचार माध्यम बनकर उभरे हैं। सीमा पार सक्रिय आतंकवादी समूह सोशल मीडिया और संचार के पारंपरिक माध्यमों को दरकिनार कर सुरक्षा एजेंसियों की नज़र से बचने की कोशिश करते हैं, इसलिए यह एक आभासी युद्धक्षेत्र बन गया है और कुछ मामलों में तो असली भी। अधिकारियों ने बताया कि चार मामलों की पहचान की गई है। एक मामले में, एक नाबा. लिग लड़के को सीमा पार बैठा उसका गेमिंग पार्टनर कट्टरपंथी बना रहा था। पूरे परिवार की उचित काउंसलिंग के बाद लड़के को उसके माता–पिता को सौंप दिया गया। अधिकारियों ने बताया कि गेमिंग चौट एप्लीकेशन खिलाड़ियों को ऑनलाइन गेम खेलने की आड़ में वास्तविक समय

■ शेष पेज 2...

उपराज्यपाल ने युवाओं से भारत की प्रगति में योगदान देने का आह्वान किया

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

श्रीनगर : उपराज्यपाल ने कहा, ष्युवा जम्मू–कश्मीर के उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे और दीर्घकालिक शांति एवं समृद्धि सुनिश्चित करेंगे। इस 21वीं सदी में, निरंतर परिवर्तन और चुनौतियों के बावजूद, हमारे युवा – हमारी सबसे मूल्यवान संपत्ति – ही हैं जो सामाजिक–आर्थिक क्रांति को गति देने की शक्ति रखते हैं। अनंत संभावनाओं से भरपूर जम्मू–कश्मीर अपने महत्वाकांक्षी युवाओं को प्रचुर संसाधनों और अवसरों से सशक्त बना रहा है।ष

राष्ट्र–प्रथम के संकल्प के साथ आगे बढ़ें। माननीय प्रधानमंत्री के ष्पंच प्रणष

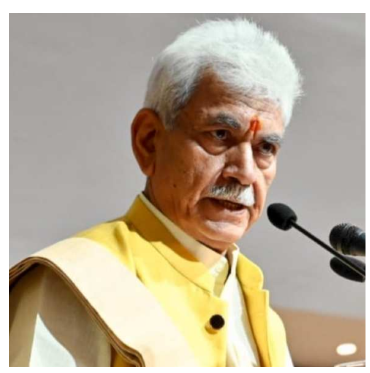

संकल्प को अपनाएँ। पहल, नेतृत्व, आत्मविश्वास, दृढ़ता, कल्पनाशीलता और असफलता से सीखने का साहस जैसे गुण आपको विकसित भारत की यात्रा पर मार्गदर्शन करेंगे, उपराज्यपाल ने युवाओं से कहा।

उन्होंने आईयूएसटी के कुलपति और संकाय सदस्यों को पिछले कुछ वर्षों में प्रगतिशील सुधारों को लागू करने के लिए बधाई दी, जिससे जम्मू–कश्मीर के उच्च शिक्षा क्षेत्र में बदलाव आया है और देश भर के उच्च शिक्षण संस्थानों को प्रेरणा मिली है। उन्होंने कहा कि यह सही समय है जब आईयूएसटी को सेमीकंडक्टर लैब स्थापित करने पर काम करना चाहिए।

उपराज्यपाल ने आगे कहा, ष्हम विकसित भारत का संकल्प तभी प्राप्त कर सकते हैं जब जम्मू–कश्मीर विकसित हो, हमारे

■ शेष पेज 2...

ऑपरेशन सिंदूर : सरकार ने संसद को बताया कि भारत की कार्रवाई नपी–तुली और गैर–बढ़ी हुई थी

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

नई दिल्ली : सरकार ने गुरुवार को कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ष्पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियोंष द्वारा किए गए ष्बर्बरष हमले के जवाब में शुरू किया गया था और यह कार्रवाई आतंकवादी बुनियादी ढांचे को नष्ट करने और भारत में भेजे जाने वाले आतंकवादियों को बेअसर करने पर केंद्रित थी।

राज्यसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में विदेश राज्य मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह ने भी कहा कि भारत की कार्रवाई ष्केंद्रित, नपी–तुली और गैर–बढ़ाने वालीष थी। विदेश मंत्रालय से पूछा गया कि क्या यह सच है कि ऑपरेशन सिंदूर की घोषणा ष्अंतर्राष्ट्रीय दबाव मेंष की गई थी, और इस संबंध में ष्तथ्यात्मक स्थितिष क्या है। राज्यसभा सांसद रामजी लाल सुमन ने भी ऑपरेशन सिंद. ूर में युद्ध विराम की अचानक घोषणा से भारतीय सेना के मनोबल पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में पूछा, जो महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त कर रही थी, लेकिन अचानक युद्ध विराम की घोषणा करना उनके मनोबल

■ शेष पेज 2...

मुख्यमंत्री ने नकली कश्मीरी कालीनों पर कार्रवाई के आदेश दिए

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

श्रीनगर : मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने गुरुवार को नकली मशीन–निर्मित कालीनों को असली कश्मीरी हस्तनिर्मित उत्पादों के रूप में बेचे जाने पर कड़ी आपत्ति जताई और उद्योग एवं वाणिज्य विभाग को उन शोरूम और खुदरा दुकानों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश दिए जो कश्मीरी हस्तनिर्मित कालीनों के लेबल के तहत मशीन–निर्मित कालीन बेच रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि ये नकली कालीन कश्मीरी हस्तनिर्मित कालीनों के विश्व प्रसिद्ध ब्रांड को नुकसान पहुँचाएँगे और इस शिल्प

■ शेष पेज 2...

शेष पेज 1 से.....

लोकतांत्रिक स्वतंत्रता...

व्यक्त करता रहा है। ऐसा पता चला है कि प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता में यह मुद्दा उठा था।

प्रधानमंत्री ने आतंकवाद की चुनौती का दृढ़ता से सामना करने की आवश्यकता पर भी बल दिया।

मोदी ने कहा, ष्हम पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा करने के लिए प्रधानमंत्री स्टारमर और उनकी सरकार को धन्यवाद देते हैं। हम इस बात पर एकमत हैं कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में दोहरे मानदंडों के लिए कोई जगह नहीं हो सकती।ष्

ऐसा समझा जाता है कि वार्ता में सीमापार आतंकवाद की भारत की चुनौती पर भी चर्चा हुई।

मोदी और स्टार्मर के बीच बातचीत मुख्यतः व्यापार, निवेश, रक्षा एवं सुरक्षा, शिक्षा और स्वच्छ प्रौद्योगिकी सहित विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देने पर केंद्रित रही।

दोनों पक्षों ने एक ऐतिहासिक मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसका उद्देश्य दोनों अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ावा देना, 99 प्रतिशत भारतीय निर्यात पर टैरिफ में कटौती करना, हजारों नौकरियों के अवसर पैदा करना तथा ब्रिटिश व्हिस्की, कारों और अन्य वस्तुओं पर टैरिफ में कटौती करना है।

इस समझौते को आधिकारिक तौर पर व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौता (सीईटीए) नाम दिया गया है, जिस पर वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल और ब्रिटिश व्यापार सचिव जोनाथन रेनॉल्ड्स ने भारत और ब्रिटेन के प्रधानमंत्रियों की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

अधिकारियों ने बताया कि तीन वर्षों की बातचीत के बाद तैयार किए गए सीईटीए से सभी क्षेत्रों में भारतीय वस्तुओं के लिए व्यापक बाजार पहुंच सुनिश्चित होने की उम्मीद है और भारत को लगभग 99 प्रतिशत टैरिफ लाइनों (उत्पाद श्रेणियों) पर टैरिफ उन्मूलन से लाभ होगा, जो लगभग 100 प्रतिशत व्यापार मूल्यों को कवर करेगा।

गेमिंग ऐप्स में...

में एक–दूसरे के साथ संवाद करने की सुविधा देता है, लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया कि यह गेम किस प्रकार का है।

उन्होंने बताया कि ये एप्लीकेशन, जो खिलाड़ियों के बीच टीमवर्क, रणनीतिक चर्चा और सामाजिक संपर्क को बढ़ाने के लिए आवाज, वीडियो और टेक्स्ट–आधारित संचार की सुविधा प्रदान करते हैं, का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जा रहा है।

संभावित खिलाड़ियों की पहचान खेल के दौरान की जाती है।

गेमिंग एप्लिकेशन उपयोगकर्ता संचार की सुरक्षा के लिए एन्क्रिप्शन का उपयोग तेज़ी से बढ़ा रहे हैं, लेकिन सुरक्षा का स्तर व्यापक रूप से भिन्न होता है। इसलिए, कुछ गेम इन–गेम वॉइस चौट के लिए बुनियादी एन्क्रिप्शन का उपयोग करते हैं, जबकि अन्य टेक्स्ट और वॉइस के लिए अधिक मज़बूत एंड–टू–एंड एन्क्रिप्शन प्रदान करते हैं। ऐसे एप्लिकेशन भी हैं जो स्व–विनाशकारी संदेशों की अनुमति देते हैं।

हालाँकि इनमें से कई गेमिंग ऐप्स भारत में प्रतिबंधित हैं, फिर भी इन्हें वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क (वीपीएन) का इस्तेमाल करके अवैध रूप से डाउनलोड किया जाता है। वीपीएन इंटरनेट प्रोटोकॉल एड्रेस को छिपाकर इंटरनेट पर एक सुरक्षित और एन्क्रिप्टेड कनेक्शन बनाता है और ऑनलाइन ट्रैफ़िक को एन्क्रिप्ट करता है, जिससे ऑनलाइन गति. विधि को ट्रैक करना और डेटा एक्सेस करना मुश्किल हो जाता है।

अतीत में, आतंकवादी समूहों और उनके पाकिस्तानी आकाओं ने व्हाट्सएप जैसे मैसेजिंग प्लेटफॉर्म को बंद कर दिया था और एक–दूसरे से संवाद करने के लिए दूसरे ऐप्स का इस्तेमाल करने लगे थे। अधिक. ारियों ने बताया कि इनमें एक तुर्की कंपनी द्वारा विकसित ऐप भी शामिल है जिसका इस्तेमाल आतंकवादी समूहों के आकाओं और घाटी में उनके संभावित रंगरूटों द्वारा किया जा रहा है।

नए अनुप्रयोगों में सबसे धीमे इंटरनेट कनेक्शन के साथ काम करने की क्षमता है, जहां 2000 के दशक के अंत में प्रयुक्त एन्हांस्ड डेटा फॉर ग्लोबल इवोल्यूशन (ष्क्लष्) या 2ळ कार्यरत है।

केंद्र सरकार ने 5 अगस्त, 2019 को तत्कालीन राज्य जम्मू और कश्मीर का विशेष दर्जा समाप्त करने के बाद पूरे राज्य में इंटरनेट सेवा निलंबित कर दी थी।

सभी एन्क्रिप्शन और डिक्रिप्शन सीधे डिवाइस पर होते हैं, इसलिए किसी भी समय तीसरे पक्ष के हस्तक्षेप को कम किया जा सकता है। अधिकारियों ने बताया कि ये नए ऐप्स एन्क्रिप्शन एल्गोरिथम टै।–2048 का उपयोग करते हैं, जिसे सबसे सुरक्षित एन्क्रिप्टेड प्लेटफ़ॉर्म के रूप में अपनाया गया था।

टै। एक अमेरिकी नेटवर्क सुरक्षा और प्रमाणीकरण कंपनी है जिसकी स्थापना 1982 में अमेरिका में जन्मे रॉन रिवेस्ट और लियोनार्ड एडलमैन और इज़राइली मूल के आदि शमीर ने की थी। टै। का संक्षिप्त नाम दुनिया भर में क्रिप्टोसिस्टम की आधारशिला के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

अधिकारियों ने बताया कि घाटी में युवाओं को कट्टरपंथी बनाने के लिए आतंकवादियों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक नया मैसेजिंग ऐप फोन नंबर या ईमेल भी नहीं मांगता है, जिससे उपयोगकर्ता की पूरी तरह से पहचान गुप्त रहती है।

आतंकी गतिविधियों पर नज़र रखने की यह नई चुनौती ऐसे समय में आई है जब घाटी में सुरक्षा एजेंसियां वर्चुअल सिम कार्ड के खतरे से जूझ रही हैं। आतंकी समूह पाकिस्तान में बैठे अपने आकाओं से संपर्क करने के लिए इनका इस्तेमाल तेज़ी से कर रहे हैं। वर्चुअल सिम कार्ड किसी विदेशी सेवा प्रदाता द्वारा बनाए जाते हैं।

इस तकनीक में, कंप्यूटर एक टेलीफोन नंबर तैयार करता है और उपयोगकर्ता को इसका उपयोग करने के लिए अपने स्मार्टफोन पर सेवा प्रदाता से एक एप्लिकेशन डाउनलोड करना होता है।

इस तकनीक की पैठ 2019 में तब सामने आई जब पुलवामा में सीआरपीएफ के काफिले पर हमले में जैश–ए–मोहम्मद के आत्मघाती हमलावर द्वारा इस्तेमाल किए गए वर्चुअल सिम के बारे में एक सेवा प्रदाता से जानकारी मांगने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका को अनुरोध भेजा गया था, जिसमें 40 जवान शहीद हो गए थे।

राष्ट्रीय जाँच एजेंसी और अन्य सुरक्षा एजेंसियों की विस्तृत जाँच से पता चला है कि अकेले पुलवामा हमले में 40 से ज़्यादा वर्चुअल सिम कार्ड इस्तेमाल किए गए थे। अधिकारियों ने बताया कि घाटी के साइबरस्पेस में शायद और भी कई सिम कार्ड मौजूद हैं।

उपराज्यपाल ने युवाओं...

जिले विकसित हों, और सबसे महत्वपूर्ण बात, हमारे विश्वविद्यालय विकसित हों और हमारी आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँ। मुझे गर्व है कि आईयूएसटी इस संकल्प के साथ पूरी निष्ठा और भावना से काम कर रहा है।ष्

सरदार वल्लभभाई पटेल को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उपराज्यपाल ने युवाओं से आग्रह किया कि वे सरदार पटेल की परिकल्पना के अनुरूप भारत के उज्जवल भविष्य और समावेशी समाज के निर्माण के लिए स्वयं को पूरी तरह समर्पित करें।

उपराज्यपाल ने नशीली दवाओं के खतरे से निपटने के अपने संकल्प को भी दोहराया और जम्मू–कश्मीर के प्रत्येक विश्वविद्यालय को नशा मुक्त बनाने का दृढ़ संकल्प लिया।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि केवल नशामुक्त परिसर ही राष्ट्र निर्माण में योगदान दे सकते हैं, यह लक्ष्य कुछ प्रमुख पहलों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

नशा–विरोधी अभियान प्रवेश स्तर से ही शुरू होना चाहिए और हर छात्र को नशे से दूर रहने की शपथ लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। हर विश्वविद्यालय को संकाय सदस्यों की देखरेख में एक ष्नशे को ना कहें छात्र समितिष् स्थापित करनी चाहिए, जो एक प्रारंभिक चेता. वनी तंत्र के रूप में काम करेगी।

विश्वविद्यालयों को एक गोपनीय रिपोर्टिंग प्रणाली बनानी चाहिए और ज़रूरतमंद छात्रों को टेली–मानस जैसी हेल्पलाइनों के ज़रिए सहायता की सुनिश्चित पहुँच प्रदान करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि परामर्श और सहायता प्रणालियों के अलावा, नशामुक्ति विषयक सामग्री को भी शैक्षणिक पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए।

उपराज्यपाल ने विकसित भारत युवा संसद और वाद–विवाद प्रतियोगिताओं सहित पूर्व–कार्यक्रमों के विजेताओं को सम्मानित किया और 12 अगस्त को होने वाले मुख्य कार्यक्रम के लिए शुभकामनाएँ दीं। इस महत्वपूर्ण दिन पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ष्विकसित भारत – युवा कनेक्ट कार्यक्रमष् का औपचारिक शुभारंभ करेंगे, जिसम. ें वे एक साथ 1,339 विश्वविद्यालयों के छात्रों और शिक्षकों से जुड़ेंगे।

इस अवसर पर, उपराज्यपाल ने राष्ट्र की प्रगति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हुए, सभी को विकसित भारत शपथ दिलाई। उन्होंने विश्वविद्यालय के प्रकाशन और शैक्षणिक उत्कृष्टता प्राप्त करने तथा विश्वविद्यालय को भविष्य के लिए तैयार करने हेतु आईयूएसटी की संस्थागत विकास योजना का भी विमोचन किया।

आईयूएसटी के कुलपति प्रोफेसर शकील अहमद रोमशू ने एक विशेष प्रस्तुति दी कि किस प्रकार विकसित भारत/2047 के विजन को विश्व. विद्यालय की संस्थागत विकास योजना (आईडीपी) में एकीकृत किया जा रहा है, जिसमें विभाग और केंद्र स्तर तक प्रशासनिक, शैक्षणिक, अनुसंधान और आउटरीच गतिविधियों को शामिल किया गया है।

छात्रों के बीच एक खुला संवाद सत्र, युवा संवाद भी आयोजित किया गया, जिसमें नागरिक जिम्मेदारियों, राष्ट्रीय विकास और वर्तमान मुद्द. ों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसके बाद "सरदार /150" वीडियो का प्रदर्शन किया गया, जो सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन और विरासत को एक दृश्य श्रद्धांजलि थी।

इस अवसर पर उच्च शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री शांतमनु, पुलवामा के उपायुक्त श्री बशारत कयूम, शैक्षणिक मामलों के डीन प्रोफेसर एएच मून, आईयूएसटी के रजिस्ट्रार प्रोफेसर अब्दुल वाहिद, वरिष्ठ अधिकारी, विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य और छात्र उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने नकली...

पर अपनी आजीविका के लिए निर्भर कारीगर परिवारों पर प्रतिकूल प्रभाव डालेंगे।

कालीन निर्यात संवर्धन परिषद, भारतीय रेशम निर्यात संवर्धन परिषद, मीरास कालीन बुनकर सहकारी समिति, कश्मीर कालीन क्लस्टर विकास संगठन और कश्मीर कालीन निर्माता संघ के एक प्रतिनिधिमंडल ने श्रीनगर के नागरिक सचिवालय में मुख्यमंत्री से मुलाकात की और सभी हस्तशिल्प–पंजीकृत शोरूमों में मशीन–निर्मित कालीनों की बिक्री पर प्रतिबंध लगाने और सख्त प्रवर्तन तंत्र बनाने की मांग की। उन्होंने कुछ बेईमान व्यापारियों द्वारा मशीन–निर्मित कालीनों पर नकली जीआई लेबल का इस्तेमाल करने का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने इस शिल्प, कश्मीर की पहचान और कारीगरों की आजीविका को संरक्षित करने का आह्वान किया।

मनीगाम, गंदेरबल से एक प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री से मुलाकात की और भविष्य में संस्थागत उपयोग के लिए अपने क्षेत्र में ज़मीन के एक हिस्से को सुरक्षित रखने का अनुरोध किया। मानव संसाधन एजेंसी के एक प्रतिनिधिमंडल ने जम्मू–कश्मीर हाउसिंग बोर्ड में लंबित वेतन के संबंध में अपनी शिकायत दर्ज कराई। दंत चिकित्सकों के एक प्रतिनिधिमंडल ने दंत चिकित्सकों के पदों के सृजन और नियुक्ति की मांग रखी।

सोपोर के विधायक, त्रेहगाम के विधायक ने भी अपने निर्वाचन क्षेत्रों से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए मुख्यमंत्री से मुलाकात की।

निजी स्कूल एसोसिएशन के एक अन्य प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री के समक्ष निजी स्कूलों से संबंधित कई मुद्दे उठाए, जैसे कि राज्य स्कूल मानक प्राधिकरण (एसएसएसए) की स्थापना, निजी स्कूलों को विभागों द्वारा अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी करने में आसानी और तेजी लाना, किराए के आवासों में संचालित स्कूलों के लिए 10 साल की लीज–डीड की आवश्यकता, यह सुनिश्चित करना कि छात्रों को शैक्षणिक कैलेंडर में न्यूनतम कार्य दिवस मिलें, शिक्षा पर विभिन्न सरकारी समितियों में निजी स्कूल निकायों का प्रतिनिधित्व और अन्य चिंताजनक मामले।

विभिन्न विभागों द्वारा निजी स्कूलों को अनापत्ति प्रमाण पत्र देने में देरी तथा सेवाएं प्रदान करने में देरी के मुद्दे पर मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने विस्तार से बताया कि कल आयोजित पीएसजीए बैठक में सभी प्रशासनिक सचिवों को जम्मू–कश्मीर लोक सेवा गारंटी अधिनियम (पीएसजीए) के कार्यान्वयन का आकलन करने के लिए मासिक समीक्षा बैठकें आयोजित करने के निर्देश दिए गए थे तथा आम जनता को सेवाएं प्रदान करने के लिए समय–सीमा के सख्त प्रवर्तन पर बल दिया गया था।

गौरतलब है कि मुख्यमंत्री ने कल लोक सेवा गारंटी अधिनियम के कार्यान्वयन पर एक उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की थी, जिसमें मुख्यमंत्री ने इस बात पर जोर दिया था कि पीएसजीए ढांचा मनमाने और विलंबित निर्णय लेने को समाप्त करने और जनता को समय पर सेवाएं प्रदान करने के लिए है, जैसे राजस्व रिकॉर्ड, प्रमाण पत्र, लाइसेंस, उपयोगिता कनेक्शन आदि। उन्होंने विभागों को निर्धारित समयसीमा का सख्ती से पालन करने और यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि दोषी अधिकारियों पर जुर्माना लगाया जाए।

ऑपरेशन सिंदूर...

और देश के लोगों की भावनाओं के खिलाफ था।

केंद्रीय मंत्री सिंह ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ष्पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों द्वारा सीमा पार से किए गए बर्बर आतंकी हमले का जवाब देने के लिए शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य आतंकवादी बुनियादी ढांचे को नष्ट करना और भारत में भेजे जाने वाले संभावित आतंकवादियों को बेअसर करना था।ष्

उन्होंने कहा कि हालांकि, पाकिस्तान ने कुछ सैन्य सुविधाओं के अलावा भारतीय नागरिक क्षेत्रों को भी निशाना बनाने का प्रयास किया।

ष्पाकिस्तान की इन उकसावे वाली और आक्रामक कार्रवाइयों का भारतीय सशस्त्र बलों ने कड़ा और निर्णायक जवाब दिया, जिससे पाकिस्तानी सेना को काफी नुकसान हुआ। इसके बाद, 10 मई, 2025 को पाकिस्तान के सैन्य संचालन महानिदेशक ने अपने भारतीय समकक्ष से गोलीबारी और सैन्य गतिविधियों को रोकने का अनुरोध किया, जिस पर उसी दिन बाद में सहमति बन गई,ष् राज्य मंत्री ने कहा।

ऑपरेशन सिंदूर के तहत, भारत ने 7 मई को तड़के सटीक हमला. ें में पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में नौ आतंकी शिविरों को ध्वस्त कर दिया था। यह कार्रवाई 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले का बदला लेने के लिए की गई थी।

एक अलग प्रश्न में विदेश मंत्रालय से यह भी पूछा गया कि क्या मंत्रालय ने विश्व मंच पर पाकिस्तान को अलग–थलग करने के लिए कोई प्रयास किया है।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की नियमित वार्षिक प्रक्रिया के तहत, इसके सहायक निकायों और समितियों के अध्यक्षों और उपाध्यक्षों का चयन इसके स्थायी और निर्वाचित अस्थायी सदस्यों में से किया जाता है। सिंह ने बताया कि रूस और फ्रांस के अलावा, पाकिस्तान को 2025 के लिए संयुक्त राष्ट्र आतंकवाद निरोधी समिति के उपाध्यक्षों में से एक चुना गया है।

उल्लेखनीय है कि भारत 2022 में संयुक्त राष्ट्र आतंकवाद निरोधी समिति का अध्यक्ष था। इसी प्रकार, भारत 2011–12 के कार्यकाल के दौरान भी इसी समिति का अध्यक्ष था, ऐसा राज्य मंत्री ने कहा।

उन्होंने कहा, ष्भारत सरकार पाकिस्तान से उत्पन्न सीमा पार आतंकवाद के खतरे के बारे में सभी संबंधित वार्ताकारों को संवेदनशील बना रही है। भारत के निरंतर प्रयासों के कारण, वैश्विक समुदाय को सीमा पार आतंकवाद पर भारत की चिंताओं की बेहतर समझ है।

टोनी ने डीडीसी फंड से रू 71.25 लाख की मनमानी कटौती के मामले में मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला से हस्तक्षेप करने का आग्रह किया

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

सुचेतगढ़, : ग्रामीण विकास एवं योजना विभाग पर तीखा हमला करते हुए, जिला विकास परिषद (डीडीसी) सुचेतगढ़ और वरिष्ठ कांग्रेस नेता तरनजीत सिंह टोनी ने डीडीसी सुचेतगढ़ निर्वाचन क्षेत्र को आवंटित पूंजीगत व्यय बजट से घ्71.25 लाख की मनमानी कटौती की निंदा की है। उन्होंने इस कदम को ष्जमीनी लोकतंत्र पर हमलाष् बताया और मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला से धनराशि बहाल करने के लिए तत्काल कार्रवाई करने का आग्रह किया। टोनी ने कहा कि जिला पूंजीगत व्यय बजट 2024-25 के तहत निर्धारित धनराशि विभिन्न पंचायतों में लंबे समय से लंबित विकास कार्यों को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण है। टोनी ने कहा, ष्यह पैसा निजी इस्तेमाल के लिए नहीं था। यह सार्वजनिक धन था जो आवश्यक ग्रामीण बुनियादी ढाँचे – सड़क, जल आपूर्ति, जल निकासी व्यवस्था और सामुदायिक विकास के लिए था। बिना किसी जवाबदेही के घ्71.25 लाख रोकने का सरकार का फैसला चौंकाने वाला और अस्वीकार्य है।ष्

उन्होंने आरोप लगाया कि यह धनराशि मूल रूप से पिछले साल कई परियोजनाओं के लिए आवंटित की गई थी, लेकिन ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारियों की ष्लापरवाही और अक्षमताष् के कारण खर्च नहीं हो पाई। उन्होंने आगे कहा, ष्पूर्ण अधिकार और स्पष्ट निर्देश होने के बावजूद, संबंधित विभाग ने कार्यान्वयन में देरी की। दोषी अधिकारियों को दंडित करने के बजाय, सरकार ने लोगों के उचित बजट में कटौती करके उन्हें दंडित किया है।ष्

टोनी ने ज़ोर देकर कहा कि जम्मू-कश्मीर पंचायती राज अधिनियम के तहत गठित डीडीसी एक लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित निकाय है और सम्मान और अधिकार के साथ व्यवहार किए जाने का हकदार है। टोनी ने कहा, ष्पहले दिन से ही, नौकरशाही व्यवस्था ने डीडीसी की शक्ति को कम करने की कोशिश की है। बजट में यह कटौती साबित करती है कि नौकरशाही अभी भी निर्वाचित प्रतिनिधियों के साथ सहयोग करने से इनकार करती है। वे हमें विकास में भागीदार के बजाय बाधा मानते हैं। मामले की गंभीरता पर प्रकाश डालते हुए, टोनी ने बताया कि परियोजना कार्यान्वयन योजनाओं को अंतिम रूप देने के लिए कल दोपहर 3 बजे एक महत्वपूर्ण बैठक निर्धारित है, और बजट में अचानक कटौती ने सारी योजनाएँ अस्त-व्यस्त कर दी हैं। उन्होंने ग्रामीण विकास मंत्री जाविद अहमद डार और मुख्य सचिव अटल डुल्लू से तुरंत हस्तक्षेप करने और रोकी गई पूंजीगत व्यय राशि को बहाल करने का आग्रह किया।

उन्होंने मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला से भी सीधी अपील की और चेतावनी दी कि यह स्थिति एक खतरनाक मिसाल कायम कर सकती है। उन्होंने चेतावनी दी, ष्अगर मुख्यमंत्री अभी हस्तक्षेप नहीं करते हैं, तो इससे यह संदेश जाएगा कि नौकरशाही के हुक्म से निर्वाचित जमीनी संस्थाओं को कभी भी खारिज किया जा सकता है। यह लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का पूर्ण उलटफेर होगा। टोनी ने विभाग के भीतर ष्दंड से मुक्ति की संस्कृतिष् की भी आलोचना की। उन्होंने कहा, ष्साल दर साल, धन आवंटित किया जाता है और फिर आधिकारिक लापरवाही के कारण उसे खत्म होने दिया जाता है। किसी को भी ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाता। लेकिन जब निर्वाचित निकायों की बात आती है, तो व्यवस्था तेज़ी से काम करती है – उनका समर्थन करने के लिए नहीं, बल्कि उनकी शक्ति को कम करने के लिए। अपने वक्तव्य के अंत में, टोनी ने जम्मू-कश्मीर के सभी डीडीसी सदस्यों से इस अन्याय के खिलाफ एकजुट होने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, ष्यह सिर्फ़ सुचेतगढ़ का मामला नहीं है। यह हमारी लो. कतांत्रिक संस्थाओं की अखंडता का मामला है। अगर हम इसे चुपचाप होने देंगे, तो डीडीसी का मूल उद्देश्य ही विफल हो जाएगा।

मंडलायुक्त, पुलिस महानिरीक्षक ने मचैल माता यात्रा की तैयारियों की समीक्षा की

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

जम्मू, : जम्मू के संभागीय आयुक्त रमेश कुमार ने पुलिस महानिरीक्षक भीम सेन टूटी के साथ गुरुवार को श्री मचैल माता यात्रा 2025 के सुचारू और सुरक्षित संचालन के लिए व्यवस्थाओं की समीक्षा के लिए एक बैठक की अध्यक्षता की।

बैठक में डीआईजी यातायात, उपायुक्त किश्तवाड़, एसएसपी किश्तवाड़, एमडी जेपीडीसीएल, सचिव संस्कृति, पर्यटन, परिवहन, स्वास्थ्य और अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

संभागीय आयुक्त और पुलिस महानिरीक्षक ने नागरिक और पुलिस प्रशासन द्वारा वार्षिक यात्रा के लिए किए गए प्रबंधों का विस्तृत मूल्यांकन किया तथा उपायुक्त और एसएसपी किश्तवाड़ द्वारा एक विस्तृत पावरप्वाइंट प्रस्तुति दी गई। तैयारियों की समीक्षा करते हुए, मंडलायुक्त ने पवित्र तीर्थस्थल के रास्ते में तीर्थयात्रियों के लिए उपलब्ध कराई गई नागरिक सुविधाओं की जानकारी ली। रात्रि विश्राम के लिए निर्धारित स्थानों, जैसे कि धर्मशालाओं, होमस्टे और गेस्टहाउसों में आवास क्षमता पर बिंदुवार चर्चा की गई।

जम्मू-कश्मीर के उज्ज्वल भविष्य के लिए युवा महत्वपूर्ण : आईयूएसटी में एलजी सिन्हा

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

श्रीनगर, : उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा ने आज इस्लामिक यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी (आईयूएसटी), अवंतीपोरा में विकसित भारत युवा कनेक्ट कार्यक्रम को संबोधित किया।

युवा कनेक्ट, युवा मामले एवं खेल मंत्रालय द्वारा शुरू किए गए विक. सित भारत-युवा कनेक्ट कार्यक्रम के अंतर्गत एक प्रमुख पहल है।

अपने संबोधन में उपराज्यपाल ने युवा सहभागिता के लिए परिवर्तनकारी मंच की सराहना की, जिसका उद्देश्य युवा नागरिकों और नीति निर्माताओं के बीच की खाई को पाटना है तथा युवाओं को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय हितधारक बनने के लिए सशक्त बनाना है।

उन्होंने कहा कि यह पहल संरचित युवा सहभागिता को बढ़ावा देने तथा युवा नागरिकों और नीति निर्माताओं के बीच मजबूत संबंध बनाने की दिशा में एक कदम है। "विकसित भारत युवा कनेक्ट कार्यक्रम का उद्देश्य एक ऐसा मंच तैयार करना है जहां युवा विचारों को साझा कर सकें, नीतिगत संवादों में शामिल हो सकें और विकसित भारत की दिशा में भारत की विकास यात्रा में सक्रिय रूप से योगदान करने के लिए प्रेरित हो सकें।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने यूथ कनेक्ट के चार मुख्य उद्देश्य रेखांकित किए थेरू जुड़ाव, प्रोत्साहन, सक्षमता और प्रेरणा। माई भारत मंच का लाभ उठाते हुए, यह कार्यक्रम भारत के युवाओं के बीच संवाद, सहभागी शासन और नेतृत्व विकास को बढ़ावा देने पर ज़ोर देता है, जिससे उन्हें 2047 तक देश की प्रगति और विकास यात्रा में प्रभावी योगदान देने के लिए तैयार किया जा सके।

सत शर्मा ने जम्मू-कश्मीर भाजपा के नवनियुक्त मोर्चा अध्यक्षों का अभिनंदन किया

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

जम्मू, : भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जम्मू-कश्मीर के अध्यक्ष सत शर्मा ने आज नवनियुक्त महिला मोर्चा अध्यक्ष एडवोकेट नेहा महाजन को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने पार्टी मुख्यालय में आयोजित एक संक्षिप्त समारोह में उनका अभिनंदन किया और उनकी प्रतिबद्धता की सराहना की तथा पूरे केंद्र शासित प्रदेश में महिला मोर्चा को मज़बूत करने की उनकी क्षमता पर विश्वास व्यक्त किया।

इस अवसर पर भाजपा उपाध्यक्ष रशपाल वर्मा, महासचिव संजीता डोगरा, सचिव रीमा पाधा और कई महिला मोर्चा कार्यकर्ताओं सहित पार्टी के प्रमुख नेता उपस्थित थे और उन्होंने एडवोकेट महाजन को अपनी शुभकामनाएँ दीं।

इससे पहले, सत शर्मा ने अन्य प्रमुख भाजपा मोर्चों के नवनियुक्त अध्यक्षों, अरुण प्रभात (भाजयुमो), ब्रह्म ज्योत (ओबीसी मोर्चा) और धर्मिंदर कुमार (एससी मोर्चा) को भी जम्मू-कश्मीर में पार्टी के चल रहे संगठनात्मक पुनर्गठन के तहत उनके मनोनयन के लिए बधाई दी।

उन्होंने विविध समुदायों से जुड़ने और जमीनी स्तर पर पार्टी को मज़बूत करने में मोर्चों की महत्वपूर्ण भूमिका पर ज़ोर दिया।

सत शर्मा ने नई टीम की ऊर्जा, समर्पण और दूरदर्शिता की सराहना की और उनसे लोगों तक पहुँचने और जम्मू-कश्मीर में भाजपा के जनस. `वा और राष्ट्रीय विकास के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए समावेशिता और जोश के साथ काम करने का आग्रह किया।

बारामूला में आतंकवादियों को पनाह देने वाली संपत्ति जब्त

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

श्रीनगर : जम्मू-कश्मीर के बारामूला जिले में आतंकवादियों को पनाह देने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक आवासीय संपत्ति को कुर्क किया गया है। पुलिस ने गुरुवार को यह जानकारी दी।

पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधि. नियम (यूएपीए) के तहत एक बड़ी कार्रवाई में सोपोर में पुलिस ने गैरकानूनी और राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में शामिल आतंकवादियों को आश्रय और रसद सहायता प्रदान करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली आवासीय संपत्ति को जब्त कर लिया।

उन्होंने बताया कि रेबन रमहम में स्थित इस संपत्ति में एक मंजिला आवासीय मकान के साथ तीन कनाल और तीन मरला ज़मीन शामिल है। यह संपत्ति उत्तरी कश्मीर जिले के सोपोर के रेबन इलाके के निवासी जावेद अहमद डार के स्वामित्व में है।

प्रवक्ता ने बताया कि यह कुर्की यूएपीए और शस्त्र अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत दर्ज प्राथमिकी के संबंध में की गई है।

उन्होंने बताया कि जांच के दौरान पाया गया कि उक्त संपत्ति का इस्तेमाल जानबूझकर आतंकवादियों को शरण देने और उनके ठहरने के लिए किया गया, जिससे सोपोर क्षेत्र में आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने में मदद मिली। उन्होंने बताया कि एकत्रित साक्ष्यों के आधार पर कार्रवाई करते हुए तथा सक्षम प्राधिकारी से आवश्यक अनुमोदन प्राप्त करने के बाद यूएपीए के तहत कानूनी प्रावधानों के अनुसार उक्त संपत्ति को कुर्क कर लिया गया है।

राज्य का दर्जा जल्द बहाल किया जाना चाहिए : आज़ाद

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

जम्मू : डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव आजाद पार्टी के अध्यक्ष गुलाम नबी आजाद ने गुरुवार को दृढ़ विश्वास व्यक्त किया कि जम्मू-कश्मीर में राज्य का दर्जा बहाल किया जाएगा और कहा कि यह जितनी जल्दी हो, उतना ही बेहतर होगा। उन्होंने जोर देकर कहा कि क्षेत्र के विकास और प्रगति के लिए राज्य का दर्जा अत्यंत आवश्यक है। आजाद ने उपराष्ट्रपति पद के लिए अपने नामांकन की अटकलों को भी खारिज कर दिया और मीडिया तथा लोगों से ऐसी अफवाहों पर ध्यान न देने को कहा।

जम्मू के रियासी जिले के दौरे के दौरान आजाद ने संवाददाताओं से कहा, ष्मैं प्रधानमंत्री और गृह मंत्री का आभारी हूं कि उन्होंने वादा किया है कि जम्मू-कश्मीर में राज्य का दर्जा बहाल किया जाएगा। मुझे पूरा विश्वास है कि वे राज्य का दर्जा वापस लौटाएंगे। लेकिन यह जितनी जल्दी हो, उतना ही बेहतर होगा। एक सवाल के जवाब में आजाद ने कहा, क्षेत्र के विकास, प्रगति और समग्र बेहतरी के लिए राज्य का दर्जा नितांत आवश्यक है। यह हिंदू या मुस्लिम, या कश्मीर या जम्मू का मामला नहीं है; यह हर पार्टी, धर्म और समुदाय से संबंधित है। राज्य का दर्जा सभी राजनीतिक दलों के लिए आवश्यक है, चाहे वह भाजपा हो, नेशनल कॉन्फ्रेंस हो या पीडीपी। उन्होंने कहा कि राज्य का दर्जा जल्द से जल्द बहाल होना चाहिए। ष्जब मैं मंत्री था, मैंने तीन केंद्र शासित प्रदेशों को राज्य बनाने की सिफ़ारिश की थी, और तीनों को राज्य का दर्जा दे दिया गया था। लेकिन, पहली बार मैंने अपने ही राज्य को केंद्र शासित प्रदेश बनते देखा। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी।ष्

एक अन्य प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 370 और राज्य का दर्जा दो अलग-अलग चीजें हैं। ष्हमारी तत्काल मांग राज्य का दर्जा बहाल करने की है। मैं संसद में अनुच्छेद 370 के बारे में विस्तार से बोल चुका हूँ।

आप और पूरा मीडिया इसे सुन चुका है। उन्होंने अपने पहले के बयान को दोहराया कि राज्य का दर्जा तभी बहाल किया जा सकता है जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी संसद में विधेयक लाएंगे या सर्वोच्च न्यायालय मामले की समीक्षा करके फैसला देगा।

उपराष्ट्रपति पद पर पदोन्नत होने की अटकलों पर आज़ाद ने कहा कि ये सब महज़ अटकलें हैं।

जम्मू और कश्मीर : संस्कृति और आध्यात्मिकता का जीवंत चित्रण : रजनी सेठी

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

जम्मू : जम्मू और कश्मीर, जिसे अक्सर भारत का मुकुट कहा जाता है, अपार सांस्कृतिक, धार्मिक और भौगोलिक विविधताओं वाला देश है। यह क्षेत्र न केवल अपने मनमोहक प्राकृतिक दृश्यों और बर्फ से ढके पहाड़ों के लिए जाना जाता है, बल्कि अपनी जीवंत परंपराओं, समृद्ध विरासत और गहरी आध्यात्मिक जड़ों के लिए भी जाना जाता है। यहाँ विभिन्न जातियों, समुदायों और धर्मों के लोग शांतिपूर्वक सह–अस्तित्व में रहते हैं, जो विविधता में एकता के एक सुंदर प्रतीक में योगदान करते हैं।

जम्मू और कश्मीर दोनों संभाग पर्यटन स्थलों से भरे पड़े हैं जो देश–विदेश से लाखों पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। जहाँ कश्मीर अपनी घाटियों, उद्यानों और झीलों के लिए जाना जाता है, वहीं जम्मू भी आध्यात्मिक पर्यटन में उतना ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि इसे मंदिरों का शहर कहा जाता है। रघुनाथ मंदिर, रणवीरेश्वर मंदिर और माता वैष्णो देवी जैसे मंदिर इस क्षेत्र की आध्यात्मिक पहचान के केंद्र में हैं। वर्तमान में, पवित्र अमरनाथ यात्रा चल रही है, जो पूरे जम्मू–कश्मीर में आध्यात्मिक लहर लेकर आ रही है। इस वार्षिक तीर्थयात्रा में लाखों श्रद्धालु हिमालय में स्थित पवित्र अमरनाथ गुफा की यात्रा करते हैं, जो इस केंद्र शासित प्रदेश के आध्यात्मिक चरित्र और धार्मिक सद्भाव को और सुदृढ़ करता है। इस आध्यात्मिक रूप से जीवंत माहौल में, जम्मू में एक नई पहल ने आकार लिया हैकृतवी आरती, जो हर शाम पूजनीय तवी नदी के तट पर आयोजित होती है। हाल ही में शुरू हुई तवी आरती तेज़ी से एक शक्तिशाली आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रतीक बन गई है। यह रोज़ाना शाम 7 बजे चौथे तवी पुल के पास आयोजित होती है और अभी से हज़ारों श्रद्धालुओं, तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित करने लगी है।

तवी नदी केवल एक भौगोलिक इकाई ही नहीं है; इसका गहरा पौराणिक और आध्यात्मिक महत्व भी है। सूर्यपुत्री या सूर्य की पुत्री कही जाने वाली तवी नदी इस क्षेत्र के लोगों के लिए पवित्र है। इसके तट पर आरती करना भक्ति का प्रतीक होने के साथ–साथ जम्मू के आध्यात्मिक सार का उत्सव भी है।

तवी आरती को नियमित रूप से आयोजित करने का निर्णय एक ऐतिहासिक और सराहनीय कदम है।

यह पारंपरिक मूल्यों के पुनरुद्धार और जम्मू की सांस्कृतिक एवं धार्मिक पहचान के संवर्धन का प्रतीक है। इसने शहर में एक नया आध्यात्मिक आयाम जोड़ा है, जिससे यह श्रद्धालुओं और पर्यटकों दोनों के लिए एक दर्शनीय स्थल बन गया है। विशेष रूप से अमरनाथ यात्रा के दौरान, तवी आरती को तीर्थयात्रा के आध्यात्मिक विस्तार के रूप में देखा जाता है, जिससे तीर्थयात्रियों को गुफा मंदिर पहुँचने से पहले ही दिव्य अनुभूति का अनुभव होता है।

तवी आरती सिर्फ़ एक धार्मिक अनुष्ठान से कहीं बढ़कर एक सांस्कृतिक आंदोलन है। यह युवा पीढ़ी को डोगरा समुदाय की सदियों पुरानी परंपराओं से जोड़ती है और हमारी समृद्ध विरासत पर गर्व को बढ़ावा देती है। तेज़ी से बदलती दुनिया में, इस तरह की पहल हमारे गौरवशाली अतीत की याद दिलाती है और युवाओं को अपनी संस्कृति और मूल्यों से जुड़े रहने के लिए प्रोत्साहित करती है।

तवी आरती के आयोजन और प्रचार में स्थानीय लोगों, प्रशासन और धार्मिक नेताओं की भागीदारी, जम्मू की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पहचान को एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक स्थल के रूप में स्थापित करने के सामूहिक प्रयास को दर्शाती है। इस पहल ने न केवल क्षेत्र की धार्मिक पर्यटन क्षमता को बढ़ाया है, बल्कि अमरनाथ यात्रा के दौरान आध्यात्मिक वातावरण को भी सुदृढ़ किया है।

मैं जम्मू के सभी लोगों से अनुरोध करता हूँ कि वे पूरे मन से तवी आरती में शामिल हों और इस दिव्य पहल का हिस्सा बनें। आइए, हम सब मिलकर अपनी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक जड़ों से जुड़ें, अपनी पवित्र नदी का उत्सव मनाएँ और एकता, आस्था और परंपरा को बढ़ावा दें। आपकी उपस्थिति इसे और भी सार्थक बनाएगी। निष्कर्षतः, तवी आरती एक दैनिक अनुष्ठान से कहीं अधिक है – यह डोगरा पहचान की गौरवपूर्ण अभिव्यक्ति है, आध्यात्मिक पुनरुत्थान का प्रतीक है, तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए जम्मू की समृद्ध परंपराओं को संरक्षित करने और बढ़ावा देने की दिशा में एक कदम है।

छड़ी मुबारक को अनुष्ठान के लिए शंकराचार्य मंदिर ले जाया गया

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

श्रीनगर : भगवान शिव की भगवा वस्त्रधारी पवित्र छड़ी श्छड़ी मुबारकश को सदियों पुरानी परंपराओं के अनुसार श्हरियाली अमावस्याश (श्रावण अमावस्या) के अवसर पर विशेष पूजा–अर्चना के लिए गुरुवार को ऐतिहासिक शंकराचार्य मंदिर ले जाया गया।

महंत दीपेंद्र गिरि के नेतृत्व में छड़ी मुबारक स्वामी अमरनाथ जी को वार्षिक अमरनाथ यात्रा के तहत पूजा–अर्चना के लिए गोपाद्री पहाड़ियों पर स्थित मंदिर ले जाया गया।

गदा के संरक्षक गिरि ने बताया कि छड़ी मुबारक को यहां लाल चौक के निकट दशनामी अखाड़ा स्थित उसके निवास स्थान से मंदिर लाया गया, जहां पूजन किया गया।

उन्होंने कहा कि शंख की ध्वनि से वातावरण में ऊर्जा भर गई और वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पूजन किया गया।

गिरि ने बताया कि पवित्र गदा के साथ आए साधुओं ने पूजा में भाग लिया और जम्मू–कश्मीर की शांति और समृद्धि के लिए सामूहिक प्रार्थना भी की गई।

उन्होंने बताया कि शुक्रवार को छड़ी मुबारक को देवी के दर्शन के लिए यहां हरि पर्वत स्थित श्शारिका–भवानीश मंदिर भी ले जाया जाएगा।

उन्होंने बताया कि रविवार को यहां श्री अमरेश्वर मंदिर दशनामी अखाड़ा में छड़ी स्थापना की रस्में निभाई जाएंगी, जिसके बाद मंगलवार को नागपंचमी के अवसर पर अखाड़े में छड़ी पूजन किया जाएगा।

महंत पहलगाम, चंदनवाड़ी, शेषनाग और पंचतरणी में रात्रि विश्राम के बाद 9 अगस्त को श्रावण पूर्णिमा की सुबह पवित्र गुफा मंदिर में पूजन और दर्शन के लिए पवित्र गदा ले जाएंगे।

गुफा मंदिर में पूजा के बाद अगले दिन पहलगाम में लिद्दर नदी में विसर्जन किया जाएगा।

अधिकारियों ने बताया कि अनंतनाग जिले में स्थित पवित्र अमरनाथ गुफा मंदिर में पूजा–अर्चना के लिए 3,500 तीर्थयात्रियों का एक नया जत्था गुरुवार को भगवती नगर आधार शिविर से रवाना हुआ।

तीर्थयात्रियों का 22वां जत्था, जिसमें 2,704 पुरुष, 675 महिलाएं, 12 बच्चे और 109 साधु–साध्वियां शामिल हैं, कड़ी सुरक्षा के बीच 140 वाहनों के दो काफिलों में आधार शिविर से पहलगाम और बालटाल के लिए रवाना हुआ।

नआईटी श्रीनगर को आईआईटी कानपुर के सहयोग से एएनआरएफ-पीएआईआर-बी अनुदान के तहत स्पोक संस्थान के रूप में चुना गया

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

श्रीनगर : राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) श्रीनगर को पांच अन्य संस्थानों के साथ अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (एएनआरएफ) द्वारा त्वरित नवाचार और अनुसंधान के लिए भागीदारी (पीएआईआर), श्रेणी बी, योजना के तहत 2.3 करोड़ रुपये का प्रतिष्ठित अनुदान प्राप्त करने के लिए चुना गया है। यह परियोजना नामित हब संस्थान, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) कानपुर के सहयोग से क्रियान्वित की जाएगी।

पीएआईआर पहल का उद्देश्य हब–एंड–स्पोक मॉडल के माध्यम से सहयोगात्मक अनुसंधान प्रयासों को मज़बूत करना है। इस परियोजना के तहत, नेटवर्क दो विषयों पर ध्यान केंद्रित करेगा, जिनमें कैंसर निदान और चिकित्सा विज्ञान में उन्नत अनुसंधान और शिक्षा (केयर–कैडाट) और ऑटोमोटिव क्षेत्र के लिए सेमीकंडक्टर और डिजिटल प्रौद्योगिकियों का सहक्रियात्मक विकास शामिल है। एनआईटी श्रीनगर दूसरे विषय के अंतर्गत भाग ले रहा है और सेमीकंडक्टर तथा ऑटोमोटिव प्रौद्योगिकी में स्वदेशी समाधान के विकास में योगदान देगा।

एक वर्षीय सहयोगात्मक परियोजना का नेतृत्व इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार इंजीनियरिंग विभाग में सहायक प्रोफेसर डॉ. शेख आमिर अहसन कर रहे हैं, जो एनआईटी श्रीनगर के लिए प्रमुख अन्वेषक (पीआई) के रूप में कार्य करते हैं। अन्य में प्रोफेसर (एचएजी) मोहम्मद फारूक वानी, उच्च तापमान ट्राइबोलॉजी प्रयोगशाला, और हेड एमईडी, एनआईटी श्रीनगर, प्रोफेसर (एचएजी) जीए हरमैन, मैकेनिकल इंजीनियरिंग से, प्रोफेसर अदनान कयूम, (एमईडी), डॉ शेख शाहिद सलीम, एसोसिएट प्रोफेसर, मैकेनिकल इंजीनियरिंग शामिल हैं।

डॉ. फरहाद इलाही बख्श, सहायक प्रोफेसर, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग, डॉ. मोहम्मद अहसान चिश्ती, एसोसिएट प्रोफेसर और एसोसिएट डीन (अनुसंधान और परामर्श), कंप्यूटर विज्ञान और इंजीनियरिंग विभाग, डॉ. अंशुल गुप्ता, सहायक प्रोफेसर, धातुकर्म और सामग्री इंजीनियरिंग, डॉ. इखलाक हुसैन, सहायक प्रोफेसर, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग, डॉ. हरकीरत सिंह, सहायक प्रोफेसर, भौतिक विज्ञान, डॉ. अजहर जमील, सहायक प्रोफेसर, मैकेनिकल इंजीनियरिंग, डॉ. हरेश मायनेनी, सहायक प्रोफेसर, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग।

अन्य लोगों में डॉ. जनीबुल बशीर, सहायक प्रोफेसर, सूचना प्रौद्योगिकी, डॉ. घ रसूल बेग, एसोसिएट प्रोफेसर, इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार, डॉ. ब्रजेंद्र सिंह सेंगर, सहायक प्रोफेसर, इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार, डॉ. अमित कुमार, सहायक प्रोफेसर, इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार इंजीनियरिंग, डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार इंजीनियरिंग और डॉ. मोहम्मद नदीम भट, वैज्ञानिक अधिकारी, केंद्रीय अनुसंधान सुविधा केंद्र शामिल हैं। इस बीच, पीएआईआर योजना के तहत प्रस्तावित सहयोगात्मक गतिविधियों के लिए स्वीकृत 2.3 करोड़ रुपये की राशि का प्रबंधन हब संस्थान, आईआईटी कानपुर द्वारा किया जाएगा। यह धनराशि हब के पास रहेगी, जबकि एनआईटी श्रीनगर जैसे संस्थान परियोजना के सभी अनुसंधान एवं विकास घटकों में सक्रिय रूप से भाग लेंगे।

एनआईटी श्रीनगर टीम को बधाई देते हुए, एनआईटी श्रीनगर के निदेशक प्रोफेसर बिनोद कुमार कनौजिया ने कहा कि आईआईटी कानपुर के साथ प्रतिष्ठित सहयोग एनआईटी श्रीनगर की बढ़ती अनुसंधान शक्ति का प्रमाण है।

उन्होंने कहा, ष्पीएआईआर योजना संस्थागत तालमेल और विषयगत अनुसंधान के माध्यम से नवाचार को बढ़ावा देने की राष्ट्रीय प्रतिबद्धता को दर्शाती है। सेमीकंडक्टर और ऑटोमोटिव क्षेत्र भारत के तकनीकी भविष्य के लिए रणनीतिक स्तंभ हैं और हमें इस राष्ट्रीय मिशन में योगदान देने पर गर्व है।ष्

एनआईटी श्रीनगर के रजिस्ट्रार प्रोफेसर अतीकुर रहमान ने कहा कि यह परियोजना हमारे बहु–विषयक संकाय की ताकत और एनआईटी श्रीनगर को परिभाषित करने वाली सहयोगी भावना को प्रदर्शित करती है। उन्होंने कहा, ष्मैं इस अत्यधिक प्रतिस्पर्धी अनुदान को प्राप्त करने के लिए प्रधान अन्वेषक, सह–अन्वेषकों और सभी संबंधित पक्षों को बधाई देता हूँ। इस तरह की पहल से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हमारे शोध की दृश्यता बढ़ेगी। डीन रिसर्च एंड कंसल्टेंसी प्रो. रूही नाज़ ने कहा, ष्यह सहयोग अंतःविषयक अनुसंधान को गति देगा और नवाचार–संचालित विकास के नए द्वार खोलेगा। राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुरूप एक शोध–प्रधान संस्थान बनने की हमारी दिशा में यह एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। एनआईटी श्रीनगर के अलावा, इस पीएआईआर–बी नेटवर्क के अंतर्गत अन्य स्पोक संस्थानों में छत्रपति साहूजी महाराज कानपुर विश्वविद्यालय, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईआईटी) ऊना, किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (केजीएमयू) लखनऊ, एनआईटी अरुणाचल प्रदेश और रेवेनशॉ विश्वविद्यालय, कटक शामिल हैं।

बहुत खास : अमरनाथ यात्रा के अनुभव पर विदेशी श्रद्धालु

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

श्रीनगर : छह देशों के नौ युवा विदेशी नागरिकों ने दक्षिण कश्मीर हिमालय में वार्षिक अमरनाथ यात्रा की है, जो वैश्विक आस्था और आध्यात्मिक सद्भाव का एक सुंदर उदाहरण है।

संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और जर्मनी सहित इन श्रद्धालुओं ने बालटाल मार्ग से यात्रा की है।

उन्होंने तीर्थयात्रा को एक बहुत ही विशेष अनुभव बताया तथा घाटी में मिले आतिथ्य की सराहना की।

कनाडा के रॉस नॉर्मन लीच ने 3,880 मीटर की ऊंचाई पर स्थित गुफा मंदिर में प्राकृतिक रूप से निर्मित बर्फ के शिवलिंग का दर्शन करने के बाद कहा, ष्मैं कश्मीर में सुंदर भूविज्ञान और प्रकृति तथा पवित्र गुफा की असीम ऊर्जा का अनुभव कर रहा हूं।ष्

लीच ने कहा कि समूह पिछले चार–पांच वर्षों से इस यात्रा की तैयारी कर रहा था और यह अनुभव बहुत सुंदर रहा।

उन्होंने कहा, ष्गुफा में मेरी आँखों से आँसू बह रहे थे और मेरे अंदर एक गहन मौन छा गया। पूरा विश्व इन ऊर्जाओं में जुड़ा हुआ है। यहाँ महादेव से मिलना, गहन मौन में, चेतना से मिलना बहुत ही विशेष है।ष्

तीर्थयात्रा को एक बहुत ही विशेष अनुभव बताते हुए लीच ने कहा कि वह लोगों को इसकी अधिक अनुशंसा नहीं कर सकते।

उन्होंने कहा, ष्यह ट्रेक चुनौतीपूर्ण है, आपको इसके लिए तैयार रहना चाहिए, लेकिन यह इसके लायक है। अगर आपको मौका मिले, अगर आप यहां आने के लिए प्रेरित हों, तो आइए। यह एक शक्तिशाली जगह है।ष्

लीच ने कहा कि कश्मीर के लोगों का आतिथ्य और यात्रा की व्यवस्था अद्भुत रही है।

उन्होंने कहा, ष्मैं यहां आकर बहुत खुश हूं।ष्

यात्रा पर आए एक अन्य विदेशी तीर्थयात्री ने कहा कि यह अनुभव अद्भुत रहा।

उन्होंने कहा, ष्हम जल्द ही वापस आने के लिए उत्सुक हैं। यह अद्भुत था और हमें बहुत अच्छा लगा कि हमारा बहुत ध्यान रखा गया, हमें समर्थन मिला और हम बहुत सुरक्षित महसूस कर रहे थे।ष्

इस वर्ष वार्षिक यात्रा 3 जुलाई को शुरू हुई और अब तक लगभग 3.5 लाख तीर्थयात्री पवित्र गुफा में दर्शन कर चुके हैं। यह यात्रा 9 अगस्त को रक्षा बंधन के अवसर पर समाप्त होगी।

घर में सांप पालने वाला शख्स अब दुनिया के लिए बनेगा वरदान, उसके खून से ही हो जाएगा ज़हर का इलाज

इस शख्स का नाम टिम फ्रीडे है जिसको 1 नहीं 2 नहीं बल्कि सैकड़ों बार सांपों ने काटा है. वो जानबूझकर खुद को सांप से कटवाता था. फ्रीडे अपने घर में कई सांप, मकड़ी पालता था, उसको सांप पालने का शौक था. इसी के साथ आज भी उसके घर के फ्रिज में सांप का जहर भरा हुआ है. अब इसी शख्स के खून से ।छज्टम्छव्ड तैयार किया जा रहा है.

, ṭːlh

इस खबर की हेडिंग पढ़ने के बाद आप भी चौंक गए होंगे. पहला सवाल तो मन में यह आया होगा कि सांप कोई कैसे पाल सकता है और खुद को कैसे कोई जानबूझकर कैसे सांप से कटवा सकता है, लेकिन इस दुनिया में सब कुछ मुमकिन है. आपको आज एक ऐसे शख्स की कहानी बताते हैं जो घर में न सिर्फ सांप पालता है बल्कि खुद को उससे कटवाता भी था, लेकिन अब उसका खून ऐसा वरदान बन गया है.

इस शख्स का नाम टिम फ्रीडे है जिसक. ो 1 नहीं 2 नहीं बल्कि सैकड़ों बार सांपों ने काटा है. हालांकि, ऐसा नहीं हुआ कि अचानक, अनजाने में सांप ने उसको काटा हो बल्कि जानबूझकर वो खुद को सांप से कटवाता था. दरअसल, अब वैज्ञानिक सांप के काटने के बाद बेहतर ट्रीटमेंट तैयार करने की उम्मीद में फ्रीडे के खून पर रिसर्च कर रहे हैं.

घर में पालता था दर्जनों सांप

फ्रीडे को लंबे समय से जहरीले सांप, बिच्छू, मकड़ियों से आकर्षण रहा है. वो शौक के तौर पर बिच्छू और मकड़ियों का जहर दुहते थे और अपने विस्कॉन्सिन स्थित घर में दर्जनों सांप पालते थे.

सांप के काटने से खुद को बचाने की उम्मीद में दृ और जिसे वह "साधारण जिज्ञासा" कहते हैं दृ उसने खुद को सांप के जहर की छोटी डोज का इंजेक्शन लगाना शुरू कर दिया और फिर धीरे-धीरे सांप का जहर झेलने के लिए अपनी सहनशीलता बढ़ाने की कोशिश करने के लिए धीरे-धीरे उन्होंने जहर का डोज बढ़ाया. फिर वो जहर को झेलने के लिए सहनशील हो गया और वो खुद सांपों को उसे डसने देता था.

यह बहुत डरावना था३

फ्राइडे ने कहा, शुरुआत में, यह बहुत डरावना था, लेकिन जितना अधिक आप इसे करते हैं, आप इसमें उतना ही बेहतर होते जाते हैं, आप इसके साथ उतने ही अधिक शांत होते जाते हैं. हालांकि, कोई भी डॉक्टर या इमरजेंसी मेडिकल टेक्नीशियन दृ या कोई भी, कभी भी यह सुझाव नहीं देगा कि यह अच्छा विचार है, जब इम्यून सिस्टम सांप के जहर में मौजूद विषाक्त पदार्थों (ज्वग्पब ेनइेजंदबमे) के संपर्क में आती है, तो यह एंटीबॉडी तैयार करती है जो जहर को बेअसर कर सकती है.

अगर यह जहर की थोड़ी मात्रा है तो शरीर बहुत अधिक मात्रा में होने से पहले ही प्रतिक्रिया कर सकता है और अगर यह जहर है जिसे शरीर ने पहले देखा है, तो यह अधिक तेजी से रिएक्ट कर सकता है और बड़े जोखिम को संभाल सकता है. इसी के चलते धीरे-धीरे सांप के जहर का डोज रोज लेने से उसकी बॉडी इसको झेलने के लिए तैयार हो गई.

रेफ्रिजरेटर में भरा है सांप का जहर

फ्राइडे लगभग दो दशकों तक खुद को सांप से कटवाता रहा और उस ने इंजेक्शनों का सामना किया है और अभी भी उनके पास एक रेफ्रिजरेटर है जिसमें सांप का जहर भरा हुआ है. अपने यूट्यूब चौनल पर पोस्ट किए गए वीडियो में, वह ब्लैक मांबा, ताइपन और वॉटर कोबरा के काटने से अपने हाथों पर सूजे हुए दांतों के निशान दिखाता है. उन्होंने कहा, मैं जितना संभव हो सके मौत के करीब की सीमाओं को पार करना चाहता था.

कैसे बनेगा खून वरदान

लेकिन फ्रिडे भी मदद करना चाहता था. उन्होंने कई वैज्ञानिकों को ईमेल किया और उनसे कहा कि उन्होंने जो सांप के जहर को झेलने की सहनशीलता अपने अंदर पैदा की है उसका अध्ययन करें. विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, हर साल लगभग 110,000 लोग सांप के काटने से मर जाते हैं. इसी की वजह से इस रिसर्च की जरूरत है. एंटीवेनम बनाना महंगा और मुश्किल है. ये एंटीवेनम आमतौर पर सिर्फ विशिष्ट सांप प्रजातियों के खिलाफ ही प्रभावी होते हैं.

जब कोलंबिया यूनिवर्सिटी के पीटर क्वांग ने फ्राइडे के बारे में सुना, तो उन्होंने कहा, ओह, वाह, यह बहुत ही असामान्य है. हमारे पास अद्भुत एंटीबॉडी वाला एक बहुत ही खास व्यक्ति है, जिसे उसने 18 वर्षों में बनाया था. जर्नल सेल में शुक्रवार को प्रका. शित एक अध्ययन में, क्वांग और सहयोगियों ने बताया कि उन्होंने दो एंटीबॉडी की पहचान की जो कई अलग-अलग सांप प्रजातियों के जहर को बेअसर करते हैं, जिसका मकसद किसी दिन एक ऐसा इलाज तैयार करना है जो व्यापक सुरक्षा दे सकता है.

यह बहुत शुरुआती रिसर्च है दृ एंटीवेनम का टेस्ट केवल चूहों में किया गया था और शोधकर्ता अभी भी इंसानों में एंटीवेनम की रिसर्च करने में काफी पीछे हैं.

काटनी पड़ी थी उंगली

लिवरपूल स्कूल ऑफ ट्रॉपिकल मेडिसिन के स्नेकबाइट शोधकर्ता निकोलस केसवेल ने एक ईमेल में कहा, वादे के बावजूद, अभी भी बहुत काम करना बाकी है. केसवेल नए अध्ययन में शामिल नहीं हैं. फ्राइडे ने अपनी इस सांपों की जहर की जर्नी में कई गलत कदम उठाए. उनमें सेरू उन्होंने कहा कि एक बार सांप के काटने के बाद उन्हें अपनी उंगली का हिस्सा काटना पड़ा और कुछ विशेष रूप से भयानक कोबरा के काटने से उसे अस्पताल भेज दिया गया.

फ्राइडे अब सेंटिवैक्स में कार्यरत हैं, जो एक कंपनी है जो उपचार विकसित करने की कोशिश कर रही है और जिसने अध्ययन के लिए भुगतान करने में मदद की है. वह उत्साहित हैं कि उनकी 18 साल की यात्रा एक दिन स्नैकबाइट से लोगों की जान बचा सकती है, लेकिन उनके नक्शेकदम पर चलने के लिए प्रेरित लोगो. ं के लिए उनका मैसेज साफ है- "ऐसा मत करो."

अब घर में ही होगा सांप काटने का इलाज, वैज्ञानिकों ने तैयार कर लिया जहर खत्म करने वाला कैप्सूल

केन्या में हुए शोध से सांप के काटने के इलाज में क्रांति आ सकती है. यूनिथिओल नामक दवा, जो पहले धातु विषाक्तता के लिए प्रयोग होती थी, सांप के जहर को बेअसर करने में सफल रही है. 64 लोगों पर किए गए परीक्षण में यह दवा प्रभावी साबित हुई.

एजेंसी

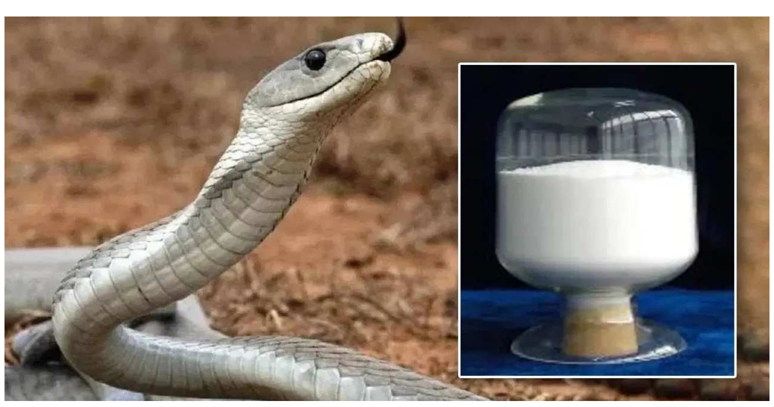

भारत में हर साल जहरीले सांप के काटने से 1 लाख 40 हजार लोगों की मौत होती है. इनमें से ज्यादातर मौतें समय पर इलाज न मिल पाने की वजह से होती है, लेकिन केन्या में एक खोज ने अब इसके इलाज को आसान बना दिया है. शोधकर्ताओं का कहना है कि अब घर पर ही लोग आसानी से सांप के जहर को अपने शरीर से खत्म कर सकते हैं. सांप काटने पर अब तक भारत में एंटीवेनम का इस्तेमाल होता रहा है. इसे इंजेक्शन के रूप में दिया जाता है.

सवाल- यह कैसे संभव है?

ई-बायोमेडिसिन में छपी एक रिपोर्ट में शोधकर्ताओं ने दावा किया है कि यूनिथिओल नामक दवा से सांप के जहर को खत्म किया जा सकता है. अब तक इसका इस्तेमाल अब तक धातु विषाक्तता (डमजंस चवपेवदपदह) के उपचार के लिए होता आया है.

शोधकर्ताओं का कहना है कि सांपों के जहर में मेटालोप्रोटीनेज एंजाइम पाया जाता हैं, जो कोशिकाओं को नुकसान पहुचाता है. इसके लिए इसे जिंक कि जरुरत होती है, जो ये शरीर से लेता है.

यूनिथिओल जिंक को रास्ते से हटा कर जहर फैलने से रोक देता है. शोधकर्ताओं का कहना है कि इस दवा को पानी के साथ भी खाया जा सकता है. साथ ही इसे स्टोर करने के लिए सामान्य तापमान की ही जरूरत है. यानी यह कैप्सूल फॉर्म में आ सकता है.

अब तक सांप के जहर को खत्म करने के लिए जितने भी मेडिसिन बनाए गए हैं, उन सभी को रखने के लिए एक जरूरी तापमान की जरूरत होती है. जो दूर-दराज के गांवों में संभव नहीं है. इसी वजह से गांवों में सांप काटने से अधिक लोगों की मौत हो जाती है.

64 लोगों पर किया गया प्रयोग

शोधकर्ताओं का कहना है कि केन्या में 64 लोगों पर इस दवा का प्रयोग किया गया है. इन 64 लोगों ने सांप काटने के बाद यूनिथिओल का इस्तेमाल किया. 64 लोग तुरंत ठीक हो गए.

चोरी-छिपे चीन ने बनाई ऐसी लैब कि दुनिया रह गई दंग, न्यूक्लियर रिसर्च से है कनेक्शन

एजेंसी

चीन के मियांग शहर में एक नए बड़े पैमाने पर लेजर फ्यूजन रिसर्च सेंटर का निर्माण हो रहा है. इसे लेकर हाल ही में सैटेलाइट तस्वीरें सामने आई हैं. यह सुविधा न केवल क्लीन एनर्जी प्रोडक्शन की रिसर्च में मदद कर सकती है, बल्कि परमाणु हथियारों के डिजाइन में भी अहम योगदान दे सकती है. इस नए सेंटर को लेकर विशेषज्ञों का मानना है कि यह परियोजना चीन के परमाणु कार्यक्रम को नई दिशा दे सकती है. सैटेलाइट तस्वीरों में मियांग में स्थित इस केंद्र का आकार और संरचना एक जैसी दिखाई देती है, जो अमेरिकी नेशनल इग्निशन फैसिलिटी से मेल खाती है, जो कैलिफोर्निया में बना है. छप्थ् दुनिया का सबसे बड़ा लेजर फ्यूजन रिसर्च सेंटर है और 2022 में इसने एक बड़ी सफलता भी हासिल की थी, जब वहां की लेजर प्रतिक्रिया से उतनी ऊर्जा उत्पन्न हुई जितनी कि लेजर द्वारा लक्ष्य पर डाली गई थी, जिसे वैज्ञानिक 'साइंटिफिक ब्रेकइवन' कहते हैं. मियांग के इस नए केंद्र में चार बाहरी 'हाथ' हैं, जो लेजर बे का समर्थन करेंगे, और एक केंद्रीय प्रयोग कक्ष है, जिसमें हाइड्रोजन आइसोटोप से भरा एक लक्ष्य कक्ष होगा. इन शक्तिशाली लेजरों का उद्देश्य इन आइसोटोपों को एक साथ जोड़कर ऊर्जा उत्पन्न करना है. छ। कॉर्प के शोधकर्ता डेक्कर एवलथ के अनुसार, इस केंद्र के प्रयोग कक्ष का आकार छप्थ् के कक्ष से लगभग 50ः बड़ा है. यह इस बात का संकेत है कि चीन इस क्षेत्र में अमेरिका से आगे बढ़ने की को. शिश कर रहा है.

इस तरह की रिसर्च का मुख्य उद्देश्य परमाणु परीक्षणों की आवश्यकता को बिना परीक्षण किए बढ़ाना है. अमेरिका और चीन दोनों ने ही 'कंप्रीहेंसिव न्यूक्लियर टेस्ट बैन ट्रीटी' पर हस्ताक्षर किए हैं, जो किसी भी प्रकार के परमाणु विस्फोटों पर प्रतिबंध लगाता है. इसके बावजूद, देश "सबक्रिटिकल" विस्फोटों की अनुमति देते हैं, जिनमें वास्तविक परमाणु प्रतिक्रिया नहीं होती. लेजर फ्यूजन रिसर्च को 'इनर्शियल कंफाइनमेंट फ्यूजन' कहा जाता है. विशेषज्ञों का मानना है कि इस प्रकार के अनुसंधान केंद्रों से चीन को अपने परमाणु हथियारों के डिजाइन में मदद मिल सकती है. रॉयटर्स की एक खबर के मुताबिक हेनरी एल. स्टिम्सन सेंटर के परमाणु नीति विश्लेषक विलियम अल्बरक्यू के अनुसार, किसी भी देश के पास छप्थ् जैसी सुविधा होने से वह अपने हथियारों के डिजाइनों में विश्वास बढ़ा सकता है।

60 करोड़ साल पहले 24 नहीं 21 घंटे का होता था एक दिन, जानिए कैसे आया बदलाव

एजेंसी

साइंस में हर दिन नए खुलासे होते हैं. हाल ही में एक ऐसा खुलासा हुआ है जिसको जानकर आप भी चौंक जाएंगे. पूरे दिन में कितने घंटे होते हैं. इस सवाल का आप बड़ी ही आसानी से जवाब दे सकते हैं. 24 घंटे, लेकिन अगर मैं यह कहूं कि 60 करोड़ साल पहले एक दिन 24 नहीं बल्कि 21 घंटे का होता था.

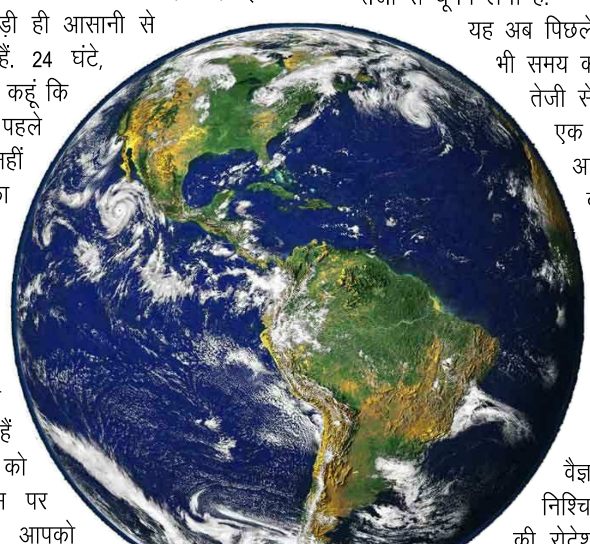

मेरी बात सुनकर आप शायद विश्वास न करें. लेकिन, चलिए आपको साइंस की ऐसी स्टडी बताते हैं जिससे मेरी बात को समझनने और इस पर विश्वास करने में आपको आसानी होगी. एक दिन में 24 घंटे होते हैं यानी 86,400 सेकंड.

60 करोड़ साल पहले 21 घंटे का होता था दिन

एक दिन के 24 घंटे यह वो समय होता है, जितने समय में पृथ्वी को एक बार घूमने में समय लगता है. हालांकि, पृथ्वी बिल्कुल समान रूप से नहीं घूमती है. आमतौर पर, धीरे–धीरे पृथ्वी का रोटेशन धीमा हो रहा है जिससे दिन की लंबाई औसतन प्रति शताब्दी लगभग 1.8 मिलीसेकंड बढ़ जाती है. इसका मतलब यह है कि 60 करोड़ साल पहले एक दिन सिर्फ 21 घंटे का होता था.

कैसे आया बदलाव

दिन की लंबाई में जो समय के साथ यह बदलाव आया है यह कई चीजों की वजह से आया है. जिसमें चांद और सूरज के ज्वारीय प्रभाव , पृथ्वी के अंदर कोर–मेंटल युग्मन और ग्रह पर मास का वितरण शामिल है. इसी के साथ भूकंप यानी भूकंप की गति. विधि, ग्लेशियर, मौसम, महासागर और पृथ्वी का चुंबकीय क्षेत्र भी दिन की लंबाई पर असर डालता है.

2020 में सामने आई स्टडी

साल 2020 में वैज्ञानिकों ने एक चौंकाने वाली खोज की थी. उन्होंने पाया था कि पृथ्वी धीमी होने के बजाय तेजी से घूमने लगी है.

यह अब पिछले 50 वर्षों में किसी भी समय की तुलना में अधिक तेजी से घूम रही है. जहां एक समय में सामने आता था कि पृथ्वी का रोटेशन धीमा हो रहा है. वहीं, स्टडी में अब सामने आ रहा है कि यह बढ़ रहा है.

जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

अभी तक, वैज्ञानिक पूरी तरह से निश्चित नहीं हैं कि पृथ्वी की रोटेशन दर में जो यह तेजी आ रही है इसके पीछे की वजह क्या है. लेकिन कुछ ने सुझाव दिया है कि यह 20 वीं शताब्दी के दौरान ग्लेशियरों के पिघलने या नॉर्थ हेमिस्फीयर के ग्लेशियर में बड़ी मात्रा में पानी के इकट्ठा होने के कारण हो सकता है. हालांकि, विशेषज्ञों का अनुमान है कि यह पृथ्वी की रोटेशन में जो यह तेजी आई है या अस्थायी है, यह कुछ ही समय के लिए है. भविष्य में एक बार फिर पृथ्वी धीमी होने लगेगी.

लेकिन, अब सवाल उठता है कि क्या अभी के लिए, क्या हमें चिंतित होना चाहिए? हालांकि, इसका हमारे रोजाना के जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, लेकिन जीपीएस उपग्रह, स्मार्टफोन, कंप्यूटर और संचार नेटवर्क जैसी टेक्नॉलोजी पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है, जो सभी बेहद सटीक समय सिस्टम पर निर्भर हैं. लेकिन ऐसी समस्याओं पर काबू पाया जा सकता है. तो नहीं, हमें चिंतित नहीं होना चाहिए दृ जब तक कि दिन का छोटा होना मानव गतिविधि के कारण न हो.

सूरज की रहस्यमयी दुनियारू गर्म कोरोना में मिले छोटे लूप, वैज्ञानिकों को मिले चौंकाने वाले सुराग

सूरज के कोरोना (सूरज की सबसे ऊपरी परत) में छोटे प्लाज्मा लूपों की वैज्ञानिकों ने खोज की है. ये लूप 3000–4000 किलोमीटर लंबे लेकिन 100 किमी से कम चौड़े हैं. ये लूप सूरज के चुंबकीय ऊर्जा को स्टोर और रिलीज करने के रहस्य को उजागर कर सकते हैं. इन लूपों का तापमान कई मिलियन डिग्री सेल्सियस तक पहुंचता है. ये सिर्फ कुछ मिनटों तक ही जीवित रहते हैं.

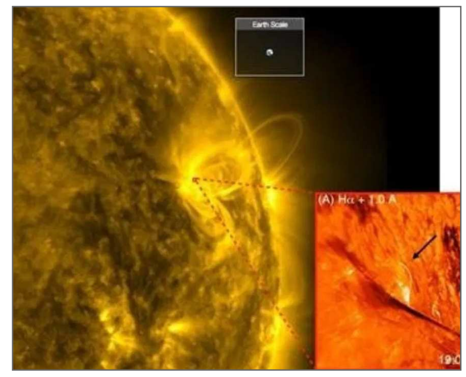

एजेंसी

इस समय गर्मी का पारा काफी हाई हो गया है. सूरज आग उगल रहा है. लेकिन सूरज की इस दुनिया की एक नई रहस्यमय चीज की खोज की गई है. सूरज की दुनिया काफी दिलचस्प है और इसी को लेकर कई तरह की रिसर्च की जा रही है.

दरअसल, सामने आया है कि सौर कोरोना में छोटे लूप छिपे हुए हैं. पहले यह छोटे लूप क्या है, यह समझने से पहले यह समझना जरूरी है कि सौर कोरा. `ना क्या होता है. सौर कोरोना सूरज की सबसे ऊपरी परत है, जो सूरज की सतह से बाहर फैली होती है. यह परत बहुत ही पतली, लेकिन बेहद गर्म होती है. इसका पारा 10 लाख डिग्री सेल्सियस तक होता है.

छोटे लूपों की दुनिया

एक नई खोज में सामने आया है कि सूरज के वायुमंडल की निचली परतों में छोटे प्लाज्मा लूपों की एक चमकदार दुनिया है. वे इतने छोटे हैं कि अब तक छुपे हुए हैं. हालांकि, उनके पास सूरज के सबसे गहरे रहस्यों में से एक का सुराग है दृ जो बताता है कि सूरज कैसे चुंबकीय ऊर्जा को स्टोर और रिलीज करता है.

हालांकि, सूरज हमारी आंखों को स्थिर दिखाई देता है, सूरज की चमकती सतह के पीछे कम घना, लेकिन काफी गतिशील वातावरण है, जो प्लाज्मा से बना है.

10 लाख डिग्री का तापमान

सूरज की बाहरी परत की सबसे दिलचस्प विशेषताओं में कोरोनल लूप, गर्म प्लाज्मा की चाप जैसी संरचनाएं हैं जो 10 लाख डिग्री से अधिक तापमान पर चमकती हैं. जबकि सोलर कोरोना या बाहरी वायुमंडल में इन बड़े लूपों पर रिसर्च लंबे समय से की जा रही है, वैज्ञानिक अब इन लूपों के छोटे हिस्सों पर भी ध्यान दे रहे हैं.

मिनी लूप कितने बड़े?

ये मिनी लूप लगभग 3,000–4,000 किमी लंबे हैं (लगभग कश्मीर से कन्याकुमारी तक की दूरी) के बराबर. हालांकि, इनकी चौड़ाई 100 किलोमीटर से भी कम है. इससे उन पर रिसर्च करना और भी ज्यादा चुनौती बन जाता है. दरअसल, यह सूर्य के वायुमंडल की निचली परतों में छिपे हुए हैं इसी के चलते इन पर रिसर्च करना मुश्किल हो जाता है.

भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान (आईआईए) , के एस्ट्रोनॉमर्स और उनके सहयोगियों ने इस दिलचस्प दुनिया पर रिसर्च करने के लिए हाई–रिज़ॉल्यूशन इमेि. जंग और स्पेक्ट्रोस्कोपी का इस्तेमाल किया. आईआईए में पीएचडी छात्र अन्नू बूरा ने कहा, ये छोटे लूप बहुत जल्दी मर जाते हैं, यह सिर्फ कुछ मिनटों तक ही जीवित रहते हैं. हालांकि, वे छोटे हैं, जब सूरज को समझने की बात आती है तो ये लूप अपने वजन से अधिक होते हैं.

टीम ने इन छोटे पैमाने के कोरोनल लूपों की जांच करने के लिए अत्याधुनिक दूरबीनों का इस्तेमाल किया. उन्होंने इन लूपों का पता लगाने के लिए बीबीएसओ में गुड सोलर टेलीस्कोप, नासा के इंटरफेस रीजन इमेजिंग स्पेक्ट्रोग्राफ (आईआरआईएस) और सोलर डायनेमिक्स ऑब्जर्वेटरी (एसडीओ) से डेटा इकट्ठा किया.

हाइड्रोजन परमाणुओं से एच–अल्फा वर्णक्रमीय रेखा सौर क्रोमोस्फीयर की जांच के लिए एक अहम लाइन है, जो सूरज की दृश्य सतह के ठीक ऊपर मौजूद है. टीम ने पाया कि लाल, या लॉन्ग वेवलेंथ, लाइन के हिस्से में, ये लूप कोरोनल लूप के जैसे ही चमकती, नाजुक चाप के रूप में दिखाई देती हैं.

लूपों के अंदर बढ़ रहा तापमान

इन लूपों के अंदर प्लाज्मा के तापमान को समझने की कोशिश की गई. परिणामों से पता चला कि प्लाज्मा का तापमान कई मिलियन डिग्री से ऊपर बढ़ रहा था. जिसे एसडीओ के वायुमंडलीय इमेजिंग असेंबली में देखा जा सकता था.

पुरूषों के स्पर्म की अमेरिका में हो रही रेस, 40 मिनट में पता लगेगा कौन कितना दमदार

अमेरिका के लॉस एंजिल्स के हॉलीवुड पैलेडियम में दुनिया की पहली स्पर्म रेस का आयोजन हो रहा है. यह अनोखा आयोजन पुरूषों में गिरती प्रजनन क्षमता के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से है. 20 सेंटीमीटर के ट्रैक पर दो स्पर्म कोशिकाएँ दौड़ेंगी, जिसे लाइव प्रसारित किया जाएगा.

एजेंसी

2025 में पहली बार दुनिया की पहली स्पर्म रेस का आयोजन अमेरिका के लॉस एंजेलिस में 25 अप्रैल को होने जा रहा है. यह रेस हॉलीवुड पैलेडियम में होगी, जहां दो असली शुक्राणु (स्पर्म) एक 20 सेंटीमीटर लंबे माइक्रोस्कोपिक ट्रैक पर दौड़ेंगे, जिसे महिला प्रजनन प्रणाली की तरह डिजाइन किया गया है.

इस रेस का मकसद मनोरंजन से कहीं अधिक है. यह पुरुषों की गिरती फर्टिलिटी (प्रजनन क्षमता) के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए आयोजित की जा रही है. पिछले पचास वर्षों में पुरुषों में स्पर्म की संख्या में 50: से अधिक गिरावट आई है, और इस इवेंट के जरिए इस गंभीर समस्या पर ध्यान आकर्षित किया जाएगा.

रेस को कैमरे से किया जाएगा रिकॉर्ड

रेस को लाइव माइक्रोस्कोप और एचडी कैमरों की मदद से रिकॉर्ड किया जाएगा और लगभग 4000 दर्शक इसे लाइव देख सकेंगे. इसके साथ लाइव कमेंट्री, डेटा एनालिसिस और रिप्ले भी होंगे, जिससे यह एक स्पोर्ट्स इवेंट जैसा माहौल बनेगा. इसके अलावा, दर्शक अपने पसंदीदा स्पर्म सैंपल पर सट्टा भी लगा पाएंगे.

इस अनोखे आयोजन का मुख्य उद्देश्य है पुरुषों की सेहत और फर्टिलिटी के मुद्दे पर खुलकर बात करना, जो आमतौर पर छुपा रहता है. आयोजक कंपनी "चमतउ त्बपदह" के सह–संस्थापक एरिक झू ने कहा है कि लोग किसी खेल के लिए खुद को ट्रेन करते हैं, तो अपनी सेहत के लिए क्यों नहीं.

स्पर्म रेस 2025 एक वैज्ञानिक और सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम है, जो पुरुष प्रजनन क्षमता के मुद्दे को मनोरंजक और प्रभावशाली तरीके से सामने लाएगा.

20 सेमी के ट्रैक पर छोड़ी जाएगी

कंपनी के मुताबिक रेस के लिए 20 सेमी का एक ट्रैक तैयार किया गया है. इसी ट्रैगक पर 0.5 एमएम लंबी स्पर्म को रेस के लिए छोड़ा जाएगा. जानकारों का कहना है कि स्पर्म आमतौर पर लगभग 5 मिलीमीटर प्रति मिनट की गति से चलते हैं. ऐसे में कहा जा रहा है कि ये रेस करीब 40 मिनट में समाप्त हो सकती है.

हिमाचल में यहां मिला 60 करोड़ साल पुराना 'खजाना', वैज्ञानिक बोले- अब खुलेगा पहाड़ों में समंदर का गहरा राज

एजेंसी

हिमाचल प्रदेश के सोलन में दुनिया के सबसे प्राचीन पृथ्वी के स्ट्रोमैटोलाइट्स जीवाश्म मिलने का दावा किया गया है. ये जीवाश्म गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हैं. इन्हें टेथिस जीवाश्म संग्रहालय के संस्थापक डॉ. रितेश आर्य ने खोजा है. उन्होंने दावा किया है कि ये जीवाश्म 60 करोड़ साल से भी अधिक पुराने हैं, जो पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत की कहानी बताते हैं.

ये जीवाश्म चंबाघाट के पास जोलाजोरां गांव में मिले हैं. डॉ. आर्य ने कहा कि स्ट्रोमैटोलाइट्स समुद्र की उथली सतहों पर माइक्रोबियल चादरों से बने परतदार पत्थर होते हैं. ये दर्शाते हैं कि सोलन क्षेत्र कभी टेथिस सागर का समुद्री तल हुआ करता था. यह सागर कभी गोंडवाना (जिसमें भारत, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अमेरिका और अंटार्कटिका शामिल थे) और एशिया के बीच था. डॉ. आर्य ने कहा कि जब पृथ्वी की हवा में ऑक्सीजन नहीं थी और ग्रीनहाउस गैसें छाई थीं, तब इन्हीं सूक्ष्म जीवों ने करीब 2 अरब साल में धीरे–धीरे ऑक्सीजन बनाना शुरू किया, इससे आगे जाकर जीवन संभव हुआ.

अगर स्ट्रोमैटोलाइट्स नहीं होते तो आज ऑक्सीजन भी नहीं होती. डॉ. आर्य इससे पहले सोलन के धर्मपुर के कोटी में, चित्रकूट और हरियाणा के मोरनी हिल्स से भी इन्हें खोज चुके हैं. उनका कहना है कि चंबाघाट के जीवाश्म अलग प्रकार की परतदार संरचना दर्शाते हैं, जो एक भिन्न प्राचीन पर्यावरणीय दशा की जानक. ारी देते हैं. उन्होंने कहा कि हिमाचल की धरती में करोड़ों साल पुराना समुद्री इतिहास छिपा है. इसे संरक्षित कर हमें अगली पीढ़ियों को सौंपना होगा.

वैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण और संरक्षण योग्य

ओएनजीसी में महाप्रबंधक रहे डॉ. जगमोहन सिंह ने कहा कि चंबाघाट के ये स्ट्रोमैटोलाइट्स उस युग में ले जाते हैं जब पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत हो रही थी. पंजाब विवि के पूर्व भूविज्ञान विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ भूवैज्ञानिक प्रो. (डॉ.) अरुण दीप आहलूवालिया ने कहा कि ये जीवाश्म न केवल वैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि संरक्षण के योग्य भी हैं.

तेजी से घूम रही धरती, लेकिन छोटे होते जा रहे जा रहे दिन, रिपोर्ट में दावा

धरती का रोटेशन धीरे-धीरे धीमा होता चला गया. आज से करीब 1 से 2 अरब साल पहले, एक दिन महज 19 घंटे का हुआ करता था, खासकर इसलिए क्योंकि चंद्रमा धरती के बहुत करीब था और उसके गुरुत्वाकर्षण का असर बहुत ज्यादा था. साथ ही 2020 में, वैज्ञानिकों ने रोटेशन को 1970 के दशक के बाद से किसी भी समय की तुलना में तेजी से दर्ज किया.

, t।l h

धरती तेजी से घूम रही है और इस वजह से दिन छोटे होते जा रहे हैं. एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि आने वाले हफ्तों में धरती सामान्य से तेज गति से घूमेगी, जिससे दिन थोड़े छोटे हो जाएंगे. लाइव साइंस ने वैज्ञानिकों की रिपोर्ट के अनुसार यह जानकारी दी है कि 9 जुलाई, 22 जुलाई और 5 अगस्त को चंद्रमा की स्थिति धरती के रोटेशन को प्रभावित करेगी, जिससे हर दिन 24 घंटों से 1.3 से 1.51 मिलीसेकंड छोटा हो जाएगा.

आमतौर पर, धरती पर एक दिन करीब 86,400 सेकंड या 24 घंटे का होता है, लेकिन साइंस न्यूज पोर्टल लाइव साइंस के अनुसार, धरती का रोटेशन अभी स्थिर नहीं है; यह कई वजहों से प्रभावित भी है, जिनमें चंद्रमा और सूर्य का गुरुत्वाकर्षण बल, ग्रह का चुंबकीय क्षेत्र और प्राकृतिक या मानवीय गतिविधियों के कारण पृथ्वी के द्रव्यमान में बदलाव शामिल हैं. हालांकि अगले कुछ हफ्तों में, चंद्रमा की स्थिति में बदलाव की वजह से धरती पर दिन थोड़े छोटे हो जाएंगे.

करोड़ों साल पहले एक दिन में कितने घंटे

ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो धरती का रोटेशन धीरे–धीरे धीमा होता चला गया है. आज से करीब 1 से 2 अरब साल पहले, एक दिन महज 19 घंटे का हुआ करता था, खासकर इसलिए क्योंकि चंद्रमा धरती के बहुत करीब था और उसके गुरुत्वाकर्षण का असर बहुत ज्यादा था. अध्ययनों से यह भी पता चला है कि करीब 7 करोड़ साल पहले रहने वाले टायरानोसॉरस रेक्स के दौर में औसत रोजाना का रोटेशन करीब 23 1/2 घंटे का रहा होगा. फिर समय के साथ, चंद्रमा जैसे–जैसे धरती से दूर होता गया, दिन लंबे होते चले गए.

इस हफ्ते अब तक साल के सबसे छोटे दिन देखे गए हैं. यूएस नेवल ऑब्जरवेटरी और इंटरनेशनल अर्थ रोटेशन एंड रिफ्रेंस सिस्टम सर्विस द्वारा शुक्रवार को जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार, बुधवार के दिन धरती का रोटेशन 24 घंटे से करीब 1. 34 मिलीसेकंड कम था. टाइम एंड डेट वेबसाइट के पूर्वानुमानों के अनुसार, इस महीने के अंत में और अगस्त की शुरुआत में और तेज चक्कर लगने की उम्मीद है.

पिछले साल जुलाई में दर्ज हुआ था सबसे छोटा दिन

खास बात यह है कि 2020 में, वैज्ञानिकों ने धरती के रोटेशन को 1970 के दशक के बाद से किसी भी समय की तुलना में तेजी से दर्ज किया. अब तक का सबसे छोटा दिन 5 जुलाई, 2024 को दर्ज किया गया था, जो सामान्य से 1.66 मिलीसेकंड छोटा था.

हालांकि यह पूरी तरह से असामान्य प्रक्रिया नहीं है. हाल के दिनों में यह रोटेशन सामान्य से तेज रहे हैं. पिछले एक दशक में औसत दिन का आकार थोड़ा छोटा हो गया है. पिछले 5 सालों में, कई बार 24 घंटे से भी कम समय में रोटेशन पूरा हो गया है.

हालांकि दिन होने की प्रक्रिया लंबी नहीं होगी

अगले कुछ दिनों में धरती की इक्वेटर से चंद्रमा की दूरी ग्रह के घूमने की गति को बढ़ा सकती है, उसी तरह जैसे एक घूमता हुआ लट्टू अपनी धुरी बदलने पर तेजी से घूमता है. जलवायु संबंधी बदलाव, जैसे बर्फ का पिघलना और भूजल का प्रवाह, भी पृथ्वी के रोटेशन में बदलाव की वजह बने हैं. यहां तक कि भूकंप और मौसमी परिवर्तन भी दिनों की लंबाई पर असर डाल सकते हैं. हालांकि यह भी देखने वाली बात है कि दीर्घकालिक रुझान यह इशारा नहीं करते कि दिन हमेशा के लिए छोटे होते जाएंगे. हकीकत में यह इसके विपरीत है क्योंकि करोड़ों सालों में दिन लंबे ही होते चले गए हैं. ऑस्टिन स्थित टेक्सास यूनिवर्सिटी के अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र के रिसर्च प्रोफेसर क्लार्क आर. विल्सन ने दावा करते हुए कहा कि दिनों की लंबाई बढ़ने का यह रुझान जारी रहने की उम्मीद है, हालांकि यह प्रक्रिया बहुत ही धीमी है कि यह दर "मानव समय के पैमाने से कहीं अधिक" है.

1000 साल पुराने 'समाधि वाले बाबा' के कंकाल को मिला घर, क्यों है ये इतना खास?

गुजरात के मेहसाणा जिले के वडनगर में 2019 में खुदाई करके 1,000 साल से अधिक का पुराना कंकाल निकाला गया था. इस कंकाल को अब अपना नया घर मिल गया है. इसे वडनगर पुरातत्व अनुभव संग्रहालय में स्थानांतरित कर दिया गया है.

एजेंसी

गुजरात में 15 मई को पांच घंटे की कवायद और 15 विशेषज्ञों की निगरानी के बाद 1000 साल पुराने कंकाल को वडनगर पुरातत्व अनुभव संग्रहालय में स्थानांतरित कर दिया गया. इस संग्रहालय का उद्घाटन इस साल जनवरी में किया गया था. 1000 साल पुराने कंकाल को 'समाधि वाले बाबाजी' कहा जाता है. इस कंकाल को मेहसाणा जिले से साल 2019 में खुदाई करके निकाला गया था. तब से इसे अस्थायी तंबू के अंदर रखा गया था. अब कंकाल को नया घर मिल गया है. वडनगर पुरातत्व अनुभव संग्रहालय के क्यूरेटर महिंदर सिंह सुरेला ने बताया– कंकाल को गुरुवार शाम 6 बजे के आसपास संग्रहालय में स्थानांतरित कर दिया गया है. इसे एहतियाती बैरिकेड के साथ रिसेप्शन क्षेत्र के पास ग्राउंड फ्लोर पर रखा गया है. वर्तमान में, यह प्रदर्शन के लिए नहीं है. जैसे ही निर्देश प्राप्त होंगे, संरक्षण के दृष्टिकोण से कंकाल की जांच के बाद, इसे संग्रहालय की गैलरी में स्थानांतरित करने की योजना बनाई जाएगी.

साल 2023 से ही कंकाल को वडनगर के पुराने शहर के बाहरी इलाके में सरकारी आवास के खुले मैदान में 12:15 फीट के तिरपाल और कपड़े के तंबू के अंदर रखा गया था. इससे पहले इसे आवास की सीढ़ियों के नीचे गलियारे में रखा गया था.

अधिकारियों ने बताया– कंकाल को टेंट से बाहर निकालने के लिए क्रेन का इस्तेमाल किया गया. खुदाई स्थलों पर काम करने वाले 15 से ज्यादा एएसआई और राज्य सरकार के अधिकारियों की देखरेख में इसे एक ट्रेलर में ले जाया गया. इस प्रक्रिया में पांच घंटे से ज्यादा का समय लगा. 2019 में रेलवे लाइन के पार अनाज गोदाम से सटी बंजर जमीन से कंकाल की खुदाई की गई थी.

समाधि की स्थिति में कंकाल दफनाया

इससे पहले गुजरात के पुरातत्व एवं संग्रहालय निदेशक पंकज शर्मा ने इंडियन एक्सप्रेस को बताया था– लोथल के संग्रहालय में भी कंकाल रखने पर विचार किया जा रहा है. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के वडोदरा सर्कल के पूर्व अधीक्षण पुरातत्वविद् अभिजीत आंबेकर, जो वडनगर उत्खनन से करीब से जुड़े थे, उन्होंने कहा था कि पिछले कई वर्षों में खोजी गई 9,000 से अधिक पुरावशेषों के साथ यह कंकाल गुजरात सरकार को सौंप दिया गया है. विशेषज्ञों का मानना घ्है कि यह कंकाल किसी ऐसे व्यक्ति का है जिसे बैठी हुई या 'समाधि' की स्थिति में दफनाया गया था, जो उस समय 'गुजरात में सभी धर्मों में' प्रचलित प्रथा थी.

पेपर में किया गया था इस कंकाल का जिक्र

हेरिटेजरू जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी स्टडीज इन आर्कियोलॉजी में प्रकाशित वडनगररू ए थ्राइविंग कम्पोजिट टाउन ऑफ हिस्टोरिकल टाइम्स शीर्षक वाले एक पेपर में आंबेकर और अन्य ने इस खोज का वर्णन कुछ इस प्रकार किया था– एक गड्ढे में क्रॉस–लेग्ड मुद्रा में बैठा हुआ एक अक्षुण्ण. अच्छी तरह से संरक्षित कंकाल. उत्तर की ओर मुख किए हुए सिर सीधा है, दाहिना हाथ गोद में रखा हुआ है.

धरती ही नहीं, इस प्लैनेट पर भी है जीवन, भारतीय वैज्ञानिक का बड़ा दावा

एजेंसी

सदियों से इंसान इस सवाल से जूझता आया है. क्या हम इस ब्रह्मांड में अकेले हैं? अब इस रहस्य पर से पर्दा उठता नजर आ रहा है. वैज्ञानिकों को पृथ्वी से सात सौ ट्रिलियन मील दूर स्थित एक ग्रह के2 –18बी नाम के प्लैनट से ऐसे संकेत मिले हैं, जो जीवन की संभावनाओं की ओर इशारा करते हैं. यह ग्रह पृथ्वी से ढाई गुना बड़ा है और इसके वातावरण की जांच कैम्ब्रिज विश्व. विद्यालय के वैज्ञानिकों की टीम कर रही है.

के2 –18बी के वायुमंडल में वैज्ञानिकों को डाइमिथाइल सल्फाइड और डाइमिथाइल डाइसल्फाइड जैसे केमिकल एलिमेंट्स मिले हैं, जो आमतौर पर पृथ्वी पर केवल जीवित जीवा. ', जैसे फाइटोप्लांकटन और बैक्टीरिया, द्वारा उत्पन्न किए जाते हैं. हालांकि अभी इन संकेतों को अंतिम प्रमाण नहीं माना जा सकता, लेकिन प्रमुख रिसर्चर प्रोफेसर निक्कू मधुसूदन का मानना है कि अगले एक या दो सालों में यह साबित किया जा सकेगा कि के2 –18बी पर जीवन की मौजूदगी संभव है.

इस ग्रह के वायुमंडल में अमो. निया की अनुपस्थिति ने भी वैज्ञानिकों का ध्यान खींचा है. वैज्ञानिक मानते हैं कि के2 –18बी पर एक विशाल महासागर हो सकता है, जो अमोनिया को सोख रहा है. अमोनिया का पाया जाना आमतौर पर जीवन के लिए अहम संकेत होता है, इसलिए इसकी कमी से यह संभावना और मजबूत होती है कि ग्रह पर समुद्र जैसी जीवनदायी संरचना हो सकती है. हालांकि, यह भी संभव है कि सतह के नीचे लावा का महासागर हो, जो जीवन के लिए प्रतिकूल होगा.

अभी और सटीक जानकारी जुटाने की कोशिश

वैज्ञानिकों को के2 –18बी के वायुमंडल से अब तक 'तीन–सिग्मा' स्तर की पुष्टि मिली है. 'सिग्मा' वैज्ञानिक सटीकता को मापने का मानक है. आमतौर पर किसी खोज को पुख्ता कहने के लिए 'पांच–सिग्मा' की आवश्यकता होती है. हालांकि तीन–सिग्मा स्तर पर मिले संकेत इस दिशा में एक बड़ा कदम हैं, लेकिन वैज्ञानिक समुदाय को पूर्ण रूप से आश्वस्त करने के लिए अभी और सटीकता की दरकार है.

प्रोफेसर निक्कू मधुसूदन का कहना है कि अगर के2 –18बी पर जीवन पाया जाता है, तो यह केवल एक ग्रह की कहानी नहीं होगी, बल्कि इससे पूरे ब्रह्मांड में जीवन की व्यापक संभावनाएं उजागर हो जाएंगी.

संपादकीय

सत्ता और सिद्धांत

भारत के अक्सर नाटकीय राजनीतिक परिदृश्य में, शोर नहीं, बल्कि मौन कभी–कभी बहुत कुछ कह जाता है। उपराष्ट्रपति पद से श्री जगदीप धनखड़ के इस्तीफे ने ठीक इसी तरह की बेचौन करने वाली खामोशी पैदा कर दी है॰ जो हर गोलमोल बयान और स्पष्ट चूक के साथ और भी ज़्यादा गगनभेदी होती जा रही है।

स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए दिया गया आधिकारिक स्पष्टीकरण, उनके इस्तीफे से जुड़ी घटनाओं के क्रम के सामने मुश्किल से ही टिक पाता है। अपने इस्तीफे से कुछ घंटे पहले तक, श्री धनखड़ उच्च–स्तरीय संसदीय कार्यों में सक्रिय रूप से शामिल थे। राज्यसभा के सभापति के रूप में, उन्होंने कार्य मंत्रणा समिति की दो बैठकें बुलाईं और अगले दिन दोपहर के भोजन के समय एक और बैठक निर्धारित की। यह किसी ऐसे व्यक्ति का व्यवहार नहीं है जो स्वास्थ्य कारणों से पद छोड़ने की तैयारी कर रहा हो। दूसरी बीएसी बैठक का अचानक रद्द होना॰ कथित तौर पर इसलिए क्योंकि वरिष्ठ मंत्री बिना किसी शिष्टाचार के, उन्हें सूचित किए, उपस्थित नहीं हुए॰ इस टकराव की वास्तविक प्रकृति पर सवाल खड़े करता है। इसके बाद जो हुआ वह भी उतना ही असामान्य थारू इस्तीफे के लगभग 13 घंटे बाद प्रधानमंत्री का एक अवैयक्तिक विदाई ट्वीट। इसमें केवल ष्अच्छे स्वास्थ्यष की एक संक्षिप्त कामना की गई थी। हालाँकि यह संदेश पूरी तरह से खारिज करने वाला नहीं था, लेकिन इसमें उच्च संवैधानिक पदाधिकारियों के प्रति आमतौर पर दिखाई जाने वाली गर्मजोशी का अभाव था। इसने एक दरार का संकेत दिया॰ सूक्ष्म लेकिन स्पष्ट। दो विवादास्पद न्यायाधीशों के खिलाफ महाभियोग प्रस्तावों पर उच्च सदन में श्री धनखड़ की हालिया टिप्पणियों ने मामले को और जटिल बना दिया होगा। उन्होंने विपक्ष के नोटिस की प्रक्रियात्मक वैधता को बरकरार रखा, यहाँ तक कि कानून मंत्री से अपडेट भी माँगा। क्या संवैधानिक प्रक्रिया के इस दावे को कार्यपालिका की कहानी को नियंत्रित करने की इच्छा के लिए एक चुनौती के रूप में देखा गया? हाल ही में एक सार्वजनिक कार्यक्रम में श्री धनखड़ की तीखी टिप्पणियों ने इस टकराव को और बढ़ा दिया होगा, जहाँ उन्होंने मंच पर मौजूद कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान की भारत के किसानों के लिए पर्याप्त काम न करने के लिए आलोचना की थी। श्री धनखड़, जिनके पिता एक किसान थे, ने स्पष्ट भावुकता के साथ बात की॰ शायद सत्तारूढ़ दल के कुछ लोगों के लिए यह बहुत ही स्पष्ट था। इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता कि श्री धनखड़ की संस्थागत ईमानदारी और मुखर शैली प्रचलित राजनीतिक अपेक्षाओं के साथ टकराई। अपने ही दायरे में रहते हुए भी बेबाकी से बोलने की उनकी तत्परता उन्हें ऐसे दौर में अलग करती है जब अक्सर असहमति की जगह विवेक की अहमियत होती है। विपक्षी नेताओं की प्रतिक्रिया इस विडंबना को और बढ़ा देती है। उनमें से कई, जिनमें वे भी शामिल हैं जिन्होंने पहले श्री धनखड़ के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव पेश किया था, अब प्रोटोकॉल और संस्थागत संतुलन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की प्रशंसा कर रहे हैं। इस तरह के संकेत विपक्ष की ओर से आ रहे हैं, जो उनके जाने से सत्ता प्रतिष्ठान में पैदा हुई असहजता को ही उजागर करता है। विपक्ष॰ जो लंबे समय से उपराष्ट्रपति और उससे पहले पश्चिम बंगाल के राज्यपाल के रूप में उनके पक्षपातपूर्ण आचरण की आलोचना करता रहा था॰ अब उनकी प्रशंसा कर रहा है, जो पहले से ही पेचीदा विदाई में एक अप्रत्याशित मोड़ ला देता है। श्री धनखड़ का जाना महज इस्तीफा नहीं॰ बल्कि एक टूटन है। यह भारत की सत्ता संरचनाओं में संस्थागत स्वतंत्रता के लिए कम होती जगह को उजागर करता है। और बिना किसी धूमधाम के जाने से, श्री धनखड़ ने मौन रहकर शायद शब्दों से कहीं ज़्यादा कह दिया है।

रामजी लाल सुमन के बिगड़ैल बयानों से योगी और अखिलेश दोनों की सियासी मुश्किलें बढ़ेंगी!

कमलेश पांडे

समाजवादी पार्टी के राज्यसभा सांसद और दलित नेता रामजी लाल सुमन ने मेवाड़ के प्रतापी राजपूत शासक राणा सांगा को गद्दार बताते हुए जो विवादस्पद बयान दिया है, और क्षत्रियों की अखिल भारतीय 'करणी सेना' ने जिस तरह से उसे जातीय नायकों के अपमान का विषय ठहराते हुए सुमन के घर पर धावा बोल दिया था, उस पर जारी प्रशासनिक और सियासी खानापूर्ति से यदि भारत गृहयुद्ध की आग में झुलस जाए तो किसी को हैरत नहीं होना चाहिए। क्योंकि यह सबकुछ पहले अमेरिकी–पाकिस्तानी एजेंडे और अब चीनी–बंगलादेशी एजेंडे के अनुरूप हो रहा है, जिसे भारत के कथित सेक्यूलर दलों के पृष्ठ पोषक अरब देशों का समर्थन प्राप्त है।

समझा जाता है कि जब–जब भारत अपनी सही रणनीति के बल पर विकास की गति को प्राप्त करता है, तब–तब हमारे विघ्न संतोषी कुछ राजनेता विदेशी ताकतों की शह पर यहाँ जातीय और सांप्रदायिक उन्माद पैदा करने की कोशिश करते रहे हैं। यह बात मैं नहीं कह रहा हूँ बल्कि यहाँ की सियासी बयानबाजियां और उससे जुड़े साक्ष्य इस बात की चुगली करते हैं। ऐसे में सुलगता हुआ सवाल है कि आखिर वोट बैंक की कुत्सित राजनीति में निर्लज्ज अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का दुरूपयोग करके कबतक शांतिप्रिय भारतीय समाज को झुलसाया जाता रहेगाद्य क्योंकि कभी बादशाहों के इशारे पर, कभी ब्रिटिश नौकरशाहों के तिकड़म पर और आज भारत के अपने ही राजनेताओं की शर्मनाक शतरंजी चालों पर एक समाज को दूसरे समाज से भिड़ाया जाता है और अपना–अपना राजनीतिक उल्लू सीधा किया जाता है।

बता दें कि भारत में वामपंथियों की राजनीति वर्गवादी झड़प के हालात पैदा करके, समाजवादियों की राजनीति जातिवादी संघर्ष के हालात पैदा करके और कांग्रेसियों–राष्ट्रवादियों की राजनीति सांप्रदायिक दंगे के हालत पैदा करके खूब फली–फूली! लेकिन विकास के पैमाने पर भारत अपने पड़ोसी देश चीन से 1987 में आगे बढ़कर भी बाद के वर्षों में निरंतर पिछड़ता चला गया। यही वजह है कि समाजवादी पार्टी के राज्यसभा सांसद रामजीलाल सुमन जैसे राजनेता एक बार फिर से विवादित बयान देकर लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं। ऐसे विषैले नेताओं के खिलाफ स्पष्ट कार्रवाई नहीं होने से प्रशासनिक सुचिता और न्यायिक दूरदर्शिता भी अब सवालों के घेरे में है! आप मानें या न मानें, लेकिन मौजूदा विवाद की राजनीतिक कीमत सपा नेता अखिलेश यादव के मुकाबले भाजपा नेता और उत्तरप्रदेश के मौजूदा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को कुछ अधिक अदा करनी पड़ेगी, क्योंकि वह अभी सत्ता में हैं। जिस तरह से आगरा में उनकी मौजूदगी को लेकर अखिलेश यादव ने निशाना साधा है, वह राजपूतों के खिलाफ अन्य समाज को भड़काने की गहरी साजिश है, जिसके दृष्टिगत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को सतर्क हो जाना चाहिए और करनी सेना की गैरकानूनी हरकतों पर यूपी में अविलंब रोक लगानी चाहिए। वहीं भाजपा को भी इस मसले को जरूरत से ज्यादा तूल देने से बचना चाहिए। क्योंकि यह सारी सुनियोजित बयानबाजी मुस्लिम शासकों के कुकृत्यों से दलित और ओबीसी हिन्दुओं का ध्यान भटकाने के लिए की जा रही है, जिसे उसे समझना होगा और इसकी मजबूत रणनीतिक काट निकालनी होगी। यदि भाजपा और योगी इस मामले को ज्यादा तूल देते हैं तो लोकसभा चुनाव 2024 की तरह अखिलेश के पीडीए यानी पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक गठजोड़ को मजबूती मिलेगी, वहीं भाजपा के डीपीए यानी दलित, पिछड़ा, अगड़ा गठजोड़ को भी सियासी धक्का लगेगा।

वहीं अखिलेश यादव को यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि जब यूपी में दलित नेत्री मायावती उनकी पार्टी के लिए मजबूत चुनौती बनी हुईं थीं और मुस्लिम वोटर भी बसपा–सपा में लगभग आधा–आधा बंट गए थे तब भी राजपूत समाज उनका मजबूत वोट बैंक रहा था। उन्हें पता होना चाहिए कि यह पूरी राजपूत जाति पहले कांग्रेसियों और फिर समाजवादियों की मजबूत वोट बैंक रही है। यह बात दीगर है कि अब केन्द्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सबल नेतृत्व के चलते राजपूत मतदाता भी राष्ट्रवादी मिजाज के हो चले हैं। इसलिए पूरी राजपूत जाति को सपा का विरोधी बना देना उनके लिए राजनीतिक नादानी साबित हो सकती है। इससे न केवल बसपा और कांग्रेस को सिर उठाने का मौका मिलेगा, बल्कि सवर्णों में भी उनका इमेज उनके पिता स्व. मुलायम सिंह यादव से ज्यादा खराब हो जाएगा।

ऐसा इसलिए कि हाल में ही सपा सांसद रामजीलाल सुमन ने बौद्ध मठों के अवशेषों पर मन्दिरों के बने होने और उसे मुद्दा बनाने के जो खतरनाक संकेत दिए हैं, उससे साफ है कि वे अरब देशों और चीनी एजेंडे को देश में लागू करके सवर्ण हिन्दुओं को दलित हिन्दुओं और ओबीसी हिन्दुओं से भिड़ाने की योजना बना रहे हैं, ताकि हिन्दूदृमुस्लिम दंगे की जगह जातीय दंगे शुरू हों और समाजवादियों के राजनीतिक आधार पर कोई आंच नहीं आए। भारतीय प्रशासन और न्यायपालिका को सिरफिरे नेताओं के इस खतरनाक इरादे से देश को बचाना होगा, अन्यथा महाभारत तय है। कहना न होगा कि ये वही विदेशी एजेंट लोग हैं जिन्होंने 1977 में इंदिरा गाँधी के नेतृत्व में मजबूत हो रहे भारत की गति पर ब्रेक लगवाई थी। तब मोरारजी देसाई पर अमेरिकी सीआईए एजेंट होने के आरोप लगे थे जो बाद में देश के प्रधानमंत्री तक बने। भले ही सरकार चलाने में विफल रहे और बदले गए। फिर इन्हीं जैसे नेता लोगों ने 1989 में राजीव गाँधी के नेतृत्व में मजबूत हो रहे भारत की गति पर ब्रेक लगवाईद्य और अब 2029 में नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मजबूत हो रहे भारत की गति में ब्रेक लगवाने के लिए गृह युद्ध के हालात पैदा करने जैसी विषाक्त बयानबाजी कर रहे हैं।

बता दें कि सपा सांसद रामजी लाल सुमन ने दो टूक कहा है कि गड़े मुर्दे मत उखाड़ो, बरना भारी पड़ेगा। अगर तुम ये कहोगे कि हर मस्जिद के नीचे मंदिर है तो फिर हमें भी यह कहना पड़ेगा कि हर मंदिर के नीचे बौद्ध मठ है। और जो लोग बाबा साहब को मानने वाले लोग हैं वो यदि मोहल्ले में जाकर ये प्रचार करना शुरू कर दें तो ये मामला बड़ा ही खतरनाक मामला बन सकता है। वहीं आगरा में एक सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने करणी सेना को चेतावनी देते हुए कहा कि आगामी 19 अप्रैल को पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव आगरा आ रहे हैं, जिसके बाद लड़ाई का मैदान तैयार होगा और दो–दो हाथ होंगे। एक तरफ 10 प्रतिशत लोग हैं और दूसरी तरफ 90 प्रतिशत सामाजिक न्याय की शक्तियां हैं, इसलिए विजय हमारी होगीद्य इस लड़ाई को कोई माई का लाल नहीं हरा सकता।

उन्होंने करणी सेना को फर्जी सेना कहा और पूछा कि अगर मुसलमान में बाबर का डीएनए है तो तुम्हारे अंदर किसका डीएनए है ये भी बता दो। उन्होंने आगे कहा कि अभी कुछ दिन पहले ही एक बैठक हुई, जिसमें तोप तलवार हथियार रहे। उन्होंने याद दिलाया कि भरतपुर के राजा रहे सूरजमल की तलवार ने अंग्रेजों के सिर काटे पर कभी किसी गरीब कमजोर पर उनकी तलवार नहीं चली। क्षत्रिय का तो धर्म होता है कि कमजोर की रक्षा करना है और गरीब की मदद करना है।

वहीं वह आगे बोलते नजर आए कि हमने तो तीन सेना सुनी है– थल सेना, वायु सेना और जल सेना, लेकिन ये चौथी सेना कहां से पैदा हो गई है? करणी सेना के लिए सांसद ने कहा कि हमारी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि चीन ने हमारी जमीन पर कब्जा कर लिया है। अरुणाचल प्रदेश को चीन अपने हिस्से में दिखाता है। ये जो करणी सेना के रणबांकुरे हैं वो हिंदुस्तान की सरहद पर चले जाओ और चीन से हमको बचाओद्य वरना दुनिया में तुमसे ज्यादा नकली कोई और हो नहीं सकता।

वहीं सपा सांसद रामजीलाल सुमन ने करनी सेना वालों को ललकारते हुए कहा कि ष्ये लड़ाई हम लोगों की लड़ाई नहीं है, बल्कि ये लड़ाई लंबी है। ये लड़ाई उन लोगों से है जिन लोगों ने अखिलेश यादव के मुख्यमंत्री न रहने पर मुख्यमंत्री आवास को गंगाजल से धुलवाया था। ये लड़ाई उन लोगों से है जिन्होंने राजस्थान की विधानसभा में दलित नेता प्रतिपक्ष के मंदिर में चले जाने से मंदिर को गंगाजल से धुलवाया था। सुमन जी ने कहा कि, ष्हम कहते है कि हिंदुस्तान का मुसलमान बाबर को अपना आदर्श नहीं मानता है, वो मोहम्मद साहब को अपना आदर्श मानता है। हम कहना चाहते हैं कि जब–जब इस देश की इज्जत दांव पर लगी है, हिंदुस्तान के मुसलमान ने साबित किया है कि इस देश की मिट्टी से जितनी मोहब्बत हिन्दू को उतनी मोहब्बत मुसलमान को भी है। उन्होंने सवाल उठाया कि देश में वक्फ को लेकर कानून बनाया गया, जब किसी धर्म महजब की कमेटी बनती है तो उस कमेटी में उसी धर्म के लोग रहते हैं? वक्फ में तीन सनातनी रहेंगे, भाई क्यों रहेंगे और बौद्ध मठ का मामला चल रहा है?

आपको बता दें कि इससे पहले सपा सांसद ने राज्यसभा में अपनी बात रखते हुए राणा सांगा को लेकर विवादित बयान दिया था।

सूनी नहीं रहेगी कोई गोद.... अब लैब में ही तैयार होगा स्पर्म और एग

एजेंसी

फर्टिलिटी यानी प्रजनन क्षमता घट रही है, दुनिया के कई देश ऐसे हैं जो इस समस्या से जूझ रहे हैं. वैज्ञानिक इस प्रॉब्लम का सॉल्यूशन ढूंढने लगे हैं. ऐसा ही एक रिसर्च चल रही है ओसाका यूनिवर्सिटी में, यहां के वैज्ञानिक प्रो. कात्सुहिको हायाशी ने दावा किया है कि जल्द ही लैब में स्पर्म (शुक्राणु) और एग (अंडाणु) बनने लगेंगे. अगले 7 साल में यह तकनीक पूरी तरह से विकसित कर ली जाएगी. इस तकनीक को इन–विट्रो गैमेटोजेनेसिस कहते हैं. हायाशी के मुता. बिक उन करोड़ों कपल्स के लिए उम्मीद की किरण की तरह है जो इनफर्टिलिटी से जूझ रहे हैं.

प्रो. हायाशी के मुताबिक वह और उनकी टीम इस तकनीक पर तेजी से काम कर रही है. वह कहते हैं कि जल्द ही ऐसी यौन कोशिका विकसित की जाएगी जो सामान्य प्रजनन प्रक्रिया में प्रयोग की जा सके.इससे फर्टिलिटी की समस्या से जूझ रहे कपल्स तो माता–पिता बन ही सकेंगे, बल्कि समलैंगिक जोड़ों, कैंसर पीड़ितों और उम्र दराज दंपतियों को भी लाभ मिलेगा. प्रो. हायाशी के हवाले से द गार्जियन में प्रका. शित रिपोर्ट के मुताबिक लैब में स्पर्म और एग विकसित करने की रेस में कैलिफॉर्निया की स्टार्टअप कंपनी ब्दबमचजपवद ठपवेबपमदबमे भी आगे

इनफर्टिलिटी की समस्या से जूझ रहे दंपतियों की भी अब गोद भर सकेगी. यह संभव होगा प्टळ तकनीक से. इसके तहत लैब में स्पर्म और एग विकसित किए जाएंगे. ओसाका यूनिवर्सिटी के प्रो. हायाशी ने दावा किया है कि वह और उनकी इस दिशा में लगातार जुटे हुए हैं और जल्द ही यह रिसर्च पूरी कर ली जाएगी.

हैं. इसके ब्ल के मुताबिक लैब में स्पर्म पैदा करने से जनसंख्या में आ रही गिरावट को रोका जा सकता है. इस स्टार्टअप को ओपनएआई के संस्थापक सैम ऑल्टमैन समेत कई दिग्गजों का समर्थन प्राप्त है.

त्वचा व रक्त कोशिकाओं से बनेंगी यौन कोशिका

रिसर्च के मुताबिक सब कुछ ठीक रहा तो जल्द ही किसी भी व्यक्ति त्वचा व रक्त कोशिकाओं से संतान को जल्द देना संभव होगा. भले ही वह व्यक्ति जैविक तौर पर कभी माता–पिता न बन सकता हो. गार्जियन से बात करते हुए ओसाना विवि के प्रोफेसर कात्सुहिको हायाशी ने कहा कि इस रिसर्च में तेजी से प्रगति हो रही है. इसी सप्ताह पेरिस में यूरोपियन सोसाइटी ऑफ ह्यूमन रिप्रोडक्शन एंड एम्ब्रियोलॉजी की वार्षिक बैठक में उन्होंने कहा था कि मुझे थोड़ा दबाव महसूस होता है, ऐसा लगता है कि मैं किसी दौड़ में भाग ले रहा हूं. लेकिन मैं वैज्ञानिक मूल्य की भावना बनाए रखने की कोशिश करता हूं.

चूहों पर सफल रहा है प्रयोग

प्रो. हायाशी ने बताया कि यह एक बहुत बड़ी रिसर्च होगी, चूहों पर प्रयोग सफल रहा है, हमने एक ऐसा चूहा बनाया है, जिसके दो पिता हैं, यानी यह तकनीक समलैंगिक जोड़ों के लिए भी वरदान हो सकती है. वह बताते हैं कि हमें सप्ताह में कम से कम एक ईमेल ऐसा आता है, जिसमें इनफर्टिलिटी के मरीज अपनी परेशानी बताते हैं. इसलिए मैं इस समस्या को समझता हूं. स्टार्टअप कंपनी कॉन्सेप्शन के सीईओ मैट क्रिसिलॉफ ने गार्जियन को बताया कि प्रयोगशाला में विकसित एग सब कुछ बदल देंगे. यह महिलाओं को अधिक उम्र में बच्चे पैदा करने की अनुमति देगा.

लैब में ऐसे बनेगा स्पर्म

ईएसएचआरई सम्मेलन में प्रो. हायाशी ने बताया कि अब तक हमें चूहों के स्पर्म को बनाने और मानव अंडकोष विकसित करने में सफलता मिल गई है.अब हम पूरी तरह आईवीजी पर काम कर रहे हैं. इसमें किसी व्यक्ति की स्किन या रक्त को. शिकाओं से स्टेम कोशिकाएं बनाई जाती हैं, फिर इन्हें जर्म कोशिकाओं में बदल दिया जाता है. ये एग और स्पर्म की शुरुआत की तरह होते हैं. इन्हें लैब में बनाई गई स्टेम कोशिकाओं में रखा जाता है. यही जर्म कोशिकाओं से एग या स्पर्म बना सकते हैं. चूहों में ये प्रयोग भी सफल हो चुका है.

अभी लगेंगे सात साल

प्रो. हायाशी ने कहा कि लैब में स्पर्म को विकसित करने में अभी सात लग सकते हैं, इसें महिलाओं की कोशिश से स्पर्म विकसित करने में चुनौती महसूस हो रही है. हालांकि उन्होंने इसे असंभव नहीं कहा. अन्य विशेषज्ञ भी हायाशी की समय सीमा से सहमत हैं. एडिनबर्ग विवि में कैंसर से पीड़ित बच्चों में पुरुष प्रजनन क्षमता के संरक्षण के लिए शोध कर रहे प्रोफेसर रॉड मिशेल ने कहा कि विज्ञान तेजी से बढ़ रहा है, हमें उम्मीद है कि हम पांच या दस साल के समय में अंडाशय और अंडकोश में लैब में बने स्पर्म और एग देख पाएंगे.

हमें साबित करना होगा कि तकनीक सुरक्षित है

मैनचेस्टर विश्वविद्यालय के एंड्रोलॉजी के प्रोफेसर और उप–उपाध्यक्ष प्रोफेसर एलन पेसी ने प्रो. हायाशी की बात पर सहमति जताई. उन्होंने कहा कि कई प्रयोगशाला में उगाए गए अंडो से शिशु चूहे पैदा किए गए हैं. हालांकि मानव एग बनाना चुनौतीपूर्ण है, लेकिन हाल ही में इस बारे में लोगों की ज्यादा समझ विक. सित हुई है कि आखिर निष्क्रिय अवस्था में मानव अंडे कैसे रहते हैं. ज्यादातर लोगों का मानना है कि अभी इस तकनीक में कई वर्ष लग सकते हैं. हालांकि अच्छी बात ये है कि प्रयोगशाला में बने चूहों का जीवनकाल अच्छा रहा है और उन्होंने भी सामान्य चूहों की तरह बच्चे पैदा किए हैं. प्रो. हायाशी ने कहा कि हमारी जिम्मेदारी ये भी है कि हम इस बात को साबित करें कि ये तकनीक सुरक्षित है. उन्होंने कहा कि बेशक मैंने दो पिताओं से एक चूहा बनाया, मगर यह प्राकृतिक नहीं है.

अंतरिक्ष में अजीबो गरीब रेडियो सिग्नल कहां से आते हैं, वैज्ञानिकों ने सुलझाया रहस्य

स्पेस साइंटिस्ट्स ने आखिरकार उन अजीबोगरीब रेडियो सिग्नल की गुत्थी सुलझा ली है, जो अब तक विज्ञान के लिए एक पहेली बने हुए थे. कहा जा रहा है कि ये खोज सितारों के जीवन के अंतिम चरणों को समझने के तरीके को पूरी तरह बदल सकती है. वैज्ञानिकों के अनुसार, यह सिग्नल हर दो घंटे में दोहराता है और इसे पहली बार एक दशक पहले खोजा गया था.

एजेंसी

अंतरिक्ष से आने वाले रहस्यमयी रेडियो सिग्नल हमेशा से वैज्ञानिकों और आम लोगों की जिज्ञासा बढ़ाते रहे हैं. पिछले साल वैज्ञानिकों ने एक ऐसा ही अजीबोगरीब सिग्नल पकड़ा था, जो हर दो घंटे में दोहराया जाता था. अब, आखिरकार इसकी गुत्थी सुलझा ली गई है.

पता चला है कि ये सिग्नल एक अनोखे बाइनरी सिस्टम से आ रहा है, जिसमें एक मरता हुआ तारा (व्हाइट ड्वार्फ) और उसका साथी एक छोटा लाल तारा (रेड ड्वार्फ) शामिल हैं. वैज्ञानिकों के मुताबिक, यह सिग्नल पहली बार करीब एक दशक पहले देखा गया था और यह हमारी आकाशगंगा के बिग डिपर नक्षत्र की दिशा से आ रहा है.

कैसे हुआ इस रेडियो सिग्नल का पता?

इस रेडियो सिग्नल की खोज एस्ट्रोनॉमर आइरिस डी रुइटर ने की, जो ऑस्ट्रेलिया की सिडनी यूनिवर्सिटी में शोध कर रही हैं. उन्होंने 2024 में लो फ़्रीक्वेंसी एरे (लोफर) टेलीस्कोप से मिले पुराने डेटा को खंगालते हुए इस सिग्नल को खोज निकाला. लोफर दुनिया का सबसे बड़ा रेडियो टेलीस्कोप है, जो बहुत कम फ़्रीक्वेंसी वाले रेडियो सिग्नल पकड़ सकता है. पहली बार यह सिग्नल 2015 के डेटा में देखा गया था. इसके बाद वैज्ञानिकों ने इस स्रोत से छह और बार ऐसे ही पल्स दर्ज किए.

ये रेडियो तरंगें कुछ सेकंड से लेकर कई मिनट तक चल सकती हैं, लेकिन इनकी विशेषता यह थी कि ये हर दो घंटे में नियमित रूप से दोहराती थीं.

व्हाइट ड्वार्फ क्या होता है?

व्हाइट ड्वार्फ एक ऐसा तारा होता है, जो अपने जीवन के अंतिम चरण में पहुंच चुका होता है. जब कोई तारा अपने ईंधन को जला चुका होता है, तो वह अपने बाहरी परतों को छोड़ देता है और उसका भीतरी भाग सिकुड़कर बहुत घना और छोटा हो जाता है.

यह सफेद रंग का चमकदार बिंदु बन जाता है, जिसे व्हाइट ड्वार्फ कहा जाता है.

क्या यह फास्ट रेडियो बर्स्ट जैसा है?

वैज्ञानिकों को यह सिग्नल ब्रह्मांड में होने वाली एक अन्य घटना, फास्ट रेडियो बर्स्ट (एफआरबी) के समान लगा, लेकिन दोनों में कुछ महत्वपूर्ण अंतर थे. थ्ल केवल कुछ मिलीसेकंड के लिए चमकते हैं, जबकि यह नया सिग्नल कई सेकंड से लेकर कुछ मिनट तक जारी रहता है.

मृत तारे की चुंबकीय शक्ति का असर

अंतरिक्ष वैज्ञानिकों ने इस सिग्नल के स्रोत का विस्तृत अध्ययन किया और पता चला कि यह आईएलटीजे1101 नामक एक द्विगुणीय प्रणाली से आ रहा है, जो पृथ्वी से 1,600 प्रकाश–वर्ष की दूरी पर स्थित है. इसमें एक व्हाइट ड्वार्फ और एक रेड ड्वार्फ तारा बहुत करीब–करीब एक–दूसरे की परिक्रमा कर रहे हैं. इन दोनों तारों के बीच तीव्र चुंबकीय क्षेत्र है, जो रेडियो सिग्नल पैदा कर रहा है. जब यह व्हाइट ड्वार्फ अपने साथी तारे के पास से गुजरता है, तो उसकी शक्तिशाली चुंबकीय ऊर्जा रेड ड्वार्फ पर प्रभाव डालती है, जिससे रेडियो तरंगें पैदा होती हैं.

कैसे की गई गहराई से जांच?

वैज्ञानिकों ने इस प्रणाली की गहराई से जांच करने के लिए अमेरिका के एरिज़ोना स्थित मल्टीपल मिरर टेलीस्कोप और टेक्सास स्थित मैकडोनाल्ड ऑब्जर्वेटरी का इस्तेमाल किया. इन उपकरणों ने दिखाया कि रेड ड्वार्फ और व्हाइट ड्वार्फ हर 125.5 मिनट में एक–दूसरे के चारों ओर घूम रहे हैं.

इसके बाद, वैज्ञानिकों ने इस प्रणाली की रोशनी को वेवलेंथ में विभाजित करके अध्ययन किया. इस प्रक्रिया से उन्हें पता चला कि रेड ड्वार्फ अत्यधिक गति से आगे–पीछे झूल रहा है, जो यह साबित करता है कि यह किसी अदृश्य साथी से गुरुत्वाकर्षण बल का प्रभाव झेल रहा है. यही अदृश्य साथी एक व्हाइट ड्वार्फ तारा निकला.

क्या है लाइट पॉल्यूशन, कैसे दुनिया की सबसे बड़ी टेलीस्कोप के लिए बना खतरा?

रोशनी से होने वाला पॉल्यूशन नया खतरा बन रहा है. इसने दुनिया की सबसे बड़ी टेलीस्कोप के लिए खतरा पैदा कर दिया है. अंतरिक्ष में नजर रखने वाले विशेषज्ञों ने इसके लिए चेतावनी भी है. ऐसे में सवाल है कि प्रकाश तो रोशनी देने का काम करता है फिर इससे प्रदूषण कैसे पैदा हो रहा है. क्या होता है लाइट पॉल्यूशन और यह कैसे खतरा पैदा कर रहा है और इसका क्या असर पड़ेगा?

, tl h

हवा, पानी और ध्वनि के प्रदूषण के बाद अब नया खतरा बढ़ रहा है. यह है रोशनी से होने वाला प्रदूषण. जिसे लाइट पॉल्यूशन कहा गया है. लाइट पॉल्यूशन ने दुनिया की सबसे बड़ी टेलीस्कोप के लिए खतरा पैदा कर दिया है. अंतरिक्ष में नजर रखने वाले विशेषज्ञों ने इसके लिए चेतावनी भी है. उनका कहना है, हाइड्रोजन एनर्जी प्रोजेक्ट से निकलने वाला लाइट पॉल्यूशन यूरो. पियन सदर्न ऑब्जर्वेट्री की वेरी लार्ज टेलीस्कोप के लिए मुश्किल बढ़ा रहा है.

ऐसे में सवाल है कि प्रकाश तो रोशनी देने का काम करता है फिर इससे प्रदूषण कैसे पैदा हो रहा है. क्या होता है लाइट पॉल्यूशन और यह कैसे खतरा पैदा कर रहा है और इसका क्या असर पड़ेगा?

क्या है लाइट पॉल्यूशन?

धरती पर बढ़ती आर्टिफिशियल लाइट ही इसकी वजह है. यह इतनी ज्यादा बढ़ रही है कि रात में आकाश से तारों और सौरमंडल की घटनाओं को देखना मुश्किल हो रहा है. विशेषज्ञों का कहना है कि लाइट पॉल्यूशन के वेरी लार्ज टेलीस्कोप की क्षमता 30 फीसदी घट सकती है.

टेलीस्कोप की क्षमता का घटना खगोलशास्त्रियों के लिए मुसीबतें पैदा कर सकता है. उनके लिए सौर मंडल की घटनाओं को देखना और उसे समझना मुश्किल हो सकता है क्योंकि टेलीस्कोप के कारण अंतरिक्ष में दिखने वाले बदलाव और उसके असर की भविष्यवाणी करना आसान हो पाता है.

कितनी मुश्किल बढ़ा सकता है यह प्रदूषण?

टेलीस्कोप के लिए मुश्किल और भी ज्यादा बढ़ने की वजह है उसकी लोकेशन. यूरोपियन सदर्न ऑब्जर्वेट्री की वेरी लार्ज टेलीस्कोप दक्षिण अमेरिका के देश चिली में स्थापित है. टेलीस्कोप चिली के अटाकामा रेगिस्तान में है ताकि रात में आकाशीय घटनाओं को आसानी से देखा और समझा जा सके.

अमेरिकी कंपनी एईएस एनर्जी चिली में एक बड़ा नवीकरणीय हाइड्रोजन संयंत्र बनाने की योजना बना रही है. यह उस जगह से कुछ किलोमीटर की दूरी पर होगा, जहां वेधशाला स्थित है. इय परियोजना से होने वाला प्रकाश प्रदूषण वेधशाला और वीएलटी दूरबीन के संचालन के लिए अधिक जोखिम पैदा करता है. यह प्रोजेक्ट 3,021 हेक्टेयर में फैला है. यहां के औद्योगिक पार्क है, जिसमें तीन सौर फार्म, तीन पवन फार्म, एक बैटरी भंडारण प्रणाली और हाइड्रोजन उत्पादन की सुविधाएं होंगी.

यूरोपियन सदर्न ऑब्जर्वेट्री का अनुमान है कि इस परियोजना से लगभग 20,000 लोगों वाले शहर के बराबर प्रकाश प्रदूषण पैदा होगा. पार्क के कुछ हिस्से यूरोपियन सदर्न ऑब्जर्वेट्री की दूरबीनों से 5 किलोमीटर की दूरी पर हो सकते हैं, और भविष्य में कोई भी विस्तार रात के आकाश के लिए प्रकाश प्रदूषण को और भी बदतर बना सकता है.

अगर ऐसा होता है तो दूरबीन को अपनी क्षमता बढ़ाने के लिए और भी बेहतर तकनीक की जरूरत होगी ताकि यह अपना कार्य ठीक तरीके से कर सके. इसमें और भी ज्यादा निवेश करना होगा. अंतरिक्ष की जानकारी जुटाना वैज्ञानिकों के लिए और महंगा हो जाएगा.

हाइटेक टेलीस्कोप

वेरी लार्ज टेलीस्कोप दुनिया के सबसे हाइटेक टेलीस्कोप है. इसे 1990 के दशक में 350 मिलियन डॉलर से बनाया गया था. इसमें चार 27–फुट चौड़ी दूरबीने हैं जो दूर की वस्तुओं का निरीक्षण करने और ब्रह्मांड के रहस्यों को उजागर करने के लिए एक साथ काम करती हैं. हालांकि, अगर हाइड्रोजन परियोजना का निर्माण हो जाता है, तो यह दूरबीन की क्षमता को कम करेगा.

ईएसओ के महानिदेशक जेवियर बार्कोन्स का कहना है, इस परियोजना से आकाश की चमक 10: तक बढ़ जाएगी. वेधशाला सबसे धुंधली आकाशगंगाओं में से लगभग 30 प्रतिशत को देखने की क्षमता खो सकती है.

हम अभी ग्रहों के वायुमंडल का अध्ययन करना शुरू कर रहे हैं, लेकिन अगर आक. श अधिक चमकीला हो जाता है, तो हम उन दृश्यों को देखने का मौका खो सकते हैं.

बिन चुहिया दो नर चूहों ने पैदा किया बच्चा... चीनी वैज्ञानिकों ने दुनिया को चौंकाया

एजेंसी

सोचिए, अगर किसी बच्चे के जन्म के लिए माँ की जरूरत ही न हो! यह सुनने में किसी साइंस फिक्शन मूवी का सीन लग सकता है, लेकिन चीन के वैज्ञानिकों ने इसे सच कर दिखाया है.

उन्होंने दो मेल (नर) चूहों से संतान पैदा करने का अनोखा कारनामा कर दिखायाकृवो भी बिना किसी माँ की भूमिका के.

यह खोज विज्ञान और जेनेटिक इंजीनियरिंग के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम मानी जा रही है, जो भविष्य में इंसानों के लिए भी नई संभावनाओं के दरवाजे खोल सकती है. लेकिन सवाल उठता है कि यह मुमकिन कैसे हुआ? और क्या यह तकनीक कभी इंसानों के लिए भी इस्तेमाल हो पाएगी? आइए जानते हैं इस हैरतअंगेज वैज्ञानिक उपलब्धि के बारे में विस्तार से.

कैसे हुआ यह वैज्ञानिक चमत्कार?

सामान्यतरू किसी भी स्तनधारी जीव के जन्म के लिए माँ और पिता दोनों की जरूरत होती है. इसकी वजह होती है "जीनोमिक इम्प्रिंटिंग" नामक जैविक प्रक्रिया, जो यह तय करती है कि कुछ जीन केवल माँ से और कुछ केवल पिता से मिलें, तभी भ्रूण सही तरीके से विकसित हो सकता है. अगर दोनों

जीन एक ही लिंग (जैसे दो पुरुष या दो महिलाएं) से आते हैं, तो भ्रूण का विकास बाधित हो जाता है. यही कारण है कि नेचुरली एक ही लिंग के जोड़े से बच्चें का जन्म असंभव माना जाता है. लेकिन चीन की "चाइनीज एकेडमी ऑफ साइंसेस" के वैज्ञानिकों ने इस जैविक नियम को चुनौती दे दी.

क्या किया वैज्ञानिकों ने?

वैज्ञानिकों ने इस प्रयोग के लिए दो नर चूहों का चयन किया और इस पूरी प्रक्रिया को लैब में अंजाम दिया. सबसे पहले, वैज्ञानिकों ने एक नर चूहे से स्पर्म (शुक्राणु) लिया. उसके बाददूसरे नर चूहे से भ्रूणीय स्टेम सेल लिया गया. इस स्टेम सेल में जेनेटिक बदलाव किए गए, ताकि भ्रूण बनने में कोई बाधा न आए. इस मिश्रण को एक डोनेट किए गए अंडाणु में डाला गया, जिसकी खुद की क्छ। पहले ही हटा दी गई थी. आखिर में भ्रूण को विकसित करने के लिए 20 जीन में बदलाव किए गए, जिससे प्राकृतिक रूप से उत्पन्न होने वाली रुकावटों को दूर किया जा सके.

क्या रहे नतीजे?

यह प्रयोग किसी चमत्कार से कम नहीं है, लेकिन पूरी तरह सफल भी नहीं कहा जा सकता. वैज्ञानिकों ने 1,000 से अधिक भ्रूण बनाए, लेकिन उनमें से केवल 134 ही जीवित जन्म ले सके. यह सफलता दर बेहद कम मानी जाती है. जन्मे चूहों में कई समस्याएं देखी गईं. जैसे कुछ चूहे बेहद कमजोर थे. कुछ के चेहरे की बनावट सही नहीं थी तो कुछ चूहे दूध नहीं पी पा रहे थे. जो थोड़े स्वस्थ चूहे थे, वे भी आगे संतान पैदा करने में असमर्थ थे.

क्या इंसानों के लिए भी यह संभव होगा?

हालाँकि, यह वैज्ञानिक खोज रोमांचक है, लेकिन इसे इंसानों पर लागू करने में अभी काफी समय लगेगा. वैज्ञानिकों का मानना है कि भविष्य में यह तकनीक समलैंगिक जोड़ों को जैविक संतान पैदा करने में मदद कर सकती हैय इसके अलावा, यह विलुप्त हो रही प्रजातियों के संरक्षण में भी अहम भूमिका निभा सकती है.

लेकिन अभी इसमें कई तकनीकी और नैतिक चुनौतियाँ बनी हुई हैं.

क्या भविष्य में माँ के बिना भी होगा जन्म?

यह सोचने में जितना असंभव लगता है, उतना ही रोमांचक भी है. फिलहाल यह प्रयोग सिर्फ एक वैज्ञानिक उपलब्धि तक सीमित है, लेकिन विज्ञान की दुनिया में कुछ भी नामुमकिन नहीं. हो सकता है कि आने वाले दशकों में यह तकनीक इतनी उन्नत हो जाए कि इंसानों के लिए भी यह संभव हो जाए.

12 नहीं 4 माह से ही बोलना सीख लेते हैं बच्चे, रिसर्च में दावा

एजेंसी

अक्सर हम देखते हैं कि जब दो लोग बात कर रहे होते हैं को छोटे बच्चे काफी ध्यान से देखता है. वो बातें तो नहीं समझ पाता लेकिन उनकी आवाज उनकी ध्वनि उसके कानों तक जरूर पहुंचती है. इस दौरान वो मुंह से निकलने वाली ध्वनियों को समझ रहा होता है बल्कि वो ये भी सीख रहा होता है कि ये आखिर कैसे ध्वनियां कैसे बनती हैं. धीरे–धीरे बच्चा बड़ा होता है और वो इन चीजों को समझ जाता है फिर बोलना सीख लेता है. डेवलपमेंटल साइंस' में प्रकाशितएक अध्यन से पता चलता है कि ध्वनियों को सीखने की ये ललक बच्चे में चार माह की उम्र में ही जागने लगती है. इससे पहले माना जाता रहा है कि बच्चे छह से 12 माह की उम्र के बीच अपनी मूल भाषा सीखने के बाद ही ध्वनियों पर गौर करना शुरू करते हैं, लेकिन इस अध्ययन से यह धारणा दूर हो गई. बच्चे धीरे–धीरे एक एक शब्द को बोलना साखते हैं. जिसकी शुरुआत सरल शब्दों से होती है. हम देखते हैं कि सबसे पहले बच्चे, मां, पापा जैसे शब्द बोलते हैं जो उनके लिए सरल और आसान होते हैं.

एक साल का होने तक बच्चे अपनी स्थानीय भाषा की ध्वनियों के प्रति काफी समझ रखने लगते हैं जिसे परसेप्टिक अटैचमेंट कहा जाता है. यानी उन्हें समस्वरता के बारे में पता चलने लगता है. उनका दिमाग ध्वनियों के समूह में से उन ध्वनियों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश कर रहा होता है जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं. शुरुआती छह माह में बच्चे उन भाषाओं की ध्वनियों को भी पहचान सकते हैं जिन्हें उन्होंने कभी सुना भी नहीं है, जैसे वो हिंदी के कुछ शब्दों को पहचान सकते हैं जो अंग्रेजी बोलने वाले लोगों के लिए भी चुनौतीपूर्ण होता है. छह से 12 माह के बीच बच्चे अपना ध्यान उन ध्वनियों पर देना शुरू कर देते हैं जिन्हें वे अक्सर सुनते हैं. स्वरों के मामले में यह तालमेल करीब छह माह की उम्र में होता है जबकि व्यंजन के मामले में दस माह की उम्र में. बच्चे उन ध्वनियों पर ज्यादा गौर करते हैं जो महत्वपूर्ण हैं, ,जैसे अंग्रेजी में आर और एल के बीच का अंतर, जबकि वो उन ध्वनियों के प्रति संवे. दनशीलता खो देते हैं जिन्हें वे नियमित रूप से नहीं सुनते. अब तक शोधकर्ताओं का मानना छ्था कि बच्चों को अधिक जटिल भाषा सीखने के लिए यह प्रक्रिया जरूरी थी जैसे कि यह पता लगाना कि बिन में बी और डिन में डी अलग–अलग हैं क्योंकि एक को बोलने के लिए होठों का ज्यादा इस्तेमाल होता है और दूसरे को बोलने में जीभ के अध्ययन से पता चला है कि चार माह की उम्र के बच्चे, इस संकुचन के शुरू होने से बहुत पहले ही यह सीख रहे होते हैं कि ध्वनियां कैसे बनती हैं?.

4.5 अरब साल पहले कैसी थी पृथ्वी की सतह? कांपती धरती ने खोले गहरे राज

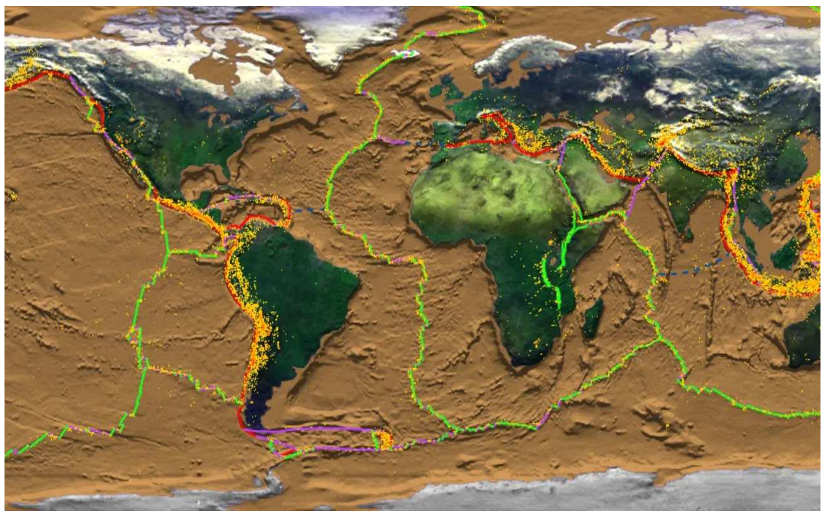

एजेंसी

वैज्ञानिकों ने एक नए शोध में पृथ्वी की 4.5 अरब साल पुरानी सतह के रासायनिक रहस्यों को उजागर किया है. स्टडी में पाया गया कि पृथ्वी की शुरुआती सतह में वही रासायनिक विशेषताएं थीं, जो आज के महाद्वीपीय क्रस्ट में देखी जाती हैं. इससे पता चलता है कि यह रासायनिक पहचान पृथ्वी के बनने के समय से ही मौजूद थी, न कि प्लेट टेक्टॉनिक्स की शुरुआत के बाद.

थी एकमात्र ऐसा ग्रह है जहां प्लेट प्लेट टेक्टोनिक्स मौजूद है. यह प्रक्रिया महाद्वीपों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और माना जाता है कि जीवन की उत्पत्ति में भी सहायक रही होगी. लेकिन एक बड़ा वैज्ञानिक सवाल अब भी बना हुआ है कि पृथ्वी पर प्लेट टेक्टोनिक्स की शुरुआत कब हुई? इस सवाल का जवाब खोजने के लिए वैज्ञानिकों ने पृथ्वी की 4.5 अरब साल पुरानी सतह की स्टडी किया है. इस नई रिसर्च में वैज्ञानिकों ने इस रहस्य को सुलझाने के लिए पृथ्वी के शुरुआती मेंटल और उस समय के रासायनिक तत्वों के व्यवहार का विश्लेषण किया. इस अध्ययन को प्रतिष्ठित जर्नल नेचर में प्रकाशित किया गया है.

क्या बता रहे रिसर्चर्स?

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, कर्टिन विश्वविद्यालय, क्वींसलैंड यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी और यूनिवर्सिटी ऑफ लियोन के शोधकर्ताओं की टीम ने गणितीय मॉडलिंग का इस्तेमाल करके यह जानने की कोशिश की कि जब पृथ्वी का कोर बन रहा था और सतह पिघले हुए लावा से ढकी थी, तब उसमें क्या रासायनिक प्रक्रियाएं चल रही थीं.

रिसर्चर्स के अनुसार, पृथ्वी की सबसे प्रारंभिक सतह, जिसे प्रोटोक्रस्ट कहा जाता है, उसमें वही रासायनिक विशेषताएं पाई गईं, जो आज के महाद्वीपीय सतह में देखी जाती हैं. उदाहरण के लिए, नियोबियम तत्व पिघलकर पृथ्वी के कोर में चला गया, जबकि रेयर अर्थ एलिमेंट्स सतह पर मौजूद मैग्मा के साथ ऊपर आ गए और ठंडा होकर क्रस्ट बनाने लगे.

इससे पता चलता है कि जिस रासायनिक पहचान को वैज्ञानिक अब तक प्लेट विवर्तनिकी की शुरुआत का संकेत मानते थे, वह दरअसल पृथ्वी के बनने के समय से ही मौजूद थी.

क्यों महत्वपूर्ण है ये रिसर्च?

इस खोज के महत्वपूर्ण नतीजे हो सकते हैं. इसका मतलब यह है कि वैज्ञानिकों द्वारा पहले माना गया यह विचार गलत हो सकता है कि जब प्लेट विवर्तनिकी शुरू हुई, तभी महाद्वीपीय क्रस्ट ने अपनी अनूठी रासायनिक पहचान विक. सित की.

इसके विपरीत, इस अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि यह रासायनिक पहचान शुरुआत से ही थी और समय के साथ यह बार–बार पुनर्चक्रित होकर द्वीपीय चापों में समाहित होती गई.

इसलिए, वैज्ञानिकों को प्लेट विवर्तनिकी की शुरुआत का पता लगाने के लिए अब किसी अन्य संकेतक की तलाश करनी होगी.

भारत में सऊदी के अगले दिन तो इंडोनेशिया में 3 दिन बाद शुरू होता है रमजान, जानिए बाकी देशों का हाल

एजेंसी

रमजान का चांद सबसे पहले कहां दिखता है? इसका जवाब सऊदी अरब है और रोजा रखने वाले अधिकांश मुसलमान इसे जानते भी हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं कि पूरी दुनिया में रमजान के विधिवत शुरू होने में कम से कम 3 दिन का समय लग जाता है. उदाहरण के लिए सऊदी अरब में अगर 28 फरवरी की शाम को रमजान का चांद दिखता है तो भारत में उसके अगले दिन से इसे मनाने की घोषणा की जाती है.

इसी तरह इंडोनेशिया में सऊदी के 3 दिन बाद विधिवत रूप से रमजान की घोषणा की जाती है. दरअसल, यह चांद के निकलने और संबंधित देश में दिखने की वजह से यह होता है.

रमजान की घोषणा कैसे होती है?

रमजान इस्लामी पंचांग का नौवां महीना है और इस्लाम में इसे सबसे पवित्र महीना माना जाता है. इस्लाम का पूरा चक्र सूर्य की वजाय चंद्रमा के गति पर निर्भर करता है. यही वजह है कि रमजान की घोषणा चांद देखने के बाद ही किया जाता है.

इस्लामिक कैलेंडर में एक महीना करीब 29 दिनों का होता है और एक साल करीब 355 दिनों का. यह ग्रेगोरियन के कैलेंडर से काफी अलग है, जहां 365 दिनों का एक साल होता है. इस्लामिक कैलेंडर में फेरबदल की वजह से रमजान का महीना हर बार अलग–अलग समय पर पड़ता है.

रमजान की घोषणा मुख्यतरू तीन बातों पर निर्भर करती है. इन्हीं तीन बातों की वजह से रमजान की घोषणा किसी देश में पहले तो किसी देश में बाद में की जाती है.

1. रमजान का चांद स्थानीय स्तर पर देखा जाता है. सभी देश के लोग कमेटी के जरिए इस चांद को देखते हैं. रमजान के चांद को अर्द्धचंद्र कहा जाता है. यानी अमावस्या के बाद जब चांद पूर्णिमा की तरफ बढ़े. यह चांद सूर्य के ढलने के तुरंत ही बाद दिखता है. कई बार मिस हो जाता है. चांद नहीं दिखने की स्थिति में रमजान महीने की घोषणा नहीं की जाती है.

2. इस्लाम मुख्यतरू दो भागों में विभाजित है. एक शिया और दूसरा सुन्नी. शिया और सुन्नी बहुल देश अपने–अपने हिसाब से चांद देखकर रमजान महीने की घोषणा करता है. दोनों ही समुदाय के जिम्मेदार लोग चांद को देखने के लिए काफी मेहनत करते हैं.

3. रमजान का रोजा कब से शुरू होगा, यह परिवारिक नेटवर्क पर भी निर्भर है. सीएनएन से बात करते हुए दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग के प्रोफेसर स्कॉट कुगले कहते हैं– उत्तरी अमेरिका में रहने वाले लोग जिनके परिवार भारत या पाकिस्तान में रहते हैं. वे उत्तरी अमेरिका में तब रोजा रखना शुरू कर सकते हैं, जब पाकिस्तान या भारत में उनके परिवार वाले रोजा रखना शुरू कर दें.

रमजान में चांद का विज्ञान

फट जाएगी जमीन, मचेगी अविश्वसनीय तबाही... चीन में बड़े संकट का खतरा

एजेंसी

चीन के भूवैज्ञानिकों ने 150 वर्षों के आंकड़ों के आधार पर एक रिपोर्ट जारी की है जिसमें सिचुआन, युन्नान और हिमालयी क्षेत्र में 8 तीव्रता के भूकंप की भविष्यवाणी की गई है. यह भविष्यवाणी पामीर-बाइ. काल भूकंपीय बेल्ट में भूकंप के चक्र को ध्यान में रखते हुए की गई है. अगहर चीन में भविष्यवाणी सच साबित होती है तो अविश्वनीय तबाही

चीन के भू–वैज्ञानिकों ने कुछ ही दिन बाद अपने देश में शक्तिशाली भूकंप आने की भविष्यवाणी की है. चीन के इन वैज्ञानिकों का कहना है कि यहां पर 8 तीव्रता की भूकंप कभी भी आ सकती है. अगर यह भविष्यवाणी सच होती है तो चीन के कई इलाके पूरी तरह बर्बाद हो जाएंगे.

साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट के मुताबिक बीजिंग भूकंप एजेंसी के वरिष्ठ इंजीनियर झू होंगिन की टीम ने एक रिपोर्ट तैयार की है, जो 150 सालों के भूकंप के आधार पर है. इस रिपोर्ट ने चीन सरकार की टेंशन बढ़ा दी है.

भूकंप को लेकर इस रिपोर्ट में क्या है?

रिपोर्ट में कहा गया है कि पूर्व एशिया के पामीर–बाइकाल भूकंपीय बेल्ट में पिछले 150 साल में 12 शक्तिशाली भूकंप के झटके महसूस किए गए. इनमें से भूकंप के 5 झटके चीन के आसपास ही लगे. अब जो उसका छठा चक्र है, उसकी वजह से चीन के आसपास ही भूकंप के झटके महसूस किए जाएंगे.

रिपोर्ट में कहा गया है कि सिचुआन, युन्नान और हिमालयी मोर्चे पर भूकंप आ सकता है. इस भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 8 की होगी. भूकंप आने की बड़ी वजह यहां के टेक्टॉनिक प्लेटों के बीच घर्षण में तेजी आना है.

म्यांमार ने बढ़ाई चीन की टेंशन

साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट का कहना है कि म्यांमार में आए भूकंप के बाद इस भविष्यवाणी ने चीन की सरकार को डरा दिया है. हालांकि चीन के सरकारी वैज्ञानिकों का कहना है कि अभी इस बात के संकेत नहीं मिले हैं कि धरती इसी साल हिल जाएगी. चीन के सिचुआन प्रांत में साल 2008 में भूकंप का झटका महसूस किया गया था.

वहीं जिन वैज्ञानिकों ने ये रिपोर्ट तैयार की है, उनका कहना है कि इसी साल भूकंप का शक्तिशाली झटका लग सकता है. ऐसी स्थिति में चीन की हजारों इमारतें जमींदोज हो जाएगी.

हाल ही में म्यांमार में 7.6 तीव्रता का शक्तिशाली भूकंप आया था, जिसमें अब तक 3000 लोगों की मौत हो गई. हालांकि, कहा जा रहा है कि अभी भी सैकड़ों लोग मलबे में दबे हुए हैं.

वहीं आंकड़े छुपाने के लिए म्यांमार की सरकार ने मीडिया रिपोर्टिंग पर बैन लगा दिया है.

इस तारीख को आसमान में दिखेंगे सातों ग्रह, 2040 से पहले आखिरी मौका

एजेंसी

आसमान की गहराइयों में छिपे रहस्यों को देखने का रोमांच ही अलग होता है. लेकिन इस हफ्ते, आसमान कुछ खास लेकर आ रहा है. अगर आप तारों और ग्रहों को निहारने के शौकीन हैं, तो यह सप्ताह आपके लिए यादगार बनने वाला है.

इस बार सात ग्रहकृमंगल, बृहस्पति, यूरेनस, शुक्र, नेपच्यून, बुध और शनिकृएकसाथ नजर आएंगे. ऐसा दुर्लभ नजारा 2040 से पहले फिर नहीं दिखेगा. 28 फरवरी को सूरज डूबने के बाद कुछ ही मिनटों के लिए, ये सातों ग्रह एक साथ चमकेंगे.

किन ग्रहों को बिना टेलीस्कोप के देख सकते हैं?

हमारे सौरमंडल के सभी ग्रह सूरज के चारों ओर एक ही समतल कक्षा में चक्कर लगाते हैं. लेकिन हर ग्रह की गति और दूरी अलग होती है. जब ये सभी ग्रह एक खास कोण पर आ जाते हैं, तो हमें ऐसा लगता है कि ये एक सीध में हैं, जिसे प्लैनेटरी परेड कहा जाता है. हालांकि असल में ये अरबों किलोमीटर दूर होते हैं.

स्ट्रेंजर थिंग्स वाली इलेवन या वेडनेसडे... दोनों में कौन है ज्यादा अमीर?

इस अद्भुत खगोलीय घटना में चार ग्रहकृबुध, शुक्र, बृहस्पति और मंगलकृआप बिना किसी दूरबीन या टेलीस्कोप के देख सकते हैं. शुक्र और बृहस्पति सबसे चमकीले रहेंगे, जिन्हें पहचानना बेहद आसान होगा. मंगल अपनी लालिमा के कारण अलग दिखेगा. शनि को देखना थोड़ा मुश्किल होगा क्योंकि यह क्षितिज के बहुत करीब होगा. यूरेनस और नेपच्यून को देखने के लिए आपको टेलीस्कोप की जरूरत पड़ेगी.

कहीं आप गर्मियों में गलत समय तो नहीं कर रहे वॉक? जानें सही टाइम

एजेंसी

वजन घटाने या खुद को फिट रखने के लिए अमूमन लोग वॉक करते हैं. कुछ लोग मॉर्निंग वॉक पर जाते हैं तो कुछ इविनिंग वॉक करते हैं. वॉक करने के कई फायदे भी हैं. इससे स्ट्रेस कम होता है, पाचन तंत्र दुरुस्त रहता है और शरीर को फिट रखने में भी मदद मिलती है. लेकिन अक्सर लोग गर्मियों के मौसम में गलत समय पर वॉक करने निकल जाते हैं , जो उनके फायदे के बजाए नुकसान पहुंचा सकता है.

ऐसे में आपको ये जानना जरूर है कि गर्मियों में वॉक करने का सही समय क्या है. तो चलिए इस आर्टिकल में आपको बताते हैं कि गर्मियों में किस समय वॉक करनी चाहिए? साथ ही सही टाइम चुनने पर शरीर को क्या–क्या फायदे मिलते हैं.

गर्मियों में वॉक करने का सही समय?

गर्मियों के मौसम में वॉक करने का सबसे अच्छा समय सुबह का होता है. आप सुबह 5 बजे से 7 बजे कर वॉक पर जा सकते हैं. इस समय धूप, गर्मी और उमस कम होती है. वहीं अगर आप शाम के समय में वॉक करना पसंद करते हैं तो आपको 6रू 30 के बाद ही वॉक करनी चाहिए. इस समय सूरज डूब जाता है और गर्मी भी थोड़ी कम हो जाती है.

सुबह के समय वॉक करने के फायदे

अगर आप सुबह के समय यानी 5 से 7 बजे के बीच वॉक करते हैं तो इससे शरीर को विटामिन डी मिलने में मदद मिलती है, जिससे मेटाबॉलिज्म भी बेहतर रहता है. इस समय हवा में पॉल्युशन भी कम होता है और मौसम भी अच्छा रहता है. सुबह की वॉक डाइजेस्टिव सिस्टम को भी बेहतर बनाती है, जिससे कब्ज जैसी समस्याएं से राहत मिलती है.

शाम के समय वॉक करने के फायदे

शाम के समय में वॉक करने से शरीर को ठंडक मिलती है क्योंकि इस धूप नहीं होती और मौसम में गर्मी भी थोड़ी कम हो जाती है. शाम की वॉक दिनभर की थकान और स्ट्रेस को कम करने में भी हेल्प करती है.

वॉक करते समय ध्यान रखने वाली बातें

हाइड्रेट रहें– जब भी आप मॉर्निंग या इविनिंग वॉक पर जाएं तो हमेशा अपने साथ एक पानी

फिट रहने के लिए अमूमन लोग वॉक पर जाते हैं. गर्मियों के मौसम में भी अक्सर लोग शाम के समय या सुबह वॉक करते हैं. लेकिन क्या आप जानते हैं कि गर्मियों में वॉक करने का सही समय क्या है? चलिए इस आर्टिकल में आपको बताते हैं.

की बोतल लेकर जाएं और थोड़ी–थोड़ी देर पर पानी पीते रहें. लगातार चलने की वजह से शरीर से पसीना बहता जिससे डिहाइड्रेशन हो सकती है. हाथों को स्विंग करें– वॉक करते समय अक्सर कुछ लोग हाथों को हिलाते नहीं है. जबकि वॉकिंग के दौरान हाथों को स्विंग करते रहना चाहिए. ऐसा करने से पूरा शरीर एक्टिव रहता है.

मोबाइन फोन का न करें इस्तेमाल– कुछ लोगों को वॉक करते समय मोबाइल चलाने की आदत होती है, जो सही नही है. क्योंकि चलते वक्त नीचे देखते हुए मोबाइल चलाने से बॉडी पोस्चर खराब हो सकता है.

गर्मी में पपीता खाना चाहिए या नहीं? जानें इसके फायदे और नुकसान

पपीता सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है, खासकर के कब्ज जैसी समस्या में इसे खाने की सलाह दी जाती है. लेकिन पपीता की तासीर गर्म होती है. ऐसे में इसे गर्मी में खाने फायदेमंद होता है या नहीं, आइए जानते हैं इसके बारे में एक्सपर्ट से

एजेंसी

पेट से जुड़ी समस्या में केला और पपीते जैसे फल खाने की सलाह दी जाती है. पपीता में पपैन नाम का एंजाइम होता है, जो प्रोटीन को तोड़ने में मदद करता है और इससे पाचन को बेहतर बनाने में मदद मिलती है. ऐसे में जिन लोगों को कब्ज की समस्या रहती है उन्हें पपीता खाने की सलाह दी जाती है. यह और भी कई तरह से सेहत के लिए फायदेमंद होता है.

लेकिन पपीते की तासीर गर्म होती है. ऐसे में इसे गर्मी के मौसम में खाना चाहिए या नहीं इसे लेकर कई लोगों के मन में यह सवाल जरूर आता है कि क्या गर्मियों में इसे खाना सही है या फिर इससे सेहत को नुकसान पहुंच सकता है. क्योंकि इस समय ठंडी तासीर वाले फल खाने चाहिए, जिससे शरीर को ठंडक मिले. ऐसे में क्या गर्मी में पपीता खाना चाहिए या नहीं३ आइए जानते हैं इसके बारे में एक्सपर्ट से

क्या कहते हैं एक्सपर्ट?

मेरठ की डाइटिशियन आयशा परवीन ने बताया कि पपीते की तासीर हल्की गर्म मानी जाती है, लेकिन यह शरीर को ठंडक पहुंच। ाने वाला भी फल है, खासकर जब इसे पका हुआ खाया जाए. गर्मियों में पपीता खाना सेहत के लिए फायदेमंद होता है क्योंकि इसमें पानी की मात्रा ज्यादा होती है, जिससे शरीर को हाइड्रेट रखने और लू से बचाव करने में मदद मिलती है. पीता पाचन क्रिया के लिए फायदेमंद होता है. इससे कब्ज की समस्या को दूर करने और इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने में मदद मिलती है. पपीते में मौजूद एंजाइम्स पेट को साफ रखने में मदद करते हैं. इसके साथ ही ये स्किन को ग्लोइंग बनाने में भी मददगार होता है. पपीता वजन कम करने वाले लोगों के लिए भी एक अच्छा विकल्प है क्योंकि इसमें कैलोरी कम और फाइबर ज्यादा मात्रा में होता है.

किन लोगों को नहीं खाना चाहिए पपीता?

एक्सपर्ट का कहना है कि पपीता की तासीर गर्म होती है जिसकी वजह से कुछ लोगों को इसे ज्यादा मात्रा में खाने से एसिडिटी और गैस की समस्या हो सकती है. खासकर गर्भवती महिलाओं को पपीता खाने से पहले डॉक्टर की सलाह लेनी चाहिए. गर्मी में पपीते के साथ छाछ, दही और खीरा जैसी ठंडी चीजें खाना सही रहता है. ऐसा करने से शरीर में गर्मी असर होगा और बैलेंस बना रहेगा.

सुबह खाली पेट पपीता खाना फायदेमंद होता है, लेकिन जिन लोगों को इससे एलर्जी या इसे खाने से पेट में जलन हो तो तुरंत इसका सेवन बंद कर देना चाहिए. जिन लोगों को एसिडिटी या पेट में जलन रहती है, उन्हें खाली पेट पपीता नहीं खाना चाहिए. पपीता गर्मी में खाना सही है लेकिन इसे सीमित मात्रा में और सही तरीके से ही खाना चाहिए.

गर्मी में सुबह चेहरे पर लगाएं ये चीजें, दिनभर स्किन रहेगी फ्रेश

एजेंसी

गर्मी में अपनी स्किन का ख्याल रखना बहुत जरूरी है. क्योंकि इस समय तेज धूप, पसीना और उमस भरी गर्मी के कारण स्किन से जुड़ी कई तरह की समस्या हो सकती हैं. इनमें जलन और रेडनेस जैसी समस्या हो सकती है. इसके अलावा गर्मी और पसीना चेहरे के कारण चेहरा डल नजर आने लगता है.

ऐसे में आपको सही स्किन केयर रूटीन फॉलो करना बहुत जरूरी है. तेज गर्मी में आप घर पर मौजूद कुछ चीजों को चेहरे पर लगा सकते हैं. जिससे आपका चेहरे को ठंडक मिले आपकी स्किन सॉफ्ट रहे. आइए जानते हैं उन नेचुरल चीजों के बारे में जो आप सुबह स्किन पर लगा सकते हैं.

आप रोज वॉटर का टोनर की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं. फेस वॉश के कॉटन की मदद से रोज वाटर चेहरे पर लगाएं. इससे स्किन को हाइड्रेट और पोर्स को टाइट करने में मदद करता है.

से नेचुरल टोनर भी कहा जा सकता है,जो स्किन को ताजगी प्रदान करता है और गर्मी के कारण स्किन पर होने वाली जलन को भी कम कर सकता है.

सुबह फेस वॉश करने के बाद आप एलोवेरा जेल चेहरे पर लगा सकते हैं. इस स्किन के लिए ठंडक पहुंचाने के साथ ही सॉफ्ट और ग्लोइंग बनाए रखने में मदद करता है. अगर आपकी स्किन ऑयली है, तो एलोवेरा जेल एक आपके लिए लाइट मॉइश्चराइजर की तरह काम करेगा और आपकी स्किन चिपचिपी नहीं लगेगी.

झारखंड में मिला 14 करोड़ साल पुराना 'खजाना', देखते ही खुशी से उछल पड़े वैज्ञानिक, बताया क्या होगा इससे फायदा

एजेंसी

झारखंड में भूवैज्ञानिकों के हाथ एक अनोखा 'खजाना' लगा है, जो कि 14.5 करोड़ साल पुराना बताया जा रहा है. भूविज्ञानी डॉ. रंजीत कुमार सिंह और वन रेंजर रामचंद्र पासवान ने इस बारे में जानकारी दी. उन्होंने बताा कि मंगलवार को पाकुड़ जिले के बरमसिया गांव में एक महत्वपूर्ण खोज सामने आई हैं. यहां पर एक पेट्रोफाइड जीवाश्म की खोज की गई है. टीम ने एक विशाल वृक्ष के जीवाश्मकृत अवशेषों को पहचाना, जो 10 से 14.5 करोड़ वर्ष पूर्व के हो सकते हैं. यह खोज न केवल वैज्ञानिक समुदाय के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि स्थानीय समुदाय के लिए भी गर्व का विषय है, क्योंकि यह क्षेत्र की प्राचीन प्राकृतिक विरासत को उजागर करता है. यह जैविक इतिहास को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है.

डॉ. सिंह ने बताया कि इस क्षेत्र में और भी अनुसंधान की आवश्यकता है ताकि जीवाश्म की सटीक आयु और उसके पर्यावरणीय संदर्भ को समझा जा सके. उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि इस क्षेत्र को संरक्षित किया जाना चाहिए ताकि भविष्य की पीढ़ियां भी इस महत्वपूर्ण विरासत का अध्ययन और सराहना कर सकें.

इस खोज का क्या हो सकता है फायदा?

वन रेंजर रामचंद्र पासवान ने स्थानीय समुदाय से अपील की है कि वे इस क्षेत्र की सुरक्षा में सहयोग करें और किसी भी अवैध गतिविधि से बचें जो इस महत्वपूर्ण स्थल को नुकसान पहुंचा सकती हैं. उन्होंने यह भी कहा कि इस खोज से क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा मिल सकता है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ होगा. इस खोज के बाद भू–वैज्ञानिक व प्रकृति पर्यावरण के शोधार्थी व अन्य इस क्षेत्र का विस्तृत सर्वेक्षण अध्ययन करने की योजना बनाई है, ताकि और भी महत्वपूर्ण जानकारियां एकत्रित की जा सकें और क्षेत्र की भू वैज्ञानिक हलचल घटना पर्यावरण संरक्षण जैव विविधता और भूवैज्ञानिक इतिहास को संरक्षित किया जा सके.

आसपास की चट्टानों से बिल्कुल अलग

डॉ. रणजीत कुमार सिंह का मानना है कि पाकुड़ जिला पेट्रोफाइड फॉसिल का धनी है. बताया कि इस क्षेत्र के विज्ञान और वैज्ञानिक समझ में रूचि रखने वाले आम लोगों के लिए संरक्षित और संरक्षित करने की सख्त जरूरत है.

इसे लेकर झारखंड वन विभाग के प्रभागीय वनाधिकारी मनीष तिवारी के साथ भू–विरासत विकास योजना का प्रस्ताव रखा जा रहा है. बताया कि स्थानीय ग्रामीणों, प्रशासकों, वन विभाग, झारखंड राज्य के इकोटूरिज्म के साथ बातचीत की और इस क्षेत्र में एक अलग जियोपार्क कैसे विक. सित किया जा सकता है, इस पर चर्चा की जा रही है.

सांप के जहर का टेस्ट कैसा होता है? मौत के मुंह से बाहर निकले इस शख्स ने किया खुलासा

एजेंसी

सांप के विष का टेस्ट कैसा होता है? ब्रिटेन के रेव पार्टी में जाने वाले एक शख्स ने इसका खुलासा किया है. 23 साल के इस शख्स केटामाइन के लत से डॉक्टरों ने बाहर निकाला है. पुलिस और परिवार का कहना है कि यह शख्स जहरीले नशे के लिए रोज करीब 9 हजार रुपए खर्च कर रहा था. द मिरर की रिपोर्ट के मुताबिक डरहम के फर्गस थॉम्पसन नामक शख्स 17 साल की उम्र से ही रेव पार्टी में जाने लगा. यहां उसने दोस्तों के साथ सांप के जहर जैसे केटामाइन का इस्तेमाल करने लगा. केटामाइन के इस्तेमाल पर फर्गस हर महीने करीब 2 लाख 66 हजार रुपए खर्च करता था.

केटामाइन जहर और सांप का विष

यह एक जहर है, जो किसी दर्द को राहत देने के लिए दिया जाता है. साइंस पत्रिका के मुताबिक अफ्रीकी देशों में इसका इस्तेमाल सांप के जहर को खत्म करने के लिए किया जाता है. सांप के विष में आम तौर पर हीमोटॉक्सिक या न्यूरोटॉक्सिक पदार्थ होता है, जिसे केटामाइन आसानी से खत्म कर देता है. मान्य है कि इसके भीतर सांप के जहर इतना ही विष होता है.

दुनिया के कई देशों में सार्वजनिक तौर पर इसके सेवन पर प्रतिबंध लगाया गया है. इसे खतरनाक ड्रग्स माना जाता है.

फर्गस ने क्या–क्या बताया?

रिपोर्ट के मुताबिक सांप के विष जैसे पदार्थ को लेने के बाद उसे खूब नींद आती थी. धीरे–धीरे इसके सेवन की रफ्तार में भी बढ़ोतरी हुई. कुछ ही दिनों के भीतर उसके मूत्राशय में दिक्कत आ गई. देखते ही देखते उसके पूरे शरीर को केटामाइन ने चपेट में ले लिया.

फर्गस के मुताबिक इसके इस्तेमाल की वजह से उनके शरीर का मांस धीरे–धीरे खत्म होने लगा.

क्यों किटाणुओं का खात्मा 100 फीसदी संभव नहीं है? ये है इसका साइंस

क्या कभी आपने सोचा है कि कोई कीटाणुनाशक 99.9: कीटाणुओं को ही मारने का दावा क्यों करते हैं? 100 फीसदी क्यों नहीं? क्यों किसी भी कीटाणु को पूरी तरह से खत्म करना संभव नहीं है. जानिए इसके पीछे क्या साइंटिफिक वजह है? कीटाणु को मारने में किन अहम फैक्टर्स की भूमिका होती है?

एजेंसी

जब आप रसोई या बाथरूम में सफाई कर रहे होते हैं और आपके हाथ में कीटाणुनाशक होता है, तब क्या आपने इस बात पर गौर किया है कि लेबल हमेशा 99.9: या 99.99: कीटाणु खत्म करने की बात करता है? लेकिन 100: का दावा कहीं नहीं दिखता! यह कोई मार्केटिंग चाल नहीं है, बल्कि इसके पीछे एक गहरा वैज्ञानिक कारण छिपा है.

दरअसल, यूएस फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (थ्क।) और सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल (ब्क्ब) जैसे संस्थानों ने कीटाणुनाशकों के प्रभाव को मापने और उसकी सीमाओं को तय करने के लिए खास गाइडलाइंस बनाई हैं. माइक्रोबायोलॉजी और गणित के मुताबिक, हर कीटाणु को खत्म करना लगभग असंभव है, क्योंकि जीवाणु और वायरस बहुत छोटी संख्या में भी एक्टिव हो सकते हैं.

कीटाणुनाशक क्या है?

कीटाणुनाशक एक ऐसा पदार्थ है जिसका इस्तेमाल निर्जीव वस्तुओं पर बैक्टीरिया, वायरस और अन्य कीटाणुओं को मारने के लिए किया जाता है. हमारे घरेलू वातावरण में सतहों और वस्तुओं पर अनगिनत कीटाणु होते हैं. ज्यादातर कीटाणु हानिकारक नहीं होते हैं लेकिन ये चीजें हमें बीमार कर सकती है. केमिकल कीटीणुनाशकों में अक्सर एल्कोहल, क्लोरीन और हाइड्रोजन पैरॉक्साइड को मिलाया जाता है और इससे विभिन्न कीटाणुओं को मारने का काम किया जाता है.

क्यों 99.9: कीटाणु मारते हैं कीटाणुनाशक

इसे ऐसे समझिए कि अगर 100 बैक्टीरिया की कॉलोनी हर घंटे दोगुनी हो जाती है तो 24 घंटे में बैक्टीरिया की आबादी 1.5 अरब से अधिक हो जाएगी.

मगर इन बैक्टीरिया को खत्म करने का प्रोसेस ठीक उल्टा होता है उदाहरण के लिए, अगर कोई कीटाणुनाशक हर मिनट 90 फीसदी बैक्टीरिया को मारता है, तो एक मिनट के बाद, मूल बैक्टीरिया का केवल 10 फीसदी ही बचेगा. अगले मिनट के बाद, बचे 10 फीसदी का 10 फीसदी बचेगा जो मूल मात्रा का मात्र एक फीसदी होगा. यह सिलसिला आगे चलता रहेगा. इसी लॉगरिदमिक डिके पैटर्न की वजह से कोई भी कीटाणुनाशक इस बात का दावा नहीं कर सकता कि 100 प्रतिशत कीटाणु खत्म हो गए हैं.

इसी वजह से सभी कीटाणुनाशक और सैनिटाइजर वाले प्रोडक्ट्स 99 फीसदी कीटाणु मारने का ही वादा करते हैं

सभी कीटाणुओं का खात्मा संभव नहीं

जब लैब की दुनिया से बाहर असली ज़िंदगी में कीटाणुनाशकों का इस्तेमाल करते हैं, तो चीज़ें ज़रा पेचीदा हो जाती हैं. लैब में इस्तेमाल किए गए कीटाणु और असली ज़िंदगी के कीटाणु अलग होते हैं. कभी–कभी असली कीटाणु ज़्यादा शक्तिशाली होते हैं. तो कभी लैब वाले कमजोर. कीटाणुओं की शुरुआती गिनती मायने रखती है

सोचिए, आपके सामने दो सतहें हैं. पहली पर सिर्फ 100 कीटाणु हैं. दूसरी पर 1 अरब कीटाणु. अगर आप एक ऐसा कीटाणुनाशक इस्तेमाल करते हैं जो 99.9: कीटाणु मारता है तो पहली सतह पर आप लगभग सभी कीटाणुओं से छुटकारा पा लेंगे. इसे हम स्टरलाइजेशन कहते हैं. लेकिन दूसरी सतह पर, 99.9: मारने के बावजूद 10 लाख कीटाणु बच सकते हैं. यानि जितना ज्यादा संक्रमण, उतना ज़्यादा मेहनत.

न चीन न अमेरिका... भारत न होता तो कभी चांद पर न पहुंचती दुनिया

एजेंसी

चांद पर पहुंचने की होड़ लगी है, अमेरिका, रूस चीन और भारत ये चार देश ऐसे हैं जो चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग कर चुके हैं, बेशक इस होड़ में भारत चौथे स्थान पर रहा, लेकिन अगर भारत न होता तो बाकी तीनों देश कभी चांद पर नहीं पहुंच पाते. सुनने में भले ही ये अटपटा लगे लेकिन ये ऐसा सच है जिसे दुनिया भी मानती है. दरअसल एक समय ऐसा था जब न चांद से धरती की दूसरी के बारे में अंदाजा था और न ही इसकी गणना करने का तंत्र, मगर भारत के महान गणितज्ञ आर्यभट्ट ने दशमलव की खोज करके ये गणना आसान कर दी थी. दशमलव ही वो खोज थी, जिसने दुनिया के कई देशों के लिए चांद पर पहुंचने का रास्ता बनाया. आइए समझते हैं कैसे.

1–सटीक गणना

स्पेस से संबंधित जो भी गणनाएं हैं वे बहुत ही सटीक होना जरूरी है, ऐसा दशमलव से ही संभव है, क्योंकि किसी भी अंतरिक्ष अभियान में गलती की कोई गुंजाइश नहीं होती. ऑर्बिट की स्थिति, उपग्रहों की गति, रॉकेट में ईंधन की मात्रा, लैंडिंग साइड समेत तमाम चीजों की गणना दशमलव से ही की जाती है. उदाहरण के लिए अगर चांद पर कोई मिशन भेजा गया, उसमें एक दशमलव की भी गलती हुई तो वो मिशन को असफल कर सकती है.

2– नेविगेशन में महत्व

किसी भी स्पेस यान और सैटेलाइट की ऑर्बिट निर्धारित करने के लिए न्यूटन और कैपलर के नियमों के आधार पर गणनाएं होती हैं, इनमें भी दशमलव सबसे महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यदि इसमें गलती हुई तो स्पेसक्राफ्ट अपने लक्ष्य से भटक जाएगा और मिशन बेकार जाएगा.

3– समय की गणना

स्पेस में समय की गणना नैनो सेकेंड में होती है नैनो सेकेंड यानी 0.000000001 सेकंड तक इसकी गणना करना दशमलव के बिना संभव ही नहीं है, इसके अलावा ट्रांसमिशन में भी दशमलव का बहुत महत्व है, इससे ही स्पेस से कोई भी सूचना या जानकारी धरती तक पहुंचती है.

4– रॉकेट साइंस और फ्यूल

किसी भी रॉकेट को उसके लक्ष्य के हिसाब से तय समय पर ही लॉन्च किया जाता है, मसलन अगर इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन तक कोई रॉकेट जाएगा तो ये देखा जाएगा कि यह स्पेस स्टेशन धरती के सबसे करीब कब होगा. इस लिहाज से रॉकेट को उस समय पर लॉन्च किया जाएगा, कि जब तक ये आईएसएस तक पहुंचे तब तक स्पेस स्टेशन धरती के करीब हो, इसकी गणना के लिए जो मैथड अपनाया जाता है वह दशमलव के बिना संभव नहीं.

मॉर्निंग वॉक पर जाते समय की ये गलतियां, तो नहीं होगा फायदा

एजेंसी

इस भाग–दौड़ से भरी जिंदगी में खुद के लिए समय निकालना मुश्किल हो गया है. अपने बिजी लाइफस्टाइल के कारण लोग अपनी सेहत को नजर. अंदाज करते रहते हैं. लेकिन अपने लिए कुछ समय निकालना बहुत जरूरी है, जिससे आपको फिट रहने में भी मदद मिले. ऐसे में कई लोग सुबह उठकर मॉर्निंग वॉक पर जाना पसंद सकते हैं. खुली हवा में घूमने से अच्छा महसूस भी होता है और इससे फिट रहने में भी मदद मिलती है.

वॉक पर जाना हर उम्र के लोगों के लिए फायदेमंद होता है. तभी कहा जाता है कि अगर आप एक्सरसाइज नहीं कर सकते तो आप कुछ देर वॉक पर भी जा सकते हैं. पर क्या आप जानते हैं कि कोई भी वर्कआउट शुरू करने से पहले आपको उसे करने का सही तरीका पता होना चाहिए. इसी तरह मॉर्निंग वॉक के समय में आपको कुछ बातों का ख्याल रखना चाहिए. क्योंकि इन गलतियों को दोहराने से वॉक से फायदे की जगह पर नुकसान भी हो सकता है.

पानी न पीना

अक्सर लोग वॉक पर जाने से पहले पानी पीना भूल जाते हैं. यह इसलिए हो सकता है कि आपको प्यास न लगी हो, लेकिन क्या आप जानते है डिहाइड्रेशन से आपकी सेहत को नुकसान पहुंच सकता है.

इसके कारण सिर में दर्द, चक्कर, थकान और पाचन से जुड़ी समस्या हो सकती है. किसी भी तरह का वर्कआउट करने से पहले पानी पीने से शरीर हाइड्रेटेड रहेगा और आप बेहतर तरीके से उस एक्सरसाइज को कर सकते हैं और ऐसा करने से आपके शरीर को ज्यादा फायदा भी होगा.

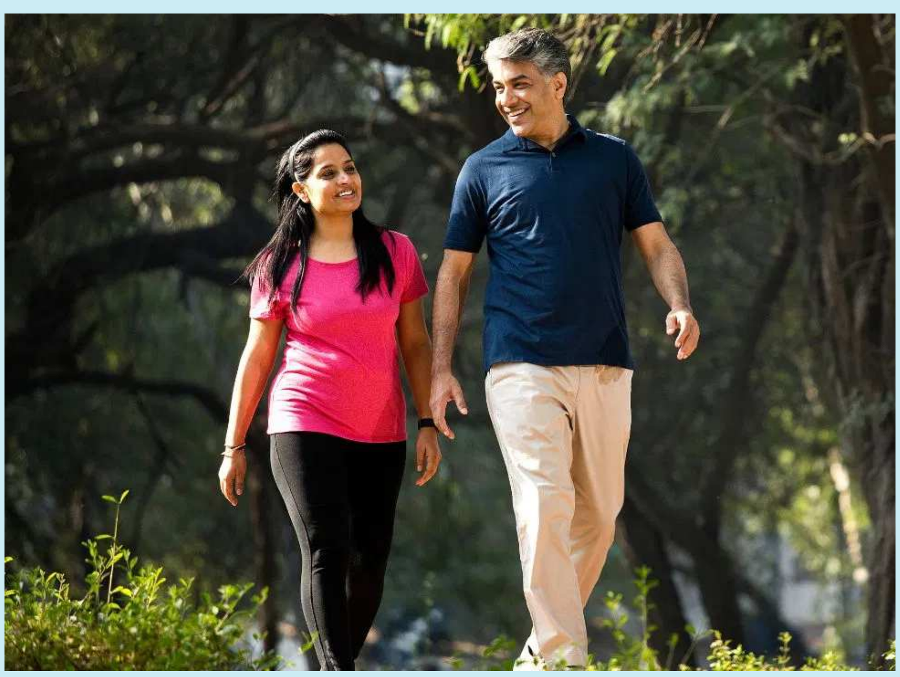

मॉर्निंग वॉक पर जाना सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है. लेकिन इस दौरान की गई किसी गलती के कारण आपको वॉक से सही फायदा नहीं मिल पाता है. इसलिए वॉक पर जाते समय इन गलतियों को करने से बचें.

खाली पेट वॉक पर जाना

ज्यादातर लोग सुबह उठते ही खाली पेट वॉक करने जाते हैं. लेकिन इससे पहले आपको कुछ खाना चाहिए. अगर आपको भी लगता है वॉक तो खाली पेट ही करनी चाहिए तो यह सही नही हैं. जो लोग सुबह उठते ही थकान महसूस करते हैं उन्हें वॉक पर जाने से पहले कुछ खाकर जाना चाहिए. अगर आपकी शुगर लो रहती या जल्दी थकावट महसूस होती है तो बिना कुछ खाए वॉक पर जाने से आपक ो कमजोरी महसूस या चक्कर आने जैसी समस्या हो सकती है.

आप सुबह कुछ ऐसी चीजें खा सकते हैं जिससे आपके शरीर को एनर्जी मिले. आप लाइट वेटफल खाने के बाद वॉक पर जाएं तो ज्यादा सही होगा.

कॉफी पीना

कुछ लोग अपने दिन की शुरुआत कॉफी से करना पसंद करते हैं लेकिन अगर आप वॉक पर जा रहे हैं तो आपको कॉफी नहीं पीनी चाहिए. क्योंकि कॉफी में मौजूद कैफीन आपको डिहाइड्रेटेड फील करवा सकता है. खाली पेट कॉफी पीने से आपको एसिडिटी और अपच की समस्या हो सकती है जो आपकी वॉक को बोरिंग बना सकती है.

इन बातों का रखें ध्यान

वॉक पर जाते समय आपको कंफर्टेबल जूते और कपड़े पहनने चाहिए. साथ ही वॉक करते समय अपने साथ पानी भी लेकर जाना चाहिए. इसके अलावा अगर आप ब्रिस्क वॉक कर रहे हैं तो उससे पहले 5 मिनट के लिए स्ट्रेचिंग करना फायदेमंद होता है. साथ ही सही स्पीड में वॉक करें. जिससे आपको जल्दी थकावट न हो.

जम्मू लद्दाख विज़न

सोमवार, जम्मू, 28 जुलाई, 2025 | 14

www.jammuladakhvision.com

इंडोर स्टेडियम बारामूला में अंडर-19 जिला स्तरीय टूर्नामेंट उत्साह के साथ शुरू

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

बारामूला : अंतर-विद्यालय जिला स्तरीय अंडर-19 बालक खेल प्रतियोगिता का उद्घाटन आज इंडोर स्टेडियम ख्वाजा बाग, बारामूला में बड़े उत्साह और उत्सव के साथ किया गया।

युवा सेवा एवं खेल विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का भव्य उद्घाटन समारोह बारामुल्ला के उपायुक्त (डीसी) मिंगा शेरपा की अध्यक्षता में हुआ।

यह टूर्नामेंट जिले भर के विभिन्न सरकारी और निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की 19 टीमों को एक साथ लाता है, जो युवा एथलीटों को अपनी प्रतिभा और खेल के प्रति जुनून दिखाने के लिए एक उत्साही मंच प्रदान करता है। यह आयोजन कल तक जारी रहेगा, जिसमें ऊर्जा और खेल भावना से भरपूर प्रतिस्पर्धी मैच होंगे।

उद्घाटन समारोह एक औपचारिक शपथ ग्रहण समारोह के साथ शुरू हुआ, जहां प्रतिभागियों ने अनुशासन, निष्पक्ष खेल और एकता के मूल्यों को बनाए रखने की शपथ ली, जिससे एक अखंडता पर आधारित टूर्नामेंट की नींव रखी गई।

अपने मुख्य भाषण में, उपायुक्त ने जमीनी स्तर पर खेलों को बढ़ावा देने के लिए युवा सेवा एवं खेल विभाग के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने युवाओं के व्यक्तित्व और भविष्य को आकार देने में खेलों की महत्वपूर्ण भूमिका पर ज़ोर दिया और प्रतिभागियों से प्रतिबद्धता, सम्मान और लचीलेपन के साथ प्रतिस्पर्धा करने का आग्रह किया।

जम्मू-कश्मीर पीसीसी ने एसयूपी के इस्तेमाल को रोकने के लिए श्रीनगर क्षेत्रों में बड़ा अभियान शुरू किया

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

श्रीनगर : संभाग में एकल उपयोग प्लास्टिक (एसयूपी) के उपयोग पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, जम्मू-कश्मीर प्रदूषण नियंत्रण समिति (जेएंडकेपीसीसी) कश्मीर की टीमों ने कश्मीर में प्रतिबंधित पॉलीथीन के गोदामों पर कई छापे मारे।

ये छापे क्षेत्रीय निदेशक जेकेपीसीसी कश्मीर के समग्र मार्गदर्शन और निर्देशों और जिला अधिकारी (डीओ) श्रीनगर, पीसीसी कश्मीर की अध्यक्षता में षिश्व पर्यावरण दिवस, 2025ष और श्विश्व स्तर पर प्लास्टिक प्रदूषण को मात देंश थीम के तहत की गई गतिविधियों के हिस्से के रूप में किए गए थे।

अभियान के तहत, श्रीनगर के डीओ के नेतृत्व में एक निर्दिष्ट टीम ने टेंगपोरा बाईपास के पास स्थित एक गोदाम पर छापा मारा, जहाँ से कुल 115 बैग, जिनमें से प्रत्येक का वजन 25 किला. `ग्राम था, जब्त किए गए। जब्त सामग्री का कुल वजन 2875 किलोग्राम है।

इसी प्रकार, विशिष्ट और विश्वसनीय सूचना प्राप्त होने पर डीओ सार्जेंट ने अपनी टीम के साथ श्रीनगर के परिमपोरा के पास स्थित गोदाम पर छापा मारा, जहां से लगभग 5380 किलोग्राम वजन की प्रतिबंधित पॉलीथीन जब्त की गई।

इस प्रकार प्रचलन से पहले ही 8255 टन अवैध पॉलीथीन जब्त कर लिया गया। पॉलीथीन विरोधी अभियान के दौरान, टेंगपोरा बाईपास के पास एक लक्षित छापेमारी की गई, जहां डीओ सार्जेंट ने अपनी टीम के साथ मौके पर 2.5 टन पॉलीथीन जब्त किया।

जल जीवन मिशन के एमडी ने भूजल आधारित योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

श्रीनगर : जल जीवन मिशन (जेजेएम) के मिशन निदेशक खुर्शीद अहमद शाह ने आज श्रीनगर के सिविल सचिवालय में कश्मीर प्रांत के जल शक्ति (पीएचई) सर्किलों और डिवीजनों की समीक्षा बैठक बुलाई।

यह बैठक कश्मीर प्रांत में क्रियान्वित की जा रही भूजल आधारित योजनाओं की प्रगति पर चर्चा के लिए बुलाई गई थी।

बैठक में कश्मीर प्रांत के हाइड्रोलिक सर्किलों के अधीक्षण अभियंता और उत्तर व दक्षिण कश्मीर के मैकेनिकल अधीक्षण अभियंता, सिविल डिवीजनों के कार्यकारी अभियंता और भूजल डिवीजन में उनके मैकेनिकल समकक्ष के अलावा मिशन निदेशालय में तकनीकी सलाहकार कश्मीर और अन्य अधिकारी शामिल हुए।

अधिशासी अभियंता भूजल प्रभाग श्रीनगर ने इस संबंध में एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने बैठक में बताया कि सफलतापूर्वक खोदे गए अधिकांश नलकूप संबंधित क्षेत्रीय प्रभाग को सौंप दिए गए हैं और शेष आवंटित नलकूपों की खुदाई का कार्य जारी है।

मिशन निदेशक ने भूजल प्रभाग श्रीनगर के अधिकारियों को उन जिलों में और अधिक ड्रिलिंग रिग लगाने को कहा जहाँ भूजल आधारित योजनाएँ पर्याप्त संख्या में हैं। उन्होंने भूजल प्रभाग श्रीनगर के कार्यकारी अभियंता को उन स्थलों पर रिग और मानव संसाधन तैनात करने का भी निर्देश दिया जहाँ सिविल समकक्षों द्वारा चिन्हित नए स्थलों पर नलकूपों की ड्रिलिंग के लिए आवंटन किया गया है। उन्हें बताया गया कि कुछ जिलों में मानव संसाधन और मशीनरी तैनात कर दी गई है और आने वाले हफ्तों में और अधिक रिग लगा दिए जाएँगे ताकि सर्दियों के मौसम की शुरुआत से पहले इन नलकूपों की ड्रिलिंग करके उन्हें सिविल प्रभागों को सौंप दिया जाए।

अधीक्षण अभियंता मैकेनिकल और सिविल दोनों ने अपने-अपने क्षेत्राधिकार में जल जीवन मिशन के कुशल कार्यान्वयन के संबंध में सुझाव दिए।

डीसी शोपियां ने ज़ैनापोरा उप-मंडल में व्यापक निरीक्षण किया

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

शोपियां : श्रीनगर के डिप्टी कमिश्नर (डीसी) शिशिर गुप्ता ने ज़ैनापोरा उपखंड का गहन और व्यापक निरीक्षण किया, भूमि रिकॉर्ड रखरखाव की समीक्षा की और विभिन्न विकास परियोजनाओं की देखरेख की। डीसी ने अपने दौरे की शुरुआत ज़ैनापुरा स्थित तहसील कार्यालय का दौरा करके की, जहाँ उन्होंने रोज़नामा, गिरदावरी, जमाबंदी, म्यूटेशन रजिस्टर और पार्टल सहित भूमि अभिलेखों की सटीकता और रखरखाव का आकलन किया। सटीक और समय पर रिकॉर्ड रखने के महत्व पर ज़ोर देते हुए, उन्होंने अधिकारियों को इन महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों को नियमित रूप से अद्यतन और रखरखाव सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

इसके बाद उन्होंने लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) प्रभाग ज़ैनापोरा के अंतर्गत चल रहे मैकडैमाइज़ेशन कार्यों का निरीक्षण किया और उनकी प्रगति एवं गुणवत्ता का आकलन किया।

उन्होंने जल जीवन मिशन के अंतर्गत रेबन में हाल ही में पूरी हुई जलापूर्ति योजना की भी समीक्षा की और उसकी कार्यक्षमता एवं प्रभाव का मूल्यांकन किया। इसके अतिरिक्त, डीसी ने बाग. वानी विभाग द्वारा प्रबंधित जैनापोरा नहर और नर्सरी का दौरा किया तथा उनकी स्थिति और प्रबंधन का निरीक्षण किया।

उन्होंने विकास परियोजनाओं में गुणवत्ता आश्वासन की आवश्यकता पर बल दिया तथा मानदंडों और मानकों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक लेखा परीक्षा की वकालत की। उन्होंने जल आपूर्ति-मांग नेटवर्क की भी समीक्षा की तथा संसाधन उपयोग को अनुकूलतम बनाने के लिए जल बजट के महत्व पर बल दिया। जैनापोरा नहर की उचित ढंग से सफाई करके उसकी मरम्मत और रखरखाव के निर्देश जारी किए गए, ताकि नहर का कुशल संचालन सुनिश्चित हो सके।

इस अवसर पर एडीसी डॉ. जाकिर हुसैन फाज, एसडीएम, डीआईओ, बीडीओ, एईई जल शक्ति, पीडब्ल्यूडी के अधिकारी और अन्य हितधारक उपस्थित थे।

मंडलायुक्त कश्मीर ने स्वतंत्रता दिवस समारोह और तिरंगा रैली की तैयारियों की समीक्षा की

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

श्रीनगर : आगामी स्वतंत्रता दिवस के मद्देनजर, कश्मीर के संभागीय आयुक्त (डिवकॉम) विजय कुमार बिधूड़ी ने राष्ट्रीय पर्व के जश्न की पूरी व्यवस्था की रूपरेखा तैयार करने के लिए बुधवार को एक बैठक बुलाई।

आईजीपी कश्मीर वीके बिरदी के अलावा बैठक में डीआईजी कश्मीर, डिप्टी कमिश्नर, एसएसपी और विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए, जिनमें फ्लोरीकल्चर, कॉलेज, स्कूल शिक्षा, एसएम, केपीडीसीएल, आरएंडबी, पीएचई, स्वास्थ्य, जेकेएएसीएल, वाईएसएंडएस, सूचना, आतिथ्य, परिवहन, एमईडी, यातायात पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां शामिल हैं।

बैठक के दौरान, मंडलायुक्त ने अधिकारियों को स्वतंत्रता दिवस के उत्सव को बड़े उत्साह के साथ मनाने के लिए निर्बाध और पूर्ण तैयारियां सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

उन्होंने विस्तृत व्यवस्था के लिए कई निर्देश जारी किए, जिनमें वायुसेना द्वारा पुष्प वर्षा, सरकारी भवनों की रोशनी, परेड और बैंड टुकड़ियों का गठन, सुरक्षा पास जारी करना, नोडल अधिकारियों की नियुक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन, कमेंटेटरों का नामांकन, बैठने और सुरक्षा व्यवस्था करना शामिल है।

इसके अलावा, उन्होंने मुख्य स्थल पर निर्बाध बिजली आपूर्ति, पानी के डिस्पेंसर की स्थापना, साफ-सफाई और स्वच्छता के अलावा उचित यातायात प्रबंधन, चिकित्सा कर्मचारियों की तैनाती और अन्य आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

इसके अलावा, मंडलायुक्त ने राष्ट्रीय ध्वज फहराने और राष्ट्रगान गाने के दौरान प्रोटोकॉल का पालन करने के बारे में प्रतिभागियों को शिक्षित करने के महत्व पर प्रकाश डाला।

उन्होंने प्रतिभागियों को कार्यक्रमों के क्रम के बारे में सूचित करने के महत्व पर बल दिया तथा पूरे संभाग में राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए एक समान कार्यक्रम बनाने का निर्देश दिया। इस बीच, उन्होंने 12 अगस्त को तिरंगा रैली के आयोजन की तैयारियों की भी समीक्षा की और रैली में भारी भागीदारी के अलावा प्रतिभागियों के लिए सुरक्षा और जलपान के व्यापक उपायों पर जोर दिया।

डीसी कुपवाड़ा ने हंदवाड़ा उप-मंडल में विकास परियोजनाओं का व्यापक जायजा लिया

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

कुपवाड़ा : विकासात्मक प्रगति में तेजी लाने और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के समय पर निष्पादन को सुनिश्चित करने के एक ठोस प्रयास में, उपायुक्त (डीसी) कुपवाड़ा, आयुषी सूदन ने आज विभिन्न चल रहे विकास कार्यों की समीक्षा के लिए हंदवाड़ा उप-मंडल का व्यापक दौरा किया।

दौरे के दौरान, उपायुक्त ने बटपोरा मागाम में चल रहे हाई स्कूल भवन और एचएसएस मागाम के लिए अतिरिक्त आवास निर्माण का निरीक्षण किया और संबंधित इंजीनियरों को कार्य की गति बढ़ाने और परियोजनाओं को निर्धारित समय सीमा के भीतर पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने हंदवाड़ा-मागाम सड़क के चल रहे विकास का भी निरीक्षण किया। डीसी के साथ अतिरिक्त उपायुक्त हंदवाड़ा जाविद नसीम मसूदी, सीपीओ, तहसीलदार हंदवाड़ा और आरएंडबी और पीएमजीएसवाई के कार्यकारी अभियंता भी मौजूद थे। उन्होंने जगरपुरा जलापूर्ति योजना और कवारी जल आपूर्ति योजना का भी जायजा लिया और संबंधित इंजीनियरों से योजना की स्थिति के बारे में जानकारी ली।

उन्होंने संबंधित इंजीनियरों को इन क्षेत्रों के लोगों को स्वच्छ पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए परियोजनाओं को शीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए। इसके बाद, डीसी ने संबंधित अधिकारियों के साथ एक बैठक की अध्यक्षता की, जिसमें हंदवाड़ा उप-मंडल में विकास परियोजनाओं को समय पर पूरा करने को सुनिश्चित करने के लिए विस्तृत चर्चा की गई।

वेमेध के एक और बीरबल ने ऐतिहासिक साहस की एक सशक्त गाथा से जम्मू को मंत्रमुग्ध कर दिया

पंडित बीरबल धर के साहस पर आधारित ऐतिहासिक नाटक कश्मीरी पंडित समुदाय से गहराई से जुड़ा

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

जम्मू : आलोचकों की प्रशंसा के साथ कई बार मंचित होने के बावजूद, वोमेध रंगमंच के ऐतिहासिक महाकाव्य, ष्एक और बीरबलष् की मांग कम नहीं हुई है, यह बात आज एक बार फिर साबित हुई जब खचाखच भरे अभिनव थिएटर में कश्मीरी पंडित समुदाय के ऐतिहासिक साहस और समकालीन दुविधाओं को प्रभावशाली ढंग से दर्शाने वाले एक प्रदर्शन ने मंत्रमुग्ध कर दिया। वेमेध द्वारा प्रस्तुत इस रिपर्टरी प्रोजेक्ट को ज़ोरदार तालियों से सराहा गया और इसने एक बार फिर विभिन्न संगठनों से इसके पुनः मंचन के अनुरोधों को प्रेरित किया है, जिससे यह एक ऐतिहासिक नाट्य प्रस्तुति के रूप में अपनी जगह पक्की कर रहा है।

इस अवसर पर जम्मू और कश्मीर कला, संस्कृति और भाषा अकादमी की सचिव एमएस हरविंदर कौर, जेकेएएस मुख्य अतिथि थीं।

प्रशंसित राकेश रोशन भट्ट द्वारा लिखित, ष्एक और बीरबलष् सिर्फ़ एक नाटक नहीं है; यह कश्मीरी इतिहास के एक महत्वपूर्ण, लेकिन अक्सर नज़रअंदाज़ किए गए नायक का पुनरुत्थान है। कश्मीर में 19वीं सदी के दमनकारी अफ़ग़ान दुर्रानी शासन की पृष्ठभूमि पर आधारित, यह नाटक पंडित बीरबल धर की साहसिक यात्रा का सूक्ष्मता से चित्रण करता है। यह नाटक उनकी रणनीतिक बुद्धिमत्ता और अपार व्यक्तिगत बलिदान को बखूबी दर्शाता है; जिसमें अपने ही बेटे को ज़मानत के तौर पर छोड़ना भी शामिल है; जब वे पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह से कश्मीर को आज़ाद कराने की विनती करने के एक ख़तरनाक मिशन पर निकलते हैं। यह दर्शाता है कि कैसे, धर्म परिवर्तन, मृत्यु या पलायन के कष्टदायक विकल्पों का सामना करते हुए, बीरबल धर ने एक चौथा, ज़्यादा साहसिक रास्ता चुनारू बुद्धि और दूरदर्शिता से पलटवार करना, और अंततः सिख साम्राज्य के माध्यम से कश्मीर घाटी का व्यापक भारतीय साम्राज्य में एकीकरण सुनिश्चित करना। रोहित भट्ट के कुशल निर्देशन में, कथा को गहन गहराई और भावनात्मक तीव्रता के साथ जीवंत किया गया है। डॉ. कुलदीप स्वदेशी द्वारा रचित भावपूर्ण संगीत और प्रसिद्ध कलाकार विरजी सुम्बली द्वारा डिज़ाइन किए गए शानदार, काल–उपयुक्त सेट के माध्यम से ऐतिहासिक माहौल को शानदार ढंग से पुनः निर्मित किया गया।

कलाकारों ने दमदार अभिनय किया जो इस प्रस्तुति की आत्मा बन गया। जतिंदर जोतशी ने अजीम खान की भूमिका निभाई, जबकि राहुल किलम ने मुख्य पात्र पंडित बीरबल धर की भूमिका में प्रभावशाली अभिनय किया। अरविन टिक्कू ने पंडित मिर्जा काक की भूमिका में शानदार अभिनय किया और वरिष्ठ पत्रकार एवं कलाकार किंग सी. भारती ने पंडित बासा राम की भूमिका में सम्मोहक अभिनय किया। कलाकारों की टोली को पंडित सुख राम के रूप में विनय पंडिता, महाराजा रणजीत सिंह के रूप में शाज़ी खान, अनवर खान के रूप में अजय बाबा, बीरबल की पत्नी के रूप में हिमागनी मोजा, राजा काक के रूप में कामाक्ष्या डोगरा, राज काक की पत्नी के रूप में सुप्रिया पंडिता और फूल सिंह के रूप में शम्मी धामीर ने शानदार सहयोग दिया। शशांक सिंह राजपूत और जंग बहादुर खान ने योद्धाओं के रूप में नाटकीय तनाव को और बढ़ा दिया।

इस भव्य मंचन का निर्बाध निष्पादन समर्पित बैकस्टेज टीम का प्रमाण था। नाटक राकेश रोशन भट्ट द्वारा लिखा गया था और कमल राजदान द्वारा प्रभावशाली ढंग से वर्णित किया गया था। संगीत डॉ. कुलदीप स्वदेशी द्वारा और निर्देशन रोहित भट्ट द्वारा किया गया था, तथा सेट डिज़ाइन विरजी सुम्बली द्वारा किया गया था। वेशभूषा भारती कौल द्वारा, प्रॉपर्टीज़ सुषमा कुमारी द्वारा, प्रकाश पंकज शर्मा द्वारा और ध्वनि लोकेश द्वारा कुशलतापूर्वक संभाली गई थी। शम्मी धामीर द्वारा मेकअप कुशलतापूर्वक किया गया था। परिसर के हॉल प्रबंधन का कुशल संचालन तारा चंद, विमल, अरुण, रिंकू जामवाल, शीतल, पूर्वी कलसी, नेहा शर्मा और तुषार शर्मा ने किया।

नोवा आईवीएफ फर्टिलिटी ने जम्मू में 100वां केंद्र स्थापित कर के नई तारीख दर्ज की

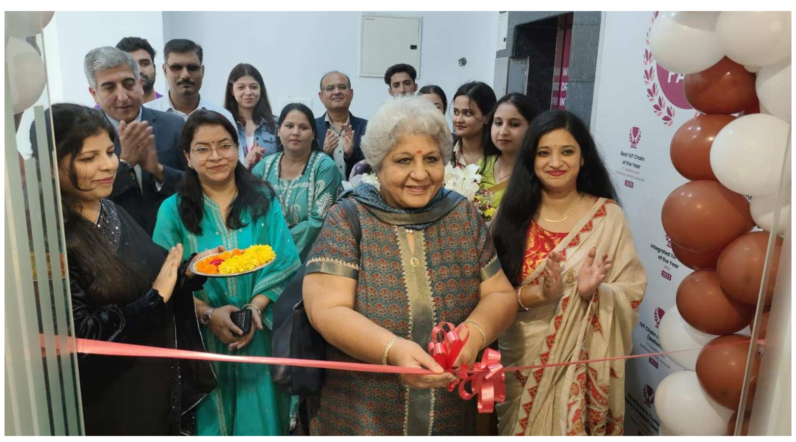

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

जम्मू : नोवा आईवीएफ फर्टिलिटी ने अपना 100वां केंद्र जम्मू में स्थापित कर लिया है, जिसका उद्देश्य क्षेत्र में बांझपन के इलाज को नज़दीक लाना है। जम्मू और कश्मीर में कुल प्रजनन दर (टीएफ़आर) 1.4 हो चुकी है जो जनसंख्या के स्थायित्व के स्तर 2.1 से काफ़ी कम है।

नोवा आईवीएफ फर्टिलिटी ने जम्मू में अपने 100वें केंद्र का उद्घाटन कर के देश भर में उच्च गुणवत्ता वाला प्रजनन इलाज आम जनता के करीब पहुंचाने के अपने संकल्प को और मजबूत किया है। जम्मू और कश्मीर में जन्म दर में स्पष्ट कमी देखी जा रही है, जहां कुल प्रजनन दर 1.4 तक पहुंच चुकी है, जो कि अपेक्षित स्तर 2.1 से बहुत कम है।

नोवा आईवीएफ के रीजनल बिज़नेस हेड, उत्तर भारत, समीर मलिक ने कहा कि ष्जम्मू में केंद्र का स्थापना नोवा के उस विज़न की झलक है जिसके तहत वह देश के हर कोने में गुणवत्तापूर्ण प्रजनन इलाज प्रदान करना चाहते हैं।ष् उन्होंने बताया कि नोवा के 63 शहरों में 100 केंद्र हैं, जिनमें उत्तर भारत के 21 शहरों में 28 केंद्र शामिल हैं। उन्होंने आगे कहा कि ष्शहरों से दूर रहने वाले जोड़े अक्सर इलाज की सुविधाओं की अनुपलब्धता के कारण देरी का शिकार हो जाते हैं। हमारा उद्देश्य यह है कि ऐसे जोड़ों को दूरदराज़ यात्रा न करनी पड़े और उन्हें समय पर इलाज मिल सके।ष्

डॉ. सोनिया मलिक, चीफ़ क्लिनिकल मेंटोर, नोवा आईवीएफ ने कहा कि ष्हम हर केंद्र में यूरोपीय मानकों के अनुसार क्लिनिकल और एम्ब्रियोलॉजी प्रोटोकॉल्स का पालन करते हैं, ताकि हर स्थान पर समान सुरक्षा और सफलता सुनिश्चित की जा सके।ष् नोवा आईवीएफ के अनुसार बांझपन के केसों में वृद्धि जीवनशैली में बदलाव के कारण हो रही है। सुस्त जीवनशैली, जंक फूड का बढ़ता उपयोग, और अन्य कारक इसके कारणों में शामिल हैं।

नोवा के जम्मू केंद्र में कार्यरत डॉ. पूनम पंडोत्रा ने बताया कि महिलाओं में अधिकतर बांझपन की वजहें च्ब्व्, अंडों की कम मात्रा और गुणवत्ता, और फैलोपियन ट्यूब्स की रुकावट होती हैं।

कभी–कभी यह छिपे हुए संक्रमण या जेनिटल टीबी का परिणाम भी हो सकता है। पुरुषों में लगभग 25 प्रतिशत मामलों में श्मेल फैक्टरश होता है, जिसमें कुछ मामलों में नशीले पदार्थों का सेवन भी शामिल होता है। उन्होंने कहा कि ष्जोड़ों को समय पर चिकित्सकीय परामर्श लेना चाहिए और इलाज में देर नहीं करनी चाहिए। जम्मू में स्थापित नोवा आईवीएफ केंद्र एक पूर्ण उपचार केंद्र है जिसमें आधुनिकतम तकनीक से युक्त प्रयोगशाला मौजूद है और यहां अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार इलाज दिया जाएगा।

प्रो. घारू राम और अरविंद गुप्ता ने भाजपा मुख्यालय में जनता दरबार लगाया

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

जम्मू : सुचेतगढ़ से विधायक प्रो. घारू राम भगत और जम्मू पश्चिम विधानसभा क्षेत्र से विधायक अरविंद गुप्ता ने जम्मू के त्रिकुटा नगर स्थित भारतीय जनता पार्टी मुख्यालय में जनता दरबार लगाया। इस दरबार में समाज के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले बड़ी संख्या में प्रतिनिधिमंडलों ने भाग लिया और अपनी गंभीर नागरिक और प्रशासनिक चिंताओं को व्यक्त किया।

विभिन्न क्षेत्रों के निवासियों ने अपनी शिकायतें प्रस्तुत कीं, जो मुख्य रूप से राजस्व विभाग, लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी (पीएचई), विद्युत विकास विभाग (पीडीडी), लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) और शहरी स्थानीय निकायों सहित प्रमुख लोक सेवा विभागों से संबंधित थीं। कई प्रतिनिधिमंडलों ने सुरक्षित और सुगम आवागमन सुनिश्चित करने के लिए सड़कों पर तत्काल बिजली की तारबंदी और मरम्मत कार्य की मांग की।

कई निवासियों ने पानी की कमी, बार–बार बिजली कटौती और वोल्टेज में उतार–चढ़ाव, स्ट्रीट लाइटों की खराबी, गलियों और नालियों की मरम्मत, स्वच्छता, राशन कार्ड, विभिन्न सरकारी लाभार्थी योजनाआ. ें से वंचित रहने आदि की शिकायत की।

प्रो. घारू राम और अरविंद गुप्ता ने प्रत्येक प्रतिनिधिमंडल की बात ध्यान से सुनी और शीघ्र कार्रवाई का आश्वासन दिया।

प्रो. घारू राम भगत ने प्रतिनिधिमंडलों को आश्वासन दिया कि उनकी समस्याओं को अनसुना नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा, ष्हम यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं कि लोगों की आवाज़ उचित मंचों तक पहुँचे। हर जायज़ समस्या पर संबंधित विभाग से संपर्क किया जाएगा और हम समय पर कार्रवाई सुनिश्चित करेंगे।

अरविंद गुप्ता ने कहा कि जनता दरबार पार्टी के लोगों से जुड़ाव को मज़बूत करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। प्रभावी शासन के लिए ज़मीनी स्तर पर नागरिक समस्याओं का समाधान आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि हम नागरिकों की सेवा के लिए पूरी तरह समर्पित हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि कोई भी शिकायत अनसुलझी न रहे।

जन सेवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए, दोनों नेताओं ने समय पर निवारण के महत्व पर ज़ोर दिया और वचन दिया कि सभी जायज़ शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर निपटारा किया जाएगा।

सत शर्मा ने जम्मू–कश्मीर भाजपा के नवनियुक्त मोर्चा के अध्यक्षों का अभिनंदन किया

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

जम्मू : भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जम्मू–कश्मीर के अध्यक्ष सत शर्मा ने आज नवनियुक्त महिला मोर्चा के अध्यक्ष एडवोकेट नोजिआ महाजन को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने पार्टी मुख्यालय में एक भव्य समारोह का आयोजन किया जिसमें उनका आवाहन किया गया और पूरे केंद्र में शामिल प्रदेश में महिला मोर्चा को अपनी क्षमता पर विश्वास व्यक्त करने के लिए आमंत्रित किया गया।

इस पर भाजपा उपाध्यक्ष रशपाल वर्मा, महासचिव संगीता डोगरा, सचिव रीमा पाधा और कई महिला मोर्चा मोर्चा के प्रमुख नेता शामिल थे और उन्होंने अवसर महासभा को अपनी सहमति दी। इससे पहले, सत शर्मा ने अन्य प्रमुख भाजपा मोर्चों के नवनियुक्त अध्यक्षों, अरुण प्रभात (भाजयुमो), ब्रह्म ज्योत (ओबीसी मोर्चा) और धर्मिंदर कुमार (एससी मोर्चा) को भी जम्मू–कश्मीर में पार्टी के चल रहे उग्रवादी बहाली के तहत उनके मनोयन के लिए बधाई दी थी।

सत शर्मा ने नगरोटा में भाजपा संगठनात्मक बैठक की अध्यक्षता की, बूथ और जमीनी स्तर पर मजबूती पर ज़ोर दिया

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

नगरोटा : जम्मू–कश्मीर भाजपा अध्यक्ष सत शर्मा ने आज नगरोटा विधानसभा क्षेत्र के मंडल दंसाल और मंडल नगरोटा की संगठनात्मक बैठक की अध्यक्षता की।

इस बैठक में शक्ति केंद्र, बूथ अध्यक्षों और पार्टी कार्यकर्ताओं ने भाग लिया, जिसका उद्देश्य पार्टी के जमीनी ढांचे को मज़बूत करना और क्षेत्र में संगठनात्मक कार्यों की समीक्षा करना था।

जम्मू–कश्मीर भाजपा महासचिव बलदेव सिंह बिलावरिया, जम्मू उत्तर ज़िला अध्यक्ष नंद किशोर शर्मा, सहप्रभारी विनय गुप्ता, विस्तारक इंद्रजीत शर्मा ने भी बैठक को संबोधित किया।

बैठक को संबोधित करते हुए, सत शर्मा ने कहा कि भाजपा को अपनी ताकत अपने जमीनी कार्यकर्ताओं के समर्पण से मिलती है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक कार्यकर्ता जनता की सेवा के हमारे मिशन का एक स्तंभ है। जनता के साथ नियमित संपर्क और जन कल्याणकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन प्रत्येक कार्यकर्ता की प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने पार्टी नेताओं को बूथ प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करने, स्थानीय मुद्दों को सुलझाने और प्रशासन व जनता के बीच सेतु का काम करने के लिए प्रोत्साहित किया।

शर्मा ने पार्टी नेताओं से जमीनी स्तर पर अपने प्रयासों को तेज़ करने और प्रत्येक नागरिक को सशक्त बनाने तथा एक मज़बूत, आत्मनिर्भर जम्मू–कश्मीर बनाने के पार्टी के मिशन के अनुरूप काम करने का आग्रह किया।

बलदेव सिंह बिलावरिया ने कहा कि पार्टी संगठन उतना ही मज़बूत होता है जितना उसका आधार।

उन्होंने कहा कि पार्टी के शक्ति केंद्र और बूथ इकाइयाँ जनता से संपर्क का पहला बिंदु हैं और हमें उनका सक्रिय और अनुशासित संचालन सुनिश्चित करना चाहिए।

नंद किशोर शर्मा ने पार्टी के वरिष्ठ नेतृत्व को आश्वासन दिया कि जम्मू उत्तर ज़िला ज़मीनी स्तर पर पार्टी की गतिविधियों को आगे बढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभाएगा।

बैठक से पहले, सत शर्मा ने नगरोटा के कोल कंडोली मंदिर में माता वैष्णो देवी के पवित्र मंदिर में पूजा–अर्चना की और जम्मू–कश्मीर में शांति और समृद्धि के लिए आशीर्वाद मांगा। इस दौरान उनके साथ बलदेव सिंह बिलावरिया और नंद किशोर शर्मा भी थे।

बाद में, भाजपा की पर्यावरण प्रतिबद्धता और चल रहे वनीकरण अभियान के तहत, सत शर्मा ने अन्य वरिष्ठ नेताओं के साथ परिसर में एक पौधा लगाया और पार्टी कार्यकर्ताओं और स्थानीय लोगों को हरित भविष्य के लिए वृक्षारोपण पहल में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

मंडल अध्यक्ष विकास गुप्ता और संजय कुमार, जिला उपाध्यक्ष राजिंदर सिंह, प्रमुख सरपंच सतीश कुमार, कैप्टन प्यारे लाल, चुनी सिंह, विक्रांत देव सिंह, पंकज और कई अन्य स्थानीय प्रमुख नेता और कार्यकर्ता भी उपस्थित थे।

पंजाब पशुधन व्यापार मुद्दे : सतीश शर्मा ने जम्मू-कश्मीर के व्यापारियों को त्वरित कार्रवाई का आश्वासन दिया

जम्मू लद्दाख विज़न ब्यूरो

श्रीनगर : खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले (एफसीएस एंड सीए), परिवहन, आईटी और युवा सेवाएं एवं खेल मंत्री सतीश शर्मा ने पंजाब के कुछ पशु मेला ठेकेदारों द्वारा जम्मू और कश्मीर के पशु व्यापारियों को परेशान करने और बाधा पहुंचाने के आरोपों वाली रिपोर्टों का गंभीरता से संज्ञान लिया है।

अखिल कश्मीर थोक मटन डीलर्स यूनियन के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत के दौरान, मंत्री को कथित गैरकानूनी प्रथाओं के बारे में अवगत कराया गया, जिसमें निजी ठेकेदारों द्वारा अपने अधिकार का उल्लंघन करते हुए जम्मू–कश्मीर के रास्ते में पशुओं से लदे वाहनों को अनधिकृत रूप से रोकना भी शामिल है।

स्वामित्व, प्रकाशक एवम् मुद्रक संजीव कुमार मनमोत्रा द्वारा जन संपर्क प्रिंटिंग प्रेस सिधरा, जम्मू से मुद्रित करवाकर तथा अटल विहार हेरिटेज स्कूल सैनिक कॉलोनी जम्मू से प्रकाशित किया गया संपादक : संजीव कुमार मनमोत्रा, मोबाइल न : 9419141189, ईमेल : editorjammuladakhvision1@gmail.com